भाव कुतूहलजातकम्

॥ श्री ॥

भाव कुतूहलजातकम्

भाषा टीका सहितः

पं० बनमाली चतुर्वेदी कृत

प्रकाशक

किशनलाल द्वारकाप्रसाद,

बम्बई भूषण यन्त्रालय,

मथुरा

मूल्य ३)

भावकुतूहल की अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
तत्रादौ मङ्गलाचरणम्	१
अथ ग्रन्थकर्तुर्नामकथनम्	२
अथ ग्रन्थश्लाघनम्	२
अथादौ संज्ञाध्यायः	३
अथ राशिस्वामिनिरूपणम्	४
अथ ग्रहाणां मित्रसमशत्रु निरूपणम्	५
अथ ग्रहणां उच्चनीचविचारः	८
अथ षड्वर्गसाधनम्	९
अथ ग्रहाणां मित्रसम शत्रु चक्रम्	११
अथ समविषम राशीनां त्रिंशांश वर्णनम्	१३
अथ दृष्टिविचारः	१४
नवांश चक्रमिदम्	१५
द्वादशांश चक्रमिदम्	,,
अथ राशीनां चरादिज्ञानम्	१६
विषम त्रिंशांशचक्रम्	,,
समत्रिंशांशचक्रम्	,,
अथ द्विपदचतुष्पदराशयः	१७
अथ ग्रहाणांमूलात्रकोणानि	,,
चिह्नज्ञानम्	१८
अथ भ्रातृनाशकयोगः	२१

विषय	पृष्ठ
अथ अनिष्टाध्यायनिरूपणम्	२२
अथ पितृहायोग	२६
अथ मातृहायोगः	,,
अथ भ्रातृहायोगः	३०
अथ मातुलनाशकयोग	३०
अथ पुत्रहायोगः	,,
अथ भार्यानाशकयोगः	३१
अथानिष्टाभंगयोगो निरूप्यते	३१
अथ संतान भावविचारः	३६
अथ प्रथमं कन्या वा सुतोत्पत्तिः	३६
अथ संतान संख्या	३७
अथ सुतहानिकारकोयोगः	,,
अथ सन्तानसुखासुख योगः	३८
अथ नपुंसकयोगः	,,
अथ पुत्रसुखाभावयोगः	३९
अथ षष्टिमितेब्दे सन्तानोत्पत्तियोगः	४०
अथ त्रिंशद्वर्षात्परं सन्तानोत्पत्ति योगः	४०

विषय	पृष्ठ
अथ सन्तानाभावयोग,	४०
अथ पुत्रहानिकारकयोगः	४१
अथ वंशोच्छेदकोपात्सुतहानि-कारक योगः	४२
अथ सुतोत्पत्तेरुपायः	४३
तत्रादौ सार्वभौमराजयोग	४५
अथ समुद्रपर्यन्तराज्यप्राप्तियोगः	४५
अथान्यराजयोगः	४६
अथ अतुच्छमहोदधिराजयोगः	४८
अथ सिंहासनयोगः	५१
अथ चतुश्चक्रयोगः	५२
अथैकावलियोगः	,,
अथ शत्रुहंतायोगः	५३
अथ नृपमुकुटयोगः	५४
अथ सामान्यराजयोगः	५४
अथ शत्रुभयकारकयोगः	५५
अथ सुराजयोगः	५६
अथ कुबेरसमराजयोगः	५८
अथ राज योगविवरणं	५९
अथ द्रविडकेरलदेशोद्भवानांराजपुत्राणां राजयोगः	६१
अथ राजपुत्राणांराज्ययोगस्तथान्यजनानां धनाधीशयोगः	६२
अथ छत्र योगः	६२
अथान्यराजपुत्राणांराजयोगः	६३
अथ चन्द्र योगः	६४
अथ नफादियोगः	६५
अथानफादियोगफल	६६
अथ स्वनफायोगफल	६७
अथ दुरुधरायोगफलम्	६७
अथ केमद्रुमयोगः	६८
अथ केमद्रुमयोगफलम्	,,
अथ केद्रुमयोगभङ्ग	६९
अथ हृदयोगः	,,
अथ फणियोगः	,,
अथ काकयोगः	७०
अथ दरिद्रयोगः	,,
अथ हुताशनयोगः	७१
अथ राजयोगभंगयोगः	७१
अन्यच्च	७२
अन्यच्च	,,
अन्यच्च	७३
अन्यच्च	,,
अथ सामुद्रिकविचारध्यायः	,,
अथ यवाकारचिन्हफलम्	७४
अथ राजचिन्हम्	७५

विषय	पृष्ठ
अथ लक्ष्मीप्राप्तिचिन्हम्	७६
अथाखण्डलक्ष्मीप्राप्ति चिन्हम्	,,
अथोत्तमराजचिन्हम्	७६
अथ करेखापांदतलेतिल लक्षणम्	७७
अथ स्त्रीजातका अध्यायः	७८
अथ सौभाग्यवती तथा दुष्टयोगः	७९
अथ स्त्रीणांसौभाग्यादि भावसंज्ञा	,,
अथान्य पुंश्चल्यादियोगः	८०
अथ रूपगुणयुक्त पतिव्रतायोगः	८१
अथ नराकारकुरूपायोगः	८१
अथ स्त्रीणां राजयोगः	८२
अथ स्त्रीणांसप्तमभावे प्रत्येकग्रहफलम्	८३
तत्रादौसप्तमस्थरविफलम्	,,
अथ सप्तमगतचन्द्रफलम्	,,
अथ सप्तमभावगतभौमफलम्	८५
अथ सप्तमस्थबुधफलं	,,
अथ सप्तमस्थगुरुफलं	८६

विषय	पृष्ठ
अथ सप्तमस्थशुक्रफलम्	८७
अथ सप्तमस्थशनिफलम्	८७
अथ सप्तमगतराहुफलम्	,,
अथान्यदुष्कर्म योगः	८८
अथ मोहनी रूपकारक योगः	,,
अथ सुभगायोगः	८९
अथ स्त्रीणांवैधव्ययोगः	,,
अथ स्वैरिणीयोगः	९०
अथ व्यभिचारिणीयोगः	,,
अथ पुंश्चलीयोगः	९१
अथ पत्याज्ञयाव्यभिचारिणीयोगः	९२
अथ सप्तमाष्टमेऽन्देरण्डायोगः	९३
अन्यचरण्डायोगः	,,
अथ भार्याऽहव्यभिचारिणीयोगः	९४
अथ ग्रहराशिवशेनप्रत्येक त्रिंशांशफलाकितग्रादौकुजस्थरशे	९५
अथ शुक्रराशौ	९५
अथ बुधराशौ	९६
अथ चन्द्रराशौ	९६
अथ सूर्यराशौ	९७

विषय	पृष्ठ
अथ गुरुराशौ	९८
अथ शनिराशौ	,,
अथाष्टमस्थग्रहाणांफलम्	१००
अथस्त्रीणांपुत्रभावविचारः	,,
अथ विषाख्ययोगः	१०१
अथ विषाख्ययोगफलम्	१०२
अथ विषाख्ययोगभंगः	१०३
अथ वैधव्यभंगोपायः	,,
अथ कन्याया शुभाशुभांग-लक्षणाध्यायः	१०४
अथा दौस्त्रीणांपादतल-लक्षणम्	१०४
अथांगुष्ठनखलक्षणम्	१०५
अथ गतिलक्षणम्	१०६
अथ पादांगुल्योपर्य्य-गुलिलक्षणम्	,,
अथकनिष्ठांगुलिलक्षणम्	१०६
अथानामिका तथा मध्यां-गुलिलक्षणम्	१०७
अथ पादनख लक्षणम्	,,
अथ पदपृष्ठ लक्षणम्	१०८
अथान्याशुभलक्षणम्	,,
अथ गुल्फयोर्लक्षणम्	,,
अथ पार्ष्णि लक्षणम्	१०९

विषय	पृष्ठ
अथ जंघा लक्षणम्	१०९
अथ रोमलक्षणम्	११०
अथ पुनर्जानु लक्षणम्	,,
अथ नितम्ब तथा कांट-लक्षणम्	१११
अथ योनिलक्षणम्	११२
अथ नाभिलक्षणम्	११४
अथोदरलक्षणम्	११५
अथ त्रिवलीलक्षणम	११७
अथ वक्षःस्थललक्षणम्	,,
अथ स्तनलक्षणम्	११८
अथ स्कंध लक्षणम्	११९
अथ बाहुलक्षणम्	१२०
अथ हस्तांगुली लक्षणम्	,,
अथ करतल लक्षणम्	१२१
कर पृष्ठ लक्षणम्	१२२
अथ हस्तरेखा लक्षणम्	१२३
अथ नख लक्षणम्	१२६
अथ पृष्ठ लक्षणम्	१२७
अथ कंठ लक्षणम्	१२८
अथ हनु लक्षणम्	१२९
अथ कपोल लक्षणम्	,,
अथोष्ठ लक्षणम्	१३९
अथ दन्त लक्षणम्	१३०

विषय	पृष्ठ
अथ जिह्वा लक्षणम्	१३१
,, तालु लक्षणम्	,,
,, घण्टिका लक्षणम्	१३२
,, वाणी लक्षणम्	,,
,, नासिका लक्षणम्	१३३
,, नेत्र लक्षणम्	,,
,, नेत्रपक्ष्म लक्षणम	१३४
,, भृकुटी लक्षणम्	१३५
,, कर्ण लक्षणम	१३६
,, मस्तक लक्षणम्	,,
,, शिरःकेश लक्षणम्	१३८
,, मशकतिलादि चिन्ह लक्षणम्	१३९
,, कपाले त्रिशूल लक्षणम्	१४१
,, दन्तशब्द लक्षणम्	,,
,, ललाटे भगशकट लक्षणम्	१४२
,, कण्ठे भ्रमरलक्षणम्	१४३
पूर्वोक्त शुभाशुभ लक्षणा नां कारणम्	,,
,, स्त्रीरेखातो पत्यु शुभा-शुभ लक्षणम्	१४५
,, कुलक्षण शान्ति	,,

विषय	पृष्ठ
तत्रावस्थानामानि	१४७
अथ ग्रहाणामवस्था निष्कालजक्रम	१४७
अथ वस्थाफलानि	१५१
,, चन्द्रस्य द्वादशावस्था-फलम्	१५२
,, भौमावस्था फलम्	,,
,, बुधावस्थाफलम्	१५४
,, गुरोरवस्थाफलम्	,,
,, शुक्रावस्था फलम्	१५५
,, शनेरवस्था फलम्	,,
,, राहोरवस्थाफलम्	१५६
,, विशेषफलानि	१५७
,, पुत्र सुखासुखयोगः	१५८
अथाल्प मृत्युयोगः	१५९
,, शत्रुनीथंकृतौमृत्युयोगौ	,,
अथोत्तम क्षेत्रप्राप्तियोग	१६०
,, ग्रहणां प्रत्येकावस्था-फलाध्यायःतात्रदौसूर्य्यस्य	१६१
,, चन्द्रावस्थाफलम्	१६६
,, भौमावस्थाफलम्	१७०
,, बुधावस्थाफलम्	१७५
,, गुरोरवस्थाफलम्	१७९
,, शुक्रावस्थाफलम्	१८५

विषय	पृष्ठ
अथ शन्यवस्थाफलम्	१८६
,, राह्ववस्थाफलम्	१६४
,, केत्ववस्थाफलम्	१६७
,, ग्रहाणांबलाद्यवस्था फलम्	२०१
,, बालाद्यवस्था फलम्	२०२
,, दीप्ताद्यवस्था विचार	२०३
,, दीप्तग्रहफलम्	,,
,, स्वस्थग्रहफलम्	२०४
,, हर्षितग्रहफलम्	२०५
,, शांतग्रहफलम्	,,
,, शस्तग्रहफलम्	२०६
,, लुप्तग्रहफलम्	,,
,, दीनग्रहफलम्	२०७
,, पीड़ितग्रह फलम्	,,
अथ मारकराजयोग—धनिक दरिद्रविचाराध्यायः	
,, तत्रादौ शनिमारक विचारः	२०८
,, भावेशग्रहाणां शुभा शुभ संज्ञा	२०८
,, राहु तथा केतुभाव फलम्	२०६
,, शनिमारकत्व विचारः	,,

विषय	पृष्ठ
अथायुर्ज्ञानम्	२१०
अथ मारकस्थानज्ञानम्	२११
,, मारकेशदशायां मृत्यु-निश्चयः	,,
,, राजयोगः	२१२
,, धनिकयोगः	२१४
,, दरिद्रयोगः	२१७
,, द्वादशभावाध्यायः। तत्रादौ लग्नविचारः	२१६
,, धनभाव विचारः	२२१
,, तृतीयभाव विचारः	२२४
,, चतुर्थभाव विचारः	२२५
,, पंचमभाव विचारः	२२६
,, शत्रुभाव विचारः	२२८
,, सप्तमभाव विचारः	२३०
अथाष्टमभाव विचारः	२३२
,, नवमभाव निर्णयः	२३४
,, दशमभाव विचारः	२३५
,, लाभभाव विचारः	२३६
,, व्ययभाव विचारः	२४०
,, महादशावर्षसंख्या	२४१
,, दशागणनाक्रमः	२४२
,, दशाभुक्तयोग्यक्रमः	२४३

विषय	पृष्ठ
अथान्तर्दशाक्रमः	२४६
,, दशाफलम् तत्रादौ सूर्यदशाफलम्	२४८
,, चन्द्रदशा फलम्	,,
,, भौमदशा फलम्	२४९
,, राहुदशा फलम्	,,
,, गुरुदशा फलम्	२५०
,, शनिदशा फलम्	२५१
,, बुधदशा फलम्	,,
,, केतुदशा फलम्	२५२
,, शुक्रदशा फलम्	,,
अथोच्चगत ग्रहदशा फलम्	२५३
अथ स्वराशिगत ग्रहदशाफलम्	
,, मित्रक्षेत्रगत ग्रहदशा फलम्	२५४
,, शत्रुस्थित ग्रहदशाफलम्	,,
,, रोगेशदशा फलम्	,,
अथाष्टमेश दशाफलम्	२५५
अथ व्ययेशदशा फलम्	,,

विषय	पृष्ठ
अथ सप्तमेश दशाफलम्	२५६
अथास्तंगतग्रहदशाफलम्	,,
अथ चन्द्रबलानुसारेण दशा फलम्	२५७
,, बलानुसारेण दशाफलम्	,,
,, लग्नादिद्वादशावेश दशाफलम् संक्षेपतः	,,
,, भावेशदशाफलम्	२५८
तत्रादौ गर्वितादि संज्ञा	२५९
अथ गर्वितादि फलम्	२६०
अथ गर्वित ग्रहदशाफलम्	२६१
मुदित (हर्षित) ग्रहदशा फलम्	,,
लज्जित ग्रहदशा फलम्	२६२
क्षोभित ग्रहदशाफलम्	,,
क्षुधित ग्रहदशा फलम्	२६३
तृषित ग्रहदशा फलम्	,,
ग्रन्थ समाप्तौपित्तामहादि वर्णनम्	२६४

—❀०❀—

श्रीगणेशायनमः

* भावकुतूहलजातकम् *

भावार्थसहितम्

बृन्दारण्यविहारं गोपीभिरास संचारम् ।
श्रीमन्नंदकुमारम् वन्दे वन्दारुमंदारम् ॥

जो श्रीकृष्ण परमात्मा वृन्दावन में गोपियों के संग रास विहारादि क्रीड़ा करते हैं, उन नन्दकुमार के चरण कमल की वन्दना करता हूँ ।

तत्रादौ मङ्गलाचरणम् ।

महसेतुं हेतुं सकलजगतामंकुरतया सदा शंभो रम्भोभवभवभयत्राणजनकम् । अहं वन्दे तस्या सुरसुरमनोमोदनिकरं चिदानंदं पादा-मल कमल लावण्यमधिकम् ॥ १ ॥

सकल जगतों (ब्रह्माण्डों) के अंकुररूप होने से हेतु (कारण) तेज के सेतु (पुल) कमलोद्भव (ब्रह्मा) ने

उत्पन्न करी यावन्मात्र प्रजा के संसार भय से रक्षा करने वाले चिदानन्दस्वरूप और असुर देवताओं के मन को आनन्द पुञ्ज को उत्पादन करने वाले श्रीशिवजी के अमल चरण कमल के लावण्य (सौंदर्य) को मैं अधिकतर प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

अथ ग्रन्थकर्तुर्नामकथनम् ।

विचारसंचारचमत्कृतं यन्मतं मुनीनां प्रविलोक्य सारम् । श्रीजीवनाथेन विदां हिताय प्रकाश्यते भावकुतूहलं तत् ॥ २ ॥

वशिष्ठ, पाराशर, व्यास, गर्ग, शुकादि अनेक पूर्व मुनियों के विचार के संचार से चमत्कृत सारभूत मत को अच्छी तरह देखकर आधुनिक ज्योतिर्विदों के हित के अर्थ जीवनाथ नाम मूलज्योतिर्विद से ये भावकुतूहल नाम ग्रन्थ प्रकाश किया जाता है ॥ २ ॥

अथ ग्रंथश्लाघनम् ।

धात्रीदितं यवनकर्कशशब्दसंगादाधिव्यथावदलितं परमं फलं यत् । मत्कोमलामलरवामृतराशिधारास्नानंकरोतु जगतामपि मोदहेतोः ॥ ३ ॥

जो यवनों के अनेक कर्कश शब्दों के संग से ब्रह्माजी का कहा फलित शास्त्र व्यथा से दूषित हुआ खण्ड खण्ड रूप होगया था वह ज्योतिष फल शास्त्र यावन्मत्र जगतों को आनन्द देने को मेरे अति कोमल निर्मल शब्दामृत समुद्र की धार में यवन वाग्दूषित दोष के दूर करने को स्नान करो ॥ ३ ॥

अथादौसंज्ञाध्यायः ।

तनुकोशसहोदरबन्धुसुता रिपुकामविनाश-
शुभा विबुधै । पितृभं तत आप्तिरपाय इमे
क्रमतः कथिता मिहिरप्रमुखैः ॥ ४ ॥

तनु १, कोश २, सहोदर ३, बंधु४, सुत ५, रिपु६, काम ७, विनाश ८, शुभ ९, पितृ १०, लाभ ११ और व्यय १२ ये क्रम से लग्न से लेकर बारहों भावों के नाम हैं, इस जगह तनु कोशादि शब्दों के पर्याय वाचक जितने शब्द हैं, उन्हें उन्हीं उन्हीं घर के नाम समझना,जैसे लग्न, तनु, देह, शरीर, वपु, अङ्ग आदि सब लग्न के नाम समझना इसी प्रकार सर्वत्र समझ लेना और नवे पांचवें घर की त्रिकोण संज्ञा केवल नवे घर की त्रिकोण संज्ञा लग्न, चतुर्थ, सप्तम और दशम घर की केन्द्र कण्टक और चतुष्टय संज्ञा की दूसरे, पांचवें, आठवें और ग्यारहवें घर

की पणकर संज्ञा। तीसरे, छठे, नवें और बारहवें घर की आपोक्लिम संज्ञा। तीसरे, छठे, दशवें और ग्यारहवें घर की उपचय संज्ञा। और छठे, आठवें, बारहवें घर की त्रिक संज्ञा होती है। ऐसा सब समझ लेना और पूर्वोक्त लग्नादि भावों के नामों को आगे लिखे चक्र से समझ लेना॥ ४॥

अथ राशिस्वामिनिरूपणम्।

कुजकवी बुधचन्द्रादिवाकरा बुधसितावनिजा गुरुसूर्यजौ। शनिगुरू च पुरातनपंडितैरज मुखादुदिता भवनाधपाः॥ ५॥

मंगल, शुक्र, बुध, चन्द्रमा, सूर्य बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि फिर शनि और बृहस्पति ये ग्रह क्रम से मेषादि राशियों के स्वामी होते हैं, ये पुरातन पण्डितों ने निर्णय करके कहा है, जैसे मेष लग्न का मंगल, वृष राशि का स्वामी शुक्र, मिथुन राशि का स्वामी बुध, कर्क राशि का स्वामी चन्द्रमा, सिंह राशि का स्वामी सूर्य, कन्या राशि का स्वामी बुध, तुला राशि का स्वामी शुक्र, वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल, धन राशि का स्वामी बृहस्पति, मकर और कुम्भ दोनों राशियों का स्वामी शनि और मीन राशि का स्वामी बृहस्पति होता है॥ ५॥

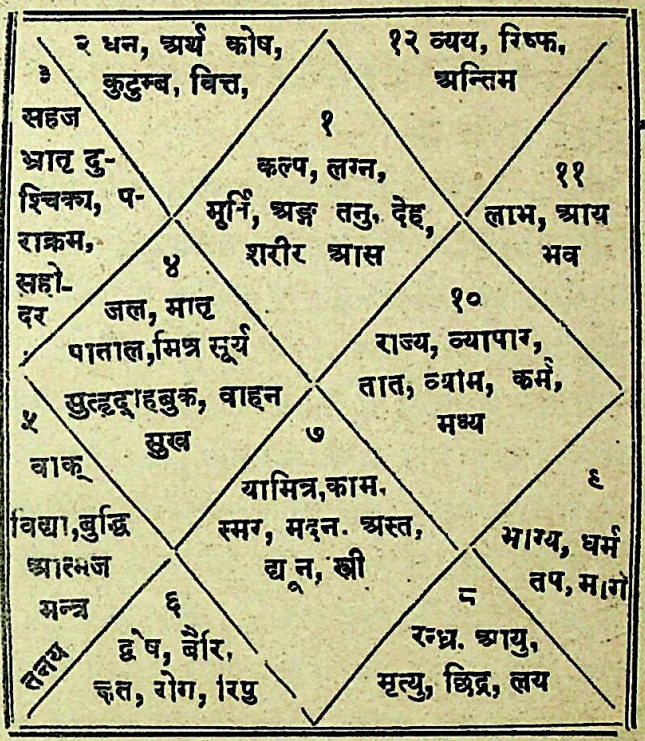
२ धन, अर्थ कोष, कुटुम्ब, वित्त,
१२ व्यय, रिष्फ, अन्तिम
३ सहज भ्रातृ दुश्चिक्य, पराक्रम, सहोदर
१ कल्प, लग्न, मूर्ति, अङ्ग तनु, देह, शरीर आस
११ लाभ, आय भव
४ जल, मातृ पाताल, मित्र सूर्य सुहृद्गृहबुक, वाहन सुख
१० राज्य, व्यापार, तात, व्याम, कर्म, मध्य
५ वाक् विद्या, बुद्धि आत्मज मन्त्र तनय
७ यामित्र, काम, स्मर, मदन, अस्त, द्यून, स्त्री
९ भाग्य, धर्म तप, मार्ग
६ द्वेष, वैर, क्षत, रोग, रिपु
८ रन्ध्र, आयु, मृत्यु, छिद्र, लय

अथ ग्रहाणामित्रसमशत्रु निरूपणम्

अंगारकेन्दुगुरुवोरविचंद्रपुत्रावादित्यचंद्रगुरुवः कविचंडभानू। भोमार्करात्रिपतयो बुधसूर्यपुत्रौ शुक्रेन्दुजौ दिनकरात्सुहृदो भवन्ति ॥ ६ ॥

सोम्यः समाहि सकलाः कविभानुपुत्रौ मन्देज्य

भूमितनया रविजः क्रमेण। भौमेज्यकौ सुरगुरू रिपवोऽवशिष्टास्तात्कालिका व्ययधनायदशत्रिबन्धौ ॥ ७ ॥

मंगल, चन्द्रमा और बृहस्पति सूर्यके, सूर्य और बुध चन्द्रमाके, सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति मंगलके, शुक्र और सूर्य बुधके, मंगल सूर्य और चन्द्रमा बृहस्पतिके, बुध और शनि शुक्रके और शुक्र बुध शनि के क्रम से मित्र होते हैं ॥६॥ अब सम ग्रहों को कहते हैं सूर्य का तो केवल बुद्ध, चन्द्रमा के मंगल बृहस्पति शुक्र शनि, मंगल के शुक्र और शनि, बुध के शनि बृहस्पति और मंगल, बृहस्पति का शनि, शुक्रके मंगल और बृहस्पति और शनि का बृहस्पति ये क्रमसे सूर्यादि ग्रहों के सम होते हैं, और इनसे शेष रहे ग्रह शत्रु होते हैं, जैसे सूर्य के शुक्र शनि, चन्द्रमाके कोई नहीं, मंगल का बुध, बुधका चन्द्रमा, बृहस्पतिके बुध शुक्र, शुक्र के सूर्य चन्द्रमा, शनि के सूर्य चन्द्रमा मंगल ये ग्रह क्रम से शत्रु होते हैं ॥ ७ ॥

अथ ग्रहाणां उच्च नीच विचार

परमोच्चमजे दशभिर्वृषभे शिखिभिर्मकरे गजयुग्मलवैः। तिथिभिर्युवतीभवने विधुभे किलपंचभिरेव भृषे त्रिधनैः ॥८॥ कृतिभिश्च-

तुलाभवने रवितः कथितं मदने खलु नीच-
भतः । मिथुने तमसः शिखिनो धनुषि प्रथमे
बुधभे गुरुभे भवनम् ॥ ६ ॥

मेष राशि के दश अंशतक सूर्य, वृष राशि के तीन अंशतक चंद्रमा, मकर के अट्ठाईस अंशतक मंगल, कन्या के पंद्रह अंशतक बुध, कर्कके पांच अंशतक बृहस्पति, मीनके सत्ताईस अंश तक शुक्र, और तुलाके बीस अंशतक शनि क्रमसे परमोच्च होते हैं, और उक्त उच्च से सातवें सातवें राशि के उक्तांश गणनासे परम नीच होते हैं ऐसा समझ लेना, जैसा तुलाके दश अंशतक सूर्य, वृश्चिकके तीन अंश तक चन्द्रमा, कर्कके अट्ठाईश अंशतक मंगलका परम नीच होता है, इसी प्रकार औरोंको भी समझ लेना, और बुध की राशिका राहु, और बृहस्पतिकी राशि का केतु, स्वगे हीका होता है, जैसे मिथुनका राहु, और धनका केतु स्वगेही होता है, और कन्या का राहु और मीनका केतु उच्चका माना जाता है ॥ ८ ॥ ६ ॥

अथ षड्वर्ग साधनम् ।

होरा राशिदलं समे प्रथमतश्चंद्रस्य भानोरतो
व्यत्यासाद्दशमे द्रेकाणपतयः स्वाच्चौंकभावा-

धिपाः। मेषादादिमभेवृषे तु मकरद्युग्मेघटा-
दिन्द्वर्के कर्कादेव नवांशकानि गदिताःस्युर्द्वाद-
शांशाः स्वभात् ॥ १० ॥

राशिके दल (अर्ध) को होरा कहते हैं तिसका यह क्रम है कि, सम राशिमें प्रथम जो होरा होता है वह होरा चंद्रमाका होता है और इससे विपरीत अर्थात् विषम राशिओंमें प्रथम जो होरा होता है वह होरा सूर्य का होता है प्रयोजन इसका यह है कि, हर एक राशि तीस तीस अंश की होती हैं, ति-में जितनी समराशि वृष, कर्क, कन्या वृश्चिक, मकर और मीन हैं, उनमें प्रथम पन्द्रह अंशतक चन्द्रमाका होरा होता है, तदनन्तर षोडश अंशसे लेकर तीस अंशतक सूर्य का होरा होताहै इसी तरह मेष, मिथुन सिंह, तुला, धन और कुम्भ राशिको विषम राशि कहते हैं, इनमें प्रथम पन्द्रह अंशतक सूर्यका होरा और फिर षोड़षवें अंशसे लेकर तीस अंश समाप्ततक चन्द्रमाका होरा होता है, और राशि के तीसरे भागको द्रेष्काण कहते हैं, अर्थात् दश अंशतक प्रथम द्रेष्काण और दशसे आगे वीस अंशतक द्वितीय और वीसके अगाड़ी तीसतक तीसरा द्रेष्काण होता है, उनके अपना स्वामी पंचम भाव का स्वामी और नवम भाव का स्वामी ये तीनों तीनों

द्रेष्काणोंके क्रमसे स्वामी होते हैं, जैसे मेष राशिमें प्रथम दस अंशतक मेषका ही द्रेष्काण होगा, अर्थात् वह मंगल का द्रेष्काण होगा फिर आगे बीस अंशतक जो द्वितीय द्रेष्काण होगा, वह उससे पंचमराशि सिंहका होगा, अर्थात् उस द्रेष्काणका पति सूर्य होगा फिर बीससे अगाडी तीस अंशतक तीसरा द्रेष्काण होगा, वह उससे नवी राशिका होगा यानी धनका होगा, उसका स्वामी बृहस्पति होगा अर्थात् सब शशिओंमें प्रथम द्रेष्काणका स्वामी वही ग्रह होगा जो उसी राशिका स्वामी है, और दूसरे द्रेष्काणका स्वामी उस राशि से पांचवीं राशिका जो स्वामी है, सो होगा और तीसरे द्रेष्काणका स्वामी उसी राशिसे नवीं राशिका जो स्वामी है वह होगा।

इति द्रेष्काणः

अथ ग्रहाणाम् मित्रसम शत्रुचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
चं. मं. बृ.	सू. बु.	सू.चं बृ.	सू शु	सू.चं. मं.	बु.श.	बु.शु.	मत्र
बु.	मं.बृ. शु.श.	शु. श.	मं.बृ. श.	श.	बृ. मं	बृ.	समा
शु. श.	०	बु.	चं	बु.शु.	सू.चं	सू.चं मं	शत्रु

राशि के नवे भागको नवांश कहते हैं, उनका हिसाब यह है कि तीन बीस, छः चालीस दस पूर्ण, तेरह बीस सोलह चालीस बीस पूर्ण, और तेईस बीस छब्बीस चालीस तीस पूर्ण, अर्थात् हर एक राशि के तीन अंश बीस कला बीते तक पहला छः ततः अंश चालीस कला तक दूसरा तदनन्तर पूर्ण दस अंश बीते तक तीसरा तेरह अंश बीसकला बीते तक चौथा सोलह अंश चालीसकला बीते तक पांचवां पूर्ण बीस अंश बीते तकका छठा तेईस अंश बीसकला बीते तक सातवां छब्बीस अंश चालीस कला बीते तक आठवां और पूर्ण तीस अंश बीतने तक नवा नवांशा होता है, इस नवमांशाका ऐसा विचार है कि, राशि चर, स्थिर और दुःखम तीन प्रकार की होती है उनमें चरचर राशिओंमें तो चर राशि हैं उसमें प्रथमादि नवांशा ३।२० उसी राशिसे गिने जांयगे और स्थिर राशिमें प्रथमादि नवांशा उसी राशिसे नवीं राशिसे गिने जांयगे और दुःस्वभाव राशिओंमें उसी राशिसे पंचम राशिके क्रमसे सर्वत्र गणना करने में आते हैं; जैसे राशि चर राशिहै, इसमें जो प्रथम नवांशा ३।२० तक होगा तो मेषका ही होगा उसका नवांशेष मङ्गल होगा, दूसरा नवांशा ६।४० तक वृषका होगा उसका स्वामी शुक्र होगा, इसी क्रमसे समझना

और वृष राशि स्थिर है, उसमें जो प्रथमादि नवांशा आता है,वह उससे नवम मकर का होगा उसका स्वामी शनि होगा फिर दूसरा नवांशा कुम्भ का होगा उसका भी स्वामी शनि होगा,इसी प्रकार अगाड़ी भी समझ लेना इसी तरह मिथुन द्विःस्वभाव हैं उसमें जो प्रथमादि नवांशा है,वे उससे पांचवीं राशि तुलादिका होगा, उसका नवांशेष शुक्र होगा तदनंतर दूसरा नवांशा वृश्चिकका होगा उसका नवांशेष मंगल होगा इसी तरह सर्वत्र समझ लेना,फिर अगाड़ी कर्कराशि चर हैं, उसमें प्रथम नवांशा कर्क ही का होगा, दूसरा सिंह का तीसरा कन्या का नवांशा होगा इस प्रकार नवांश विधि कही है, इसी तरह द्वादशा का प्रकार समझना, राशि के बारहवें भाग को द्वादशांशा कहते हैं, वह दो अंश और तीस कलाका एक द्वादशांशा होता है,वह द्वादशांशा हरएक राशि में उसी राशि के क्रम से होता है, जैसे मेष राशि में प्रथम मेष का ही द्वादशांशा २।३० होगा, तदनन्तर दूसरा द्वांदशा ५ शा वृष का तीसरा मिथुन का होगा इसी क्रम से सर्वत्र द्वादशांशा का हिसाब समझ लेना ॥१०॥

अथ समविषमराशीनांत्रिंशांशवर्णनम् ।

पंचपंचाष्टशैलाक्षत्रिंशांशाविषमेक्रमात् । भौम भानुजजीवज्ञशुक्राणामुत्क्रमात्समे ॥ ११ ॥

राशि दो प्रकार की है एक तो समराशि होती है और एक विषमराशि होती है जैसे वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर मीन ये समराशि होती हैं, और मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन और कुंभ ये राशि विषम होती हैं, इन सबों में एक एक अंश का त्रिशांशा होता है, अर्थात् राशि के तीसवें भाग को यानी एक अंश को त्रैशांशा कहते हैं उनमें विषम राशियों में तो पांच पांच, आठ, सात और पाँच अंशों के क्रम से मंगल, शनि, बृहस्पति, बुध और शुक्र के क्रम से त्रिशांश होते हैं। जैसे विषमराशि मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन और कुम्भ में प्रथम पांच अंश तक मंगल का तदनन्तर दस अंश तक शनि का तदन्तर अठारह अंश तक बृहस्पति का तदनन्तर पच्चीस अंश तक बुध का और तदनंतर तीस अंश बीते तक शुक्र का त्रिशांश होगा, इसी प्रकार वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन समराशि में उक्त से विपरीत अर्थात् प्रथम अंश तक शुक्र का, तदनन्तर बाहर अंश तक बुध का तदनन्तर बीस अंश तक बृहस्पति का तदनन्तर पच्चीस अंश तक शनि का और तदनन्तर पूर्ण तीस अंश तक मंगल का त्रिशांश होगा इति त्रिशांश ॥ ११ ॥

अथ दृष्टिविचारः।

चरणविवृद्ध्या खेटा दशमसहोत्थे त्रिकोणमे

जनने। चतुरस्रेऽथकलत्रेप्रयतःपश्यन्ति तत्फलं क्रमतः ॥ १२ ॥

नवांशचक्रमिदम्									
विभाग	१	२	३	४	५	६	७	८	९
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

द्वादशांशचक्रमिदम्												
भाग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अंश	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०
कला	३०	०	३०	०	३०	०	३०	३०	०	३०	०	३०	०

सूर्य चन्द्रमादि सम्पूर्ण ग्रह तीसरे दसवें घर को अपने बैठे से एक चरण दृष्टि से देखते हैं, नवम पंचम अपने बैठे से दो चरण देखते हैं और अपने बैठे से अष्टम घर को तीन चरण दृष्टि से देखते हैं और अपने बैठे स्थान से सप्तम घर को तीन चरण दृष्टि से देखते हैं और अपने बैठे स्थान से सप्तम घर को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं, उनका फल भी क्रम से समझना। एक चरण देखने से चतुर्थांश दो चरण दृष्टि से अर्द्ध तीन चरण दृष्टि से पादोन और पूर्ण देखने से पूर्ण फल होता है॥ १२॥

अथ राशीनांचरादिज्ञानम् ।

चरस्थिरद्वि:स्वभावाःक्रूराऽक्रूरावजादितः ।
रनारीक्रमादेव विषमाख्यसमावपि ॥१३॥

विहमत्रिंशांश चक्रम्						
मं.	श.	बु	बु.	शु.	शु.	त्रि प.
५	५	८	७	५	अंश	०
५	८	१८	२५	३०	कला	ऐक्य

समत्रिंशांश फलम्						
शु.	बु.	बृ.	श.	मं.	त्रि प	०
५	५	८	५	५	अंश	०
५	१२	२०	२५	३०	ऐक्य	०

मेष राशि से क्रम से चर स्थिर दुःस्वभाव फिर चर स्थिर दुःस्वभाव क्रूर अक्रूर पुरुष स्त्री और विषम सम क्रमसे जानना जैसे मेष राशि चर वृष स्थिर मिथुन दुःस्वभाव फिर कर्क चर सिंहस्थिर कन्या दुःस्वभाव फिर तुला चर वृश्चिक स्थिर धन दुःस्वभाव फिर मकर चर कुम्भ स्थिर और मीन दुःस्वभाव होती है, इसी तरह मेष राशि क्रूर वृष अक्रूर फिर मिथुन क्रूर कर्क अक्रूर फिर सिंह क्रूर कन्या अक्रूर फिर तुला क्रूर वृश्चिक अक्रूर फिर धन क्रूर मकर अक्रूर फिर कुम्भराशि क्रूर और मीन अक्रूर होते हैं, इसी तरह मेष राशि पुरुष वृष स्त्री फिर मिथुन पुरुष कर्क स्त्री सिंह पुरुष कन्या स्त्री फिर तुला पुरुष वृश्चिक स्त्री फिर धन पुरुष मकर स्त्री फिर कुम्भ राशि पुरुष और मीन राशि

स्त्री होती है, इसी तरह मेष राशि विषम वृष सम फिर मिथुन विषम कर्क सम फिर सिंह विषम कन्या सम फिर तुला विषम वृश्चिक सम फिर धन विषम मकर सम फिर कुम्भ विषम और मीन राशि सम होती है ॥ १३ ॥

अथ द्विपदचतुष्पदराशयः

मिथुनं धन्विपुर्वार्द्धं तुला कन्या नरास्तथा ।
चतुष्पदा धनुःसिंहवृषमेषा मृगादिमाः ॥१४॥

मिथुन का और धन का तो पूर्वार्द्ध और तुला कन्या यह द्विपद राशि कहाती हैं, और धन का तो उत्तरार्द्ध सिंह वृष मेष और मकर का पूर्वार्द्ध इनको चतुष्पद कहते हैं, और मकर का तो उत्तरार्द्ध कुम्भ और मीन यह राशि जलचर राशि हैं और वृश्चिक कर्क दोनों राशियों की कीट संज्ञा है ॥ १४ ॥

अथ ग्रहाणांमूलत्रिकोणानि

मूलत्रिकोणमर्कादेः सिंहो बृषभ आदिमः ।
कन्या धनुस्तुलाकुम्भाः प्रवदन्ति पुरातनाः१५

सूर्यादि ग्रहों के सिंह वृषभ मेष कन्या धन तुला और कुंभ क्रम से मूल त्रिकोण होते हैं, जैसे सूर्य तो सिंह का वृषका चन्द्रमा मेषका मंगल कन्याका बुध धनका

बृहस्पति तुला का शुक्र और कुम्भका शनि मूल त्रिकोणी होता है ॥ १५ ॥

इति भावकुतूहल भाषानुवादे चतुर्वेद वनमालिनिर्मिते प्रथमोध्यायः

अथ जातकचिन्हाध्यायः

चिन्हज्ञानम्

जनुषि लग्नगतो वसुधासुतो मदनगोऽपि गुरुः कविरेव वा । भवति तस्य शिरो व्रणलांछितं निगदितं यवनेन महात्मना ॥१६॥

जिस मनुष्य के जन्म समय में जन्म कुण्डली में लग्न मंगल और सप्तम घर में गुरु अथवा शुक्र होवे उस मनुष्य का सिर घावों के चिन्ह से युक्त होता है, यह महात्मा यवनाचार्य ने कहा है ॥ १ ॥ १६ ॥

भवति लग्नगते क्षितिनन्दने भृगुसुतेऽपि विधाविह जन्मिनाम् । शिरसि चिह्नमुदाहृतमादिभिर्मुनिवरैर्द्विरसाब्दसमासतः ॥१७॥

भार्गवे जनुरंगस्थे चाष्टमे सिंहिकासुते । मस्तके वामकर्णे वा चिन्हदर्शनमादिशेत् ॥ १८ ॥

जिस मनुष्य के जन्म समय में जन्म लग्न में शुक्र और अष्टम घरमें राहु हो, उस मनुष्यके मस्तकमें या वाम कर्णमें चिन्ह होना बताना चाहिये ॥ ३ ॥ १८ ॥

मदनसदनमध्ये सिंहिकानन्दने वा सुरपतिगुरुणा चेदंगराशौ युते नुः । प्रकथितमिहचिह्नं चाष्टमे पापखेटे कविरपि गुरुरंगे वामबाहौ मुनीन्द्रैः ॥ १९ ॥

और मुनींद्रोंने कहा है कि, जिस मनुष्य के लग्नसे सप्तम घरमें राहु हो, लग्नमें बृहस्पति अष्टम घरमें पापग्रह अथवा शुक्र और लग्नमें बृहस्पति होवे तब उस पुरुषकी वाम भुजामें किसी प्रकारका चिन्ह होता है ॥ ४ ॥१९॥

लाभारिसहजे भौमे व्यये वा शुक्रसंयुते । वामपार्श्वेगतं चिन्हं विज्ञेयं व्रणजं बुधैः ॥२०॥

जिसके ग्यारहवें घरमें या छठे घरमें या तीसरे घरमें मंगल होवे अथवा बारहवें स्थानमें शुक्र युक्त मंगल बैठा होवे उस पुरुषके वाम बगलमें घावका चिन्ह (गंथ) होता है, ऐसा बुध पुरुषों ने कहा है ॥ २० ॥

लग्ने क्षितिसुते मन्दे शुक्रदृष्टे त्रिकोणभे। लिंगे गुदसमीपे वा तिलकं संदिशेद्बुधः ॥२१॥

जिस मनुष्यके लग्नमें मंगलहोवे और शुक्र जिसे देखता हो ऐसा शनि जिसके त्रिकोण (नवम पंचम) घर में बैठा हो उस पुरुष के लिंग में अथवा गुदाके समीप तिलका चिन्ह होता है॥ २१ ॥

सुतालये भाग्यनिकेतने वा कवियदा चाष्टमगौ ज्ञजीवौ। शनौ चतुर्थे तनुभावगे वा तदा स-चिन्हं जठरं नरस्य ॥२२॥

जिस पुरुष के पंचम घरमें अथवा नवें स्थान में शुक्र अष्टम घरमें बुध बृहस्पति और चतुर्थ घरमें या लग्नमें शनि हो तब उसका पुरुष पेट चिन्ह से युक्त होता है॥२२॥

धने कवावष्टतलग्नभे वा दिवाकरे मन्दकुजौ तृतीये। कटिप्रदेशे प्रवदेन्नराणां चिन्हं विशेषा दिह जातकज्ञः ॥ २३ ॥

जिसके द्वितीय घरमें तो शुक्र हो अष्टम घरमें अथवा लग्न में सूर्य और मंगल शनि तीसरे स्थान में होते हैं तब मनुष्यके कमरमें चिन्ह होता है, ऐसा जातकज्ञ कहते हैं

पातालस्थौ राहुशुक्रौ लग्ने मन्दाःकुजोऽपिवा।
पादमूलेऽथवा पादे वामे चिन्हं विनिर्दिशेत्२४

जिसके चतुर्थ स्थान में राहु और शुक्र लग्न में शनि अथवा मंगल हो उस पुरुष के पादमूल में अथवा वाम पांव में चिन्ह बताना चाहिये ॥ २४ ॥

व्यये गुरौ विधौ भाग्ये लाभारिसहजे बुधे।
गोलकं गुदमध्यस्थं व्रणं वा प्रवदेद्बुधः।२५।

जिसके लग्न से बारहवें घर में बृहस्पति नवम घर में चन्द्रमा ग्यारहवें घर में छठे घर में अथवा तीसरे घर में बुध होवे उस मनुष्य की गुदा में घाव का चिन्ह अथवा गोले का चिन्ह होता है ॥ २५ ॥

अथ भ्रातृनाशकयोगः

दिनपतौ नवमे हरिभे यदासहजहानिरवगुश्य-
मिहाङ्गिनाम् । धनगते रविजे तनुगे गुरावगु-
रुगे जननी नहिं जीवति ॥ २६ ॥

जिसके नवम घर में सिंह राशि का होकर सूर्य बैठा हो तब उस मनुष्य का भाई मर जाता है और दूसरे घर में शनि और लग्न में निर्बल होकर बृहस्पति होता है उस मनुष्य की माता मर जाती है ॥ २६ ॥

सुरगुरौ धनभावगते यदा कुजयुते शनिनापि च जन्मिनाम्। अगुयुत सहजे सहजासुखं निगदितं यवनैः प्रथमोदितम् ॥ २७ ॥

जिस पुरुष के दूसरे घर में मंगल अथवा शनि युक्त बृहस्पति हो तथा तीसरे घरमें राहु हो तब उस मनुष्य को भाई का सुख नहीं होता है, ऐसा यवनाचार्यों ने कहा है२७

अरिनिकेतनगेऽवनिनन्दने भवति राहुयुते निधने शनौ। निगदितं सहजो जनिमात्रतो यमपुरं व्रजतीतिपुरातनैः ॥ २८ ॥

जिसके लग्न से छठे घर में मंगल हो और राहुयुत शनि अष्टम घर में होवे उस मनुष्य का भाई जन्म लेते ही यमपुरको जाता है ऐसा पुरातन आचार्यों ने कहा है ॥२८॥

इति भावकुतूहले चतुर्वेद वनमालिविनिर्मिते भाषानुवादे द्वितीयोध्यायः समाप्तः ॥ २ ॥

अथारिष्टाध्यायनिरूपणम्

तुहिनकिरणहोरिका च सन्ध्या भचरमगाः खलखेचरा जनौ चेत्। मृतिरथ रजनीशपाप-खेटैरखिलचतुष्टयगैर्विनाशमेति ॥ २९ ॥

जिसका चन्द्रमा की होरा का अथवा संध्याकाल का जन्म हो और पापग्रह राशि के अंत्य नवांश में हों तब वह बालक मर जाता है, अथवा चन्द्रमा पापग्रहों से युक्त केन्द्र में हो यह चारों केन्द्रों में पापग्रह हों तब भी उस बालक की मृत्यु हो जाती है ॥ २९ ॥

अशुभेषु शुभेषु चक्रपूर्वापरभागेषु गतेषु कीट-लग्ने । विरतिं समुपैति बालकोऽयं खलखेटैर-पिकामिनीतनुस्थैः ॥ ३० ॥

जिसकी जन्म कुण्डली में सब शुभ ग्रह या सब अशुभ ग्रह जन्म कुण्डली के चक्र में लग्न से लेकर सप्तम घर तक पूर्व भाग में अथवा अष्टम घर से व्यय भाव तक उत्तर भाग में हों और कर्क यह वृश्चिक लग्न हों तब वह बालक की मृत्यु हो जाती है, अथवा लग्न में और सप्तम घर में ही सब पापग्रह है तब भी बालक मर जाता है ॥ ३० ॥

खलखगसहितो निशाकरोऽयं तनुमृतिमारगतो हि जन्मकाले । मृतिपदमुपयातिदेववालोऽपि च सकलैरविलोकितो हि सौम्यैः ॥ ३१ ॥

जिसकी कुण्डली में पापग्रह सहित चन्द्रमा लग्नाष्टम सप्तम घर में बैठा हो और उस चन्द्रमा को शुभग्रह देखता न हो तब वह बालक यदि देवपुत्र हो तब भी मर जाता है ॥ ३१ ॥

अशुभावगोदयगतौ शुभदैरवलोकितो न खलु युक्तविधुः । मृतिरन्त्यगे कृशविधौ कुगजागभगैः खलैरपि विकेन्द्रशुभैः ॥ ३२ ॥

जिस बालक की कुण्डली में स्थिर राशि के होकर दो पापग्रह लग्न में बैठे हों उन्हें कोई भी शुभ ग्रह देखता न हो और चन्द्रमा पर न तो किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो न कोई शुभ ग्रह संग में हो तब उस बालक की मृत्यु हो जाती है और क्षीण चन्द्रमा जिसके लग्न से बारहवें स्थान में हो और स्थिर राशि के होकर पापग्रह लग्न में और आठवें घर में बैठे हों और केन्द्र में जिसके कोई शुभ ग्रह होवे नहीं उस बालक की भी मृत्यु होती है ॥ ३२ ॥

शीतांशावरिविरतिस्थिते विनाशः पापैः स्यात्सपदि युतेक्षितेऽपि जन्तोः । अष्टाब्दैः शुभखचरैश्च मिश्रखेटैर्वेदब्दैरपि मुनिभिर्निरुक्तमेतत् ॥ ३३ ॥

जिस बालक की कुण्डली में पापग्रहों से दृष्ट अथवा युक्त चन्द्रमा छटे या आठवें घरमें बैठा हो उस बालककी जन्म लेते ही मृत्यु हो जाती है और जो चन्द्रमा शुभग्रहों से युक्त वा दृष्ट होकर छठे आठवें घरमें बैठाहो तव बालक की आठवें वर्ष में मृत्यु हो जाती है और जो शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के ग्रहों से युक्त और दृष्ट होकर छठे आठवें घरमें चन्द्रमा बैठाहो तव उस बालक की चौथे वर्ष में मृत्यु हो जाती है, ऐसा ज्योतिर्विद मुनियोंने कहा है।

अरिविरतिगते शुभे च दृष्टे बलसहिते न खलेन मासमायुः। मदनसदनगेऽपि लग्ननाथे खलविजिते ध्रुवमस्य मासमायुः ॥३४॥

जिस बालक की कुंडली में छठे या आठवें स्थान में शुभग्रह बैठा हो उसे बली होकर पापग्रह देखता हो तव उस बालककी एक मास की आयु होती है और जिसका लग्नेश पापग्रहसे पाडित होकर सप्तम घरमें बैठाहो उसकी अवश्य एक मास की ही आयु होती है॥ ३४॥

कृशशशिनि तनौ खलेष्टकेन्द्रे मृतिरथशीतरुचौ खलान्तराले मुनिहिबुकलयस्थितेऽपि लग्ने मुनिलयगैश्च सहाम्वया खलैः स्यात् ३५

जिसकी कुण्डली लग्नमें क्षीण चन्द्रमा बैठा हो और अष्टम घरमें या केन्द्र १।४।७।१० में कोई पाप ग्रह बैठा हो तब उस बालक की मृत्यु होजाती है अथवा पाप ग्रह के अन्तराल (बीच) में चन्द्रमा सप्तम चतुर्थ और अष्टम घर में से किसी स्थान में बैठाहो और लग्न सप्तम अष्टम घर में पापग्रह बैठे हों तब उस बालक की माता सहित मृत्यु होती है ॥ ३५ ॥

भविरतिगतिशोभनैरदृष्टे शशिनि नवेषु गतैः खलैर्मृतिः स्यात्। तनुगतहिमगौ खले नगस्थे मृतिरुदिता मुनिभिः शिशोरवश्यम् ॥३६॥

जो लग्नमें यह अष्टम घरमें चन्द्रमा बैठाहो कोई शुभ ग्रह उसे देखता न हो और नवम पंचम घरमें पापग्रह बैठे हों अथवा लग्नमें चन्द्रमा और सप्तम घरमें पापग्रह बैठा हो इन दोनों योगों के होने से बालक की अवश्य मृत्यु होती है ऐसा मुनिजनों ने कहा है ॥ ३६ ॥

असुरसुखगते खलेन युक्ते तनुगविधौ समम-म्बयलायारे। मृतिरथ तनुगे रवौ सशस्त्रं ग्रहणगते खलसंयुतेऽपि मृत्युः ॥३७॥

जो राहु से युक्त चन्द्रमा पापग्रह सहित लग्नमें बैठा हो तब उस बालक की माता सहित मृत्यु होती है और

जो पापग्रह और राहु युक्त सूर्य लग्न में बैठा हो तब उसकी शस्त्र से मृत्यु होती है और ग्रहण योग से युक्त पापग्रह सहित सूर्य या चन्द्रमा लग्नमें बैठा हो तबभी उस बालक की मृत्यु हो जाती है ॥ ३७ ॥

सबलशुभखगैर्युतेन दृष्टे तुहिनकरे दिनपेऽथवा तनौ चेत्। निधननवसुताश्रिताः खलाः स्युर्निधनमिहाशु वदन्तिवै मुनीन्द्राः ॥३८॥

कोई बली शुभग्रह जिसे न तो देखते हो और न बली शुभग्रह जिसके पास बैठे हों ऐसा सूर्य या चन्द्रमा लग्नमें बैठा हो और अष्टम पंचम नवम घरमें पापग्रह स्थित हों उस बालक की शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है, ऐसा ज्योतिर्विद मुनियों ने कहा है ॥ ३८ ॥

शनिरविविधुभूमिजैःक्रमेणव्ययनवललग्नलयाश्रितैर्मृतिः स्यात्। सबलसुरपुरोहितेन दृष्टैर्नहि मरणं गदितं तदा मुनीन्द्रैः ॥३९॥

जिसकी कुंडली में बारहवें घर में शनि नवम घर में सूर्य लग्न में चन्द्रमा और अष्टम घरमें मङ्गल बैठा हो तब वह बालक मर जाता है और यदि उक्त स्थानस्थ

उक्त ग्रहों को शुभग्रह देखते हों तो फिर वह बालक नहीं मरता है ॥ ३९ ॥

लयमारलग्ननवधीज्ययगः खलखेचरेण सहितः सितगुः। अवलोकितो नहि युतश्च शुभैर्नियतं भवेत्स मरणाय तदा ॥४०॥

जिसकी जन्म कुण्डली में अष्टम सप्तम लग्न नवम और पंचम घरमें किसी घर में पापग्रह से युक्त चन्द्रमा बैठा हो और उसे कोई शुभ ग्रह न तो देखता हो और न कोई शुभ ग्रह उसके पास बैठा हो तब उस बालक की अवश्य ही मृत्यु होती है ॥ ४० ॥

बलयोगकारकखगाश्रितभे जनिभे तनावपि यदास्ति विधुः। बलसंयुतः खलजदृवसहितः शरदन्त एव मृदितः स तदा ।४१॥

जब बलवान् योगकारक किसी ग्रह से युक्त जन्म राशि या जन्म लग्न में बलवान् चन्द्रमा हो उसे पाप ग्रह देखते हों या पापयुक्त हो तब वह चन्द्रमा उस बालक को एक वर्ष के समाप्त होते होते मृत्यु देता है ॥ ४१ ॥

इति भावकुतूहले चतुर्वेद बनमालिकृत भाषानुवादे तृतीयो बालारिष्टाध्यायः समाप्तः शुभम् ॥ ३ ॥

अथ पितृहा योगः

आदित्याद्दशमे पापः पीडितो दशमाधिपः ।
तदा पितुर्महाकष्टं निधनं वेति कीर्तितम्॥४२

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य से दशम घर में पाप ग्रह हो और दशम घर का स्वामी किसी ग्रह से पीड़ित हो (युक्त) तब उस बालक के पिता का मरण या मरण के समान किसी तरह का अत्यन्त दुःख होता है ॥ ४२ ॥

अथ मातृहा योगः

यदि भवति शशांकः पापयोरन्तराले जनुषि सुखनगस्थैः पापखेटैः शशांकात् । विधुरपि बलहीनो नष्टकान्तिर्जनन्या निधनमपिविशेषा दाहुराचार्यवर्याः ॥ ४३ ॥

जिसके जन्मकाल में कुण्डली में पापग्रहों के बीच में चन्द्रमा स्थित हो और चन्द्रमा से चतुर्थ और सप्तम घर में पापग्रह हों और चन्द्रमा भी बलहीन अथवा कांतिहीन होवे इस योग के होने से आचार्यों ने कहा है कि, विशेष करके उस बालक की माता भी मर जाती है और अपि शब्द के कहने से वह बालक भी मर जाता है ॥ ४३ ॥

अथ भ्रातृहा योगः

यदा पापखेचारिणो जन्मकाले घरानन्दनाक्रान्तभावात्सहोत्थे। तदैवाशु नाशंसहोत्थस्य धीरा मणित्थादयः प्राहुराचार्यमुख्याः ॥४४॥

मणित्थ नाम आदि आचार्यों ने कहा है कि, जिसके जन्म समय में मंगलाधिष्ठित घरसे तीसरे घरमें पापग्रह हों तब उस बालक के भाई का तत्काल विनाश हो जाता है ॥ ४४ ॥

अथ मातुलनाशक योगः

बुधारातिभावे तु पापा भवन्ति वृतं ज्ञोऽपि नीचाश्रितो नष्टवीर्यः। तदा मातुलानां विनाशो विशेषादिति प्राहुराचार्य्यवर्य्या नरणाम्॥४५॥

जिसकी कुण्डली में बुधाधिष्ठित घरसे छटे स्थानमें पापग्रह हों और बुधभी पापग्रह से संयुक्त हो अथवा अब नीचका होकर बलहीन हो तब उस बालक का मामा मर जाता है ऐसा आचार्यमुख्यों ने कहा है ॥ ४५ ॥

अथ पुत्रहा योगः

वृहस्पते पंचमभावसंस्था महीजमन्दाशुदिवा-

कराश्चेत् । गुरोरपत्याधिपतिःसपापस्तदात्मजानां विरतिं वदन्ति ॥४६॥

जिस पुरुषकी जन्म कुण्डलीमें बृहस्पति अधिष्ठित राशिसे पंचम स्थानमें मंगल शनि राहु और सूर्यमें से कोई ग्रह बैठे हों और गुरु अधिष्ठित घरसे पञ्चम घरका जो स्वामी हो वह पापग्रहों से युक्त होवे तब उस मनुष्यके पुत्र होकर मरजाते हैं ऐसा ज्योर्विदाचार्य कहते हैं ॥४६॥

अथ भार्यानाशकयोगः ।

चेत्कवेरंगनागारगामीकुजातोविनाशोऽङ्गनायाः सपापो निरुक्ताः । नैधने मन्दतः पापखेटा बलिष्ठा नृणां नैधनं सत्वरंसन्दिशन्ति॥४७॥

जिस मनुष्यकी जन्म कुण्डलीमें शुक्राधिष्ठित घरसे सप्तम घरमें पापग्रहसे रक्त मंगल बैठाहो तब अथवा शनि अधिष्ठित राशिसे अष्टम घरमें पापग्रह बलवान् होकर बैठेहों उस मनुष्यकी भार्या का शीघ्र ही नाश करते हैं ॥४७॥

इति भावकुतूहले चतुर्वेद वनमालि विरचिते भाषानुवादे चतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥

अथ रिष्टभंगयोगानिरूप्यन्ते ।

भवतीन्दुरथोशुभान्तराले परिपूर्णः किरणैश्च

जन्मकाले। विनिहन्ति तथाशु दोषसंघानि-
भसघानिव केसरी बलिष्ठः ॥४८॥

जिस मनुष्य की जन्म कुण्डलीमें षोडश कला पूर्ण चन्द्रमा बलवान् शुभ ग्रहोंके बीचमें बैठा हो तब अनेक दोषों के समूहको नाश करता है, जैसे बलवान् सिंह हाथियों को नाश करता है ॥४८॥

यदिजनुषि निशाकरोरिभावं गुरुकविचन्द्र जव-
र्गगो विशेषात्। शमयति बहुकष्टजालमद्धा मुर-
हरनाम यथाघसंचतापम् ॥४९॥

जिस मनुष्य की जन्मकुण्डलीमें बृहस्पति शुक्र बुधके षड्वर्गका होकर छठे घरमें चन्द्रमा स्थित हो तब वह अने-कारिष्टोंके जालको नाश करता है, जैसे मुरारी भगवान् का नाम कीर्तन अनेक पापों का नाश करता है ॥४९॥

यदि सकलभभोगवीक्ष्यमाणो लसिततनुर्जनुरि
न्दुरेव सद्यः। दिविचरजनितं निहन्ति दोषं खग-
पतिराशु यथा भुजङ्गजालम् ॥५०॥

जिसके जन्मकाल में सब शुभ ग्रहोंसे दृष्ट चन्द्रमा विराजमान हो तब वह अनेक ग्रहजनित दोषोंका नाश

करता है, जैसे अनेक सर्प समुदायको गरुड़ नाश करता है ॥ ५० ॥

यदि भवति तनोः क्षपाकरोऽयं मृतिभवने शुभखेटवर्गगश्चेत् । गदविकलतनुं पितेव बालं किल सरितः परिरक्षति प्रसन्न ॥५१॥

जिसकी जन्मकुण्डली में लग्नसे अष्टम घरमें शुभ ग्रहके षड्वर्ग का होकर पूर्ण चन्द्रमा स्थित हो तब अनेक अरिष्टकारक योगों का नाश करता है, जैसे पिता अपने पुत्रकी अनेक रोगादि दुःखोंसे रक्षा करता है ॥५१॥

शुभभवनगतस्तदीयभागे जनिसमये कविनावलोकितश्येत् । शमयति सकलं शशी त्वरिष्टं जलमिव पावमममंगिनामतीव ॥५२॥

जिस मनुष्यके जन्मकाल में शुक्रके षड्वर्गका होकर शुभ ग्रहकी राशिका चन्द्रमा बैठा हो और उसे शुक्र देखता हो तब वह अनेक अरिष्टकारक योगों को नाश करता है, जैसे अग्निको जल नाश कर देता है ॥५२॥

भवति हि जनुरंगपो बलिष्ठः सकलशुभैरवलोकितो न पापैः । इह मृतमपहाय दीर्घमायुर्वितरति वित्तससुन्नतिं विशेषात् ॥५३॥

जिसकी कुण्डली में लग्नेश ग्रह बलवान् होकर बैठा हो उसे शुभग्रह देखते हों और पापग्रह कोई देखते न हों तब वह दीर्घायुको और धनकी समुन्नतिको करता है और अनेक अरिष्ट मृति योगोंको शमन करता है ॥ ५३ ॥

बलवानपि केन्द्रगो विशेषादिह सौम्यो यदि लाभगो दिनेशः। शमयत्यखिलामरिष्टमालाम-पि गांग हि जलं यथाघजालम् ॥५४॥

जिसकी कुण्डलीमें बलवान् होकर बुध केन्द्र १।४ ७।१० में बैठा हो और बलवान् सूर्य ग्यारवें घरमें स्थित हो तब उसके अनेकारिष्टोंको नाश करता है, जैसे श्रीगंगा-जल अनेक पापों को नाश करता है ॥ ५४ ॥

सुरपतिगुरुरंगधामगामी निजपदगोऽपि च तुङ्ग-तामुपेतः। बहुतरखगजं निहन्ति दोषं हरिरिभ यूथमुपागतं हि यद्वत् ।५५॥

जिसकी जन्मकुण्डलीमें स्वक्षेत्री होकर अथवा अपने उच्चका होकर बृहस्पति लग्नमें बैठा हो तब वह अनेक ग्रह-जन्य अशुभ योगों की निवृति करनेवाला होता है, जैसे अनेक हस्तिझुण्डों की सिंह निवृत्ति करता है ॥५५॥

गुरुसितबुधवर्गगा हि पापाः सकलशुभैरवलो-

कितायदि स्युः। खगकृतमपि वारयन्त्यरिष्टं तृणराशीनिव वन्हिबिन्दरेकः ॥५६॥

जिसकी जन्मकुण्डली में वृहस्पति, शुक्र और बुध के षड्वर्ग में पापग्रह बैठे हों उन्हें सब शुभग्रह देखते हों तब तृण समुदायको अग्नि की तरह अनेक ग्रहजन्य अरिष्टोंको नाश करते हैं ॥ ५६ ॥

सहजरिपुगतोऽथ लाभगो वा सकलशुभैरवलोकितो युतो वा। अगुरिह विनिहन्ति रिष्टजालं नगजाधीश इवाधितापराशिम् ॥५७॥

जिसकी कुण्डलीमें तीसरे छटे और ग्यारहवें घर में से किसी घरमें शुभ ग्रहोंसे दृष्ट अथवा युक्त राहु बैठा हो तब अनेकारिष्ट जालोंकी निवृति करता है, जैसे श्रीशिवजी का स्मरण अनेक आधिव्याधि तापोंकी निवृति करता है ॥५७॥

अधिकबलयुता जनुर्नभोगा यदि सकला नरराशिगा भवन्ति। निजभवननिजोच्चगेहगा वा बहुतरमाशु लयं प्रयाति रिष्टम् ॥५८॥

जिसकी कुण्डली में सब ग्रह पुरुषराशिके होकर बलवान् बैठे हों अथवा स्वक्षेत्री होकर या अपने उच्च के होकर बैठे हों तब अनेकारिष्टोंको नाश करते हैं ॥५८॥

इति श्रीभाव० चतुर्वेदवनमालिविरचिते भाषा० पंचमो० ५

अथ संतानभावविचारः

तत्रादौसामान्यसन्तानयोगानिरूप्यन्ते ।

नन्दनाधिपतिना युतेक्षितं नन्दनं शुभन भोग-संयुतम् । नन्दनागमनमेव सत्त्वरं व्यत्ययेन नहिं नन्दनागमः ॥५६॥

जिसके पञ्चम भवन को पूर्ण दृष्टि से पंचमेष देखता हो अथवा पंचमेष पंचम घर में बैठा हो अथवा शुभ ग्रह पंचम घर में बैठे हों तब उस पुरुष को शीघ्र ही पुत्र देने वाले होते हैं और यदि उक्त रोग से विपरीत हो यानी पंचमेष पंचम को न देखता हो न पंचम में हो और पाप ग्रह से दृष्ट या युक्त पंचम स्थान हो तब उस पुरुष को पुत्र का अभाव होता है ॥ ५६ ॥

अथ प्रथम कन्या वा सुतोत्पत्तिः ।

अंगाधिपे लग्नगते तृतीये धनालये वा प्रथमं सुतः स्यात् । सुखे यदा लग्नपतौ नरस्य कन्या सुतोवेति सुतश्च कन्या ॥६०॥

जिसकी कुण्डली में लग्नेश लग्न में या तृतीय घर में अथवा दूसरे घरमें बैठा हो उस मनुष्य के प्रथम पुत्र होता

है और जिसका लग्नेश चौथे घर में बैठा हो उसके प्रथम कन्या पश्चात् पुत्र होगा अथवा कन्या और पुत्र एक साथ ही जोरहले होंगे ॥ ६० ॥

अथ सन्तान संख्या ।

यावन्मितानामिहि पुत्रभावे नरग्रहाणामिहि दृष्टयः स्युः । तावन्त एवास्य भवन्ति पुत्राः कन्यामितिः स्त्रीग्रहदृष्टितुल्या ॥६१॥

जितनी संख्या के पु० ग्रह पंचम घर को देखते हों उतनी संख्या परिमित उसके पुत्र होते हैं और यदि पंचम घरको जितने स्त्री ग्रह देखते हों तब उस पुरुष के उतनी संख्या परिमित कन्या होती हैं ॥ ६१ ॥

अथ सुतहानिकारको योगः ।

हसज्ञभावपतिः सहजे यदा तनुगतो धनगो व्ययगोऽपि वा । सुतगतः सुतहानि करो-नृणां बुधवरैरुदितो मिहिरादिभिः ॥६२॥

मिहिर आदि ज्योतिषाचार्यों ने ऐसा कहा है कि जिसका तृतीय भावका स्वामी ग्रह तृतीय घरमें या लग्न में या धन (दूसरे) में या बारहवें घरमें अथवा पंचम घर में बठा हो तब वो उस मनुष्यको अवश्य पुत्र हानि करता है ।

अथ सन्तान सुखासुखयोगः ।

शुक्रांगारनिशाकरा द्वितनुगाः सन्तानसौख्यम् नृणामादौ सांजनयंन्ति जन्मसमये चापं विना प्रायशः । मीने वा धनुषि प्रमाणपटवः सन्तान भावे यदासंतानं न तदामनन्ति विबुधाः पुंसां विशेषादिह ॥६३॥

जिस मनुष्य की जन्म कुण्डली में धन को छोड़कर किसी दुःखभाव लग्न में शुक्र, मङ्गल और चन्द्रमा बैठे हों तब उस मनुष्य के प्रथम ही सन्तान का सुख देते हैं और उक्त शुक्रादि ग्रह मीनके या धन के होकर पंचम घर में हों तब मनुष्योंको विशेष करके सन्तान का सुख नहीं देते हैं ऐसा पण्डित लोग कहते हैं ॥ ६३ ॥

अथ नपुंसकयोगः ।

अर्के कर्कगते हरौ भृगुसुते मन्दे तुलायामजे चन्द्रे यस्य नरस्य जन्म समये वीर्यच्युतोऽसौ भवेत् । लग्ने चन्द्रयुते गुरौ रविसुत पुत्रेऽपि वीर्यच्युतो जीवेऽजे सरवौ वृतावपि कुजे क्लीवर्क्षगे कण्टके ॥६४॥

जिस पुरुष की कुन्डलीमें कर्कराशिमें तो सूर्य, सिंह राशिका होकर शुक्र, तुलाराशिका होकर शनि और मेष राशिका होकर चंद्रमा बैठाहो तब वो वीर्यसे रहित अर्थात् नपुंसक पुरुष होता है और जो लग्नमें तो बृहस्पतिसे युक्त चंद्रमा हो और क्षीणवीर्य होकर पंचम घरमें शनि बैठा हो तब भी वो पुरुष नपुंसक होता है और सूर्य सहित बृहस्पति लग्न में होवे अष्टम घरमें मंगल होवे और कंटक १।४।७।१० घर में नपुंसक संज्ञक राशि होवे तब भी वो पुरुष नपुंसक ही होता हैं ॥६४॥

कन्याराशिगते लग्ने बुधमन्दावलोकिते ।
शनिक्षेत्रगते शुक्रे वीर्य्यहीनो नरो भवेत् ६५

जो जन्मलग्न कन्या हो उसे बुध और शनि देखते हों और शनि के क्षेत्र १०।११ में शुक्र बैठा हो इस योगके पढ़ने से भी मनुष्य वीर्यहीन (नपुंसक) होता है ॥६५॥

अथ पुत्रसुखाभावयोगः ।

नीचे गुरौ भृगौ वापि समे ज्ञे विषमे रवौ ।
तदा पुत्रसुखं न स्यादित्युक्तं गणकोत्तमैः६६

जिसकी जन्मकुंडली में नीच का होकर बृहस्पति या शुक्र बैठा हो और बुध वा सूर्य समराशिका होकर बैठा हो

तब गणकोत्तमों ने कहा कि उस मनुष्य को पुत्र का सुख नहीं होता है ॥ ६६ ॥

अथ षष्टिमितेऽब्दे सन्तानोत्पत्तियोगः ।

कर्कटे तु कलानाथे पापयुक्तेक्षिते यदा ।
मन्ददृष्टे दिवानाथे पुत्रः षष्टिमितेब्दके॥६७॥

जिसकी कुण्डलीमें पापग्रहसे युक्त अथवा दृष्ट चंद्रमा कर्कराशि का होकर बैठा हो और सूर्य को शनि देखता हो उस पुरुष के पूर्ण षष्टि वर्षकी आयुमें पुत्र होता है ॥६७॥

अथ त्रिंशद्वर्षात्परं सन्तानोत्पत्तियोगः ।

पापभे पापसंयुक्ते जन्मलग्ने रवावलौ ।
युग्मभेवसुधापुत्रे खगुणाऽब्दात्परं सुतः॥६८॥

जिसका कुण्डली में जन्मलग्न पापग्रह युक्त हो और वो लग्नभी पापग्रह का ही हो सूर्य वृश्चिकका होकर बैठा हो तथा मिथुन राशिका होकर मंगल बैठा हो इस योगके होने से पुरुष के ३० वर्ष के पश्चात् सन्तान होती है ॥ ६८ ॥

अथ सन्तानाभावयोगः ।

अलौ गुरुकवी लग्ने भवेतां चन्द्रजार्कजौ ।
य पश्यति सुतं गेहे कदाचिदपि मानवः ६९

जिसकी कुण्डली में वृश्चिक के होकर बृहस्पति और शुक्र बैठा हो और बुध शनि लग्न में बैठे हों उस मनुष्य के घर में पुत्र का मुख नहीं दीखता है ॥ ६९ ॥

मन्देन्दुदृष्टौ रिपुसंयुतोगांधिपो रविः शत्रुघ्ने विपुत्रः । मन्दोऽरिगेहे बुधसूर्यचन्द्रैर्दृष्टा विलग्ने खलवीक्षिते वा ॥७०॥

जिसका लग्नेश शनि चन्द्रसे दृष्ट हो अथवा अपने शत्रुसे युक्त हो और छटे घरमें अथवा द्वितीय घरमें सूर्य बैठा हो तब उस पुरुषके पुत्र नहीं होता है और जिसके बुध, सूर्य, चन्द्रमासे दृष्ट शनि छठे घरमें हो अथवा पापग्रह से दृष्ट शनि बैठा हो तब भी उसके पुत्र का अभाव होता है ॥ ७० ॥

अथ पुत्रहानिकारकयोगः ।

मदालयेऽर्के खलदृष्टियुक्ते लग्नेपि वा पापखगस्य वर्गे । अपत्यहानिः कुलदेवकोपात्परातनै रङ्गभृतां निरुक्ता ॥ ७१ ॥

जिसकी कुण्डली में शनि के घर में सूर्य बैठा हो उसे पापग्रह देखता हो अथवा पापग्रहसे युक्त हो अथवा पापग्रहके षड्वर्गमें लग्नमें हो उस मनुष्यके कुलदेव के

कोप से सन्तान का अभाव (मरना) कहना चाहिये ये पुरातन ऋषियों ने कहा है ॥७१॥

अपत्यभावे यदि मंगलः स्यादपत्यराशिं विनिहन्ति सद्यः। अस्तांशके पापयुते सुतेशे तदा न सन्तानसुखं वदन्ति ॥७२॥

जिसके पंचम घरमें मंगल हो तब भी वो शीघ्र ही सन्तान नाश करता है अथवा सप्त भवन का नवांशेष और पंचमेश पापग्रह युक्त हो तब भी उसके सन्तान का मरण होता है ऐसा ऋषियोंने कहा है ॥७२॥

गुरोः सुतागारपतिः सपापो बलेन हीनो मनुजो विपुत्रः। अरावपापे निधने तदीशः सुतेन हीनो मनुजस्तदानीम् ॥७३॥

जिसका पूर्वाधिष्ठित राशि से पंचमेश निर्बल होकर पापग्रह से युक्त हो तब वो मनुष्य पुत्रहीन होता है और छठे घरमें पापग्रह नहीं हो और छठे घरका स्वामी अष्टम घरसे बैठा हो तब भी वो मनुष्य पुत्रहीन होता है ॥७३॥

तथैव भानुः खलु पञ्चमस्थो जातं च जातं विनिहन्ति बालम्। लग्नेश्वरः पापयुतः सुतेशो व्ययाष्टमे पुत्रसुखेन हीनः ॥७४॥

इसी प्रकार जिसके पञ्चम घरमें सूर्य हो तब उत्पन्न हुए पुत्रकी मृत्यु करता है अर्थात् उसके हो होकर पुत्र मर जाते हैं और जिसका लग्नेश पापग्रह युक्त हो और पंचमेश ग्रह जिसके अष्टम या बारहवें घरमें बैठा हो तब भी वो मनुष्य पुत्र सुखसे हीन होता है ॥७४॥

अथ वंशेशकोपात्सुतहानिकारकयोगः ।

यदाशुसूर्यारशनैश्चराणां दोषो यदा जन्मनि मानवानाम् । वंशेशकोपेन सुतस्य नाशं तदा वदन्तीति पुराणविज्ञाः ॥५५॥

पुराण के जानने वाले ऐसा कहते हैं कि सूर्य, राहु, मंगल और शनैश्चर इन चारों ग्रहोंमें से किसी ग्रह के दोष से पुत्रका अवरोध जिसकी कुण्डली में दीखता होवे तो वंशेज के कोप से पुत्रोंका नाश कहना ॥७५॥

अथ सुतोत्पत्तेरुपायः

बुधशुक्रकृते दोषे सुताप्तिः शिवपूजनात् । गुरुचन्द्रकृते दोषे यन्त्रमन्त्रौषधीबलात् ॥७६॥

बुध और शुक्र के दोषसे पुत्रावरोध हो तो शिवजी के पूजन (प्रदोषादिव्रत) से पुत्र की प्राप्ति होती है और

जो गुरु चन्द्रमा के दोष से पुत्रावरोध हो तब यन्त्र मन्त्र और औषधि के सेवन से पुत्र प्राप्ति होती है ॥७६॥

राहुणा कन्यकादानं भानुना हरिकीर्तनम् ।
शिखिना कपिलादानं मन्दाराभ्यां षडङ्गकम् ॥

यदि राहुके निमित्त से पुत्रका अवरोध हो तब कन्या दान करने से, सूर्यके निमित्तसे पुत्रावरोध हो तब भगवान के भजनकीर्तन करने से केतुके दोषसे सन्तान का अभाव दीखता हो तब कपिला दान करनेसे और शनि या मंगल के दोषसे सन्तानका अभाव दीखे तो षडंग अर्थात् रुद्राध्यायका पाठ रुद्राभिषेक प्रदोष का व्रत हरिवंश श्रवण वंशेज पूजन और सन्तान गोपाल का भजन करने से पुत्र की प्राप्ति होती है ॥७७॥

सर्वदोषविनाशाय सन्तानहरिपूजनम् ।
कुर्याद्भौमव्रतं चापि कामदेवव्रतं नरः ॥७८॥

सब प्रकार दोषोंकी निवृत्ति के अर्थ सन्तान गोपाल का पूजन भजन मंगल का व्रत और कामदेवका व्रत करना चाहिए ॥७८॥

इति श्रीभावकुतूहले चतुर्वेदवनमालिनिर्मिते
भाषानुवादे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

तत्रादौ सार्वभौमराजयोगः ।

तत्रादौ सार्व भौमराजयोगो लिख्यते ।

खेटा यदा पंचनिजोच्चसंस्थाः स सार्वभौमः खलु यस्य सूतौ । त्रिभिः स्वतुङ्गोपगतैः राजा स नृपालबालोन्यसुतस्तु मन्त्री ॥७६॥

जिस पुरुष की कुण्डलीमें पाँच ग्रह उच्चके होकर बैठे हों वो पुरुष राजवंशमें ही उत्पन्न होकर सब भूमिका चक्रवर्ती राजा होता है, और जिसकी कुण्डलीमें तीन ग्रह उच्च के बैठे हों तब वो पुरुष जो राजकुलका जन्मा है तब तो राजाही होता है यदि वो किसी अन्यकुलका उत्पन्न हुआ है तब वो पुरुष राजाका मन्त्री होता है ॥७६॥

अथ समुद्रपर्यन्तराज्यप्राप्तियोगः

गुराबुच्चे केन्द्रे भवति दशमैं दानऽगुरौ जनुः काले मुद्रा विलसति समुद्रावधि भृशम् । गुरौ कर्के चापे भवति च सचन्द्रे दिनमणौ बुधे तुंगे लग्ने बलवति खगे वा नरपतिः ॥८०॥

जिस मनुष्यकी जन्मसमय में उच्चका होकर बृहस्पति केन्द्रमें ६।५ बैठा हो और दशम घरमें शुक्र बैठा हो उस

मनुष्यका समुद्रपर्यन्त सिक्का प्रवृत्त होता है अर्थात् समुद्र पर्यन्त हुक्म चलता है, अथवा कर्क का या धनका होकर चंद्रमा सहित बृहस्पति हो और बुध सूर्य दोनों ग्रह उच्चके होकर लग्नमें बैठे हों अथवा कोई और ग्रह बलवान होकर लग्नमें बठाहो तब भी वो पुरुष राजा होता है ॥८०॥

अथान्यराजयोगः

गुरावंके कर्के मदनसुखभावे दिनमणेः सुथे शुक्रे वक्रे प्रभवति जनेर्यस्य समयः महांऽभोधेर्नीरं गमनसमये तस्य करिणां चलद्घण्टानादाद्-जति चपलत्वं हि परितः ॥८१॥

जिसके कर्कका होकर बृहस्पति लग्नमें बैठा हो और सप्तम या पंचम घरमें शनि बठा हो और शुक्र वक्री होकर चाहैं कहीं बैठा हो उस राजा के हाथियोंके गमन समय में हिलते घण्टाओंके शब्दसे समुद्रका जल हिलने लगता है८१

अजे जीवादित्यौ दशमभवने भूमितनयस्तपः स्थाने शुक्रो बुधविधुयुतो यस्य जनने। गजाना-मालीभिर्विजयगमने तस्य सहसा समाक्रान्ता पृथ्वी व्रजति चकिता मोहपदवीम् ॥८२॥

जिसके मेषके होकर बृहस्पति और सूर्य बैठे हों और दशम भवनमें मङ्गल बैठा हो तथा बुध चन्द्रमा युक्त शुक्र भी दशम घरमें ही बैठा हो उसके विजय गमन समय में मत्तगजों के भार से दबी हुई भूमि चकित होकर मोहपदवी को प्राप्त होती है अर्थात् दीखने से बन्द हो जाती है ८२

कन्यां के सबुधे भृषे सुरगुरौ भूपुत्रसूर्यौ बली मन्दे कर्कगते शरासनगते शुक्रे यदीया जनिः। तस्यालं शिरसा वहन्ति वसुधाधीशाः सदा शासनमानन्दाद्धिकचारविन्दकलिका-मालमिव प्रायशः ॥८३॥

और जिस मनुष्यकी कुण्डलीमें बुधसे युक्त तो कन्या लग्न हो मीनका बृहस्पति हो मंगल और सूर्य बली होकर बैठे हों शनि कर्कका हो और धनराशिका होकर शुक्र बैठा हो उसकी आज्ञाको खिली कमल कालिका की माला की तरह यावन्मात्र राज मण्डल शिरसे धारण करते हैं ॥८३॥

भाग्ये भानुबुधौ मृगे धरणिजो जीवज्ञशुकाः सुते तिष्ठंति प्रबला दिवाकरकरव्यासंग मुक्ता यदा। तत्रोद्भूतजनस्य यानसमये प्रोन्नद्र-

राजिब्रजव्यस्तन्यस्तपदप्रचाररजसाछन्नं नभो-मण्ड लम् ॥८४॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें नवम घरमें तो बली हो कर शनि बैठा हो मकरका होकर बली मंगल बैठा हो बृहस्पति बुध और शुक्र बली होकर पंचम घरमें बैठे हों परंतु ये अस्त दोषसे रहित हों यानी इन योग कारक ग्रहों में से कोई ग्रह अस्त न हो इस योगमें जन्म लेनेवाले मनुष्य के दिग्विजयार्थ गमन करनेके समयमें सेना समूहके पद धरने से उड़ी धूलिजालसे आकाशमंडलभी आच्छादित होजाता है॥ ८४ ॥

अथ चतुष्कमहोदधिराजयोगः ।

यदि तुलामकराजकुलीरभे रविमुखाः सकला विलसंति चेत् । इह चतुष्कमहोदधिसंज्ञकः सुरपतेः समतां तनुते नृणाम् ॥८५॥

जिसके जन्म समयमें सूर्यादि सब ग्रह तुला मकर मेष और कर्क इन्हीं चार राशियोंमें बैठे हों इसे चतुष्क महो दधि योग कहते हैं यह योग मनुष्यको इन्द्रकी समता को प्राप्त करता है यानी इस योग के होने से इन्द्र के तुल्य वह प्रतापी पुरुष हो जाता है॥ ८५ ॥

राज्ये स्वामी निजोच्चे भवति तनुधनापत्यपा
ताल्लकांतापुण्यामुच्चराशो पतय इह यदा
वीर्यवन्तो भवंति। राजानोयस्य तस्य प्रबल-
बलघटादन्तिघण्टाधनुर्ज्यांटङ्कारब्रातभीताजग-
द्धृदरगताः कम्पभावं भजांति ॥८६॥

जिस पुरुषकी जन्म कुण्डली में राज्य (दशम) भवनका स्वामी ग्रह उच्चका होकर दशम घरमें बैठा हो और लग्न द्वितीय पंचम चतुर्थ सप्तम और नवम के स्वामी ग्रह उच्चके बलवान होकर अपने अपने स्थानमें स्थित हों उसको सब सेनाऔर सेनाके हाथियोंके घण्टा के शब्द से और धनुष्य की प्रत्यंचा के टंकारों से भयभीत हुये राज मण्डल कांपने लगते हैं ॥ ८६ ॥

येषामर्को निजोच्चे प्रभवति मकरे मङ्गलो
वैरिभावे दैत्येज्यः कर्मगामी शनिरपि सहजे
जन्ममात्रेण तेषाम्। पृथ्वी सद्दानतोयार्णव-
जनितयशश्चंद्रकांत्यार्द्रनाभा मत्तोन्मत्तप्रचंड
प्रबलरिपुशिरोमण्डले वज्रपातः ॥८७॥

जिस मनुष्यकी जन्मकुण्डली में अपने उच्च का तो सूर्य हो मकरका मंगल छठे घरमें दशम घरमें शुक्र और तीसरे घरमें शनि हो इस योगमें जन्म लेने वाले पुरुष के जन्म दिन से ही मत्त हाथियों के मद जल समुद्र के चन्द्र कांति तुल्य उज्वल यश से अर्जुन वृक्ष के समान सफेद मुख वाले शत्रु मण्डलों के शिर पर वज्रपात से पड़ते प्रतीत होते हैं ॥ ८७ ॥

सम्बन्धो दशमाधिपस्य नवमाधीशेन येषां जनुःकाले पंचमभावपेन च बलोपेतस्य तुल्येन चेत्। प्रस्थाने सति लोलया तनुभृतां वश्या-रिबिश्वम्भरा गर्जद्घोटकमत्तवारण घटाकां-ता समन्ताद्भवेत् ॥८८॥

जिस मनुष्य की जन्म कुण्डली में बलयुक्त भाग्येश राज्येश का चार प्रकार के सम्बन्ध में से किसी प्रकार का सम्बन्ध हो अथवा बलयुक्त पंचमेश से दोनों सम्बन्ध करते हों इस योग के होनेसे उसके दिग्विजयार्थ प्रयाण काल में चली हुई सेना के हाथियों की चीत्कार और घोड़ों की हिनहिनाहट से वश करने योग्य शत्रुओं के देशों की भूमि सब तरफ से व्याप्त होती है ॥ ८८ ॥

राज्येशो धर्मभवे तदाधिपधनगे लाभभावेशस्वोच्चे लाभे वा धर्मनाथो धनसुखतनये धर्मकर्माद्विलग्ने। येषां वै जन्मकाले विहरति कमला मन्दिरे चापि तेषाँ नीचे वंशेऽपि जाता वदति मुनिवरास्ते नरेन्द्रा भवन्ति ८७

जिसके जन्म कुण्डली में दशम घर का स्वामी नवप घर में हो और नवें घरका स्वामी द्वितीय स्थान में हो लाभेश उच्च का हो अथवा लाभ में बैठा हो अथवा नवें घरका स्वामी द्वितीय चतुर्थ पंचम नवम दशम सप्तम और लग्न इन घरों में से किसी घर में बैठा होवे तो वो मनुष्य यदि नीच कुल के जन्मे हों तब भी उनके घर में सदा मूर्तिमती लक्ष्मी विहार करती है और मुनिवर कहते हैं कि वे अवश्य राजा होते हैं ॥ ८६ ॥

अथ सिंहासनयोगः।

कन्यामीनबृषालिभे यदि खगाः सिंहासनः कीर्तितः किंवा चापनृयुग्मकुम्भ हरिभे स्टेटे हि सिंहासनः। यः सिंहासन योगतो हि मनुजो भूपाधिराजो बली गर्जत्कुञ्जरवाजिराजिमुकुटारूढो धरामंडले ॥९०॥

जिसकी कुण्डली में कन्या मीन वृष और वृश्चिक इन्हीं राशियोंमें सब ग्रह बैठे हों अथवा धन मिथुन कुम्भ और सिंहमें ही सब ग्रह बैठे हों इसे उभय सिंहासन योग कहते हैं इस सिंहासन योग के होने से वो मनुष्य राजोंका अधिराज बड़ा बलवान और गर्जना करते हाथी घोड़ों के समुदाय वाले राजमण्डलों के मुकुटों पर रहने वाला भूमण्डल का स्वामी होता है ॥ ९० ॥

अथ चतुश्चक्रयोगः।

अजे सिंहे कन्याकलशमिथुनान्त्यालितुरगे समाजःखेटानामिह भवति जन्मन्यपि नरः चतुश्चक्रे योगे सकलसुखभोगेन मिलितो महीपानामाली मुकुटमणिपाली विजयते ९१

जिसकी कुण्डली में मेष, सिंह, कन्या, कुम्भ, मिथुन, मीन, वृश्चिक, और धन इन्हीं राशियों में सब ग्रह बैठे हों तब चतुश्चक्रयोग होता है इस योग के होने से पुरुष सकल सुख भोगों से युक्त होकर सब भूमि पालों की मुकुट मणियों के ऊपर विराजमान होता है ॥ ९१ ॥

अथैकावलियोगः।

एकैकेन खगेन जन्मसमये सैकावली कीर्तिता

मुक्तावलिव समस्तभूपमुकुटालंकारचूडामणिः।
तज्जातो रिपुपुञ्जभंजनकरो गन्धर्वदिव्यांगना-
वृन्दानन्दपरो गुणव्रजधरो विद्याकरो मानवः॥

जिस मनुष्य की जन्म कुण्डली में एक-एक राशि में मोतियों की लड़ी की तरह एक एकही ग्रह बराबर बराबर बैठे हों इसे एकावली योग कहते हैं। इस योग के होने से वो मनुष्य समस्त राजों का चूड़ामणि सब शत्रुजनों का मारने वाला अनेक गन्धर्व कन्या समान दिव्य स्त्रियों के आनन्द का अनुभव करने वाला शुभ गुणों से युक्त और अनेक प्रकार उत्तम विद्याओंका जानने वाला होता है ९२

अथ शत्रुहन्तायोगः

कुलीरे कन्यायामनिमिषधनुर्युग्मभवने जनुः-
काले यस्य प्रभवति नभोगो रविमुखः। प्रच-
ण्डप्रोत्तुंगप्रबलरिपुहन्ता क्षितिपतिः समन्ता-
दाधिक्यं व्रजति धनदानेन महताम् ॥९३॥

जिसकी कुण्डलीमें कर्क कन्या मीन धन और मिथुन राशिमेंही सूर्यादि संपूर्ण ग्रह बैठे हों तब वो मनुष्य बड़े बड़े प्रबल प्रतापी शत्रु मण्डल का मारने वाला पृथ्वी का

पालन करने वाला होता है और महज्जनों को धन देने से सर्वत्र आधिक्यको प्राप्त होता है ॥९३॥

अथ नृपमुकुटयोगः

अथादित्यः सिंहे विधुरपि कुलीरे रविसुतो मृगे मीने जीवो हिमकर सुतो यस्य मिथुने। तुलायां शुक्रश्चेदजभवनगो भूमितनयो नृबालो भूपालो नृपमुकुटभूषामणिवरः ॥९४॥

जिसकी कुण्डली में सिंह का सूर्य, कर्कका चन्द्रमा, मकरका शनि, मीनका बृहस्पति, मिथुन का बुध तुलाका शुक्र और मेषराशि का मंगल हो वो मनुष्य राजों का मुकुटमणि राजा होता है ॥९४॥

अथ सामान्यराजयोगः

दिवानाथःसिंहे गवि हिमकरो मेषभवने महीजः कन्यायाममृतकरसूनुः सुरगुरुः। भवेच्चापे कुम्भे दिनमणिसुतस्तौलिनि कविर्जनुः काले यस्य प्रभवति नरोऽसौक्षितिपतिः ॥९५॥

जिस मनुष्यके जन्मसमय में सिंह राशिका सूर्य, वृष राशिका चन्द्रमा, मेषराशि का मंगल, कन्या का बुध, धन

राशिका बृहस्पति, कुम्भका शनि और तुलाका शुक्र बैठा हो वो मनुष्य भूमिका पालन करने वाला सार्वभौम राजा होता है ॥९५॥

अथ शत्रुभयकारकयोगः ।

बली पुण्यस्वामी दशमभवनाधीशभवनेतपः स्वाम्यागारे भवति दशमेशोऽपि भविनाम् । तदा गर्जद्दन्तावलनिकरघण्टाघनरवैर्दिगन्तं वित्रस्ता विजयगमने यात्यरिगणः ॥९६॥

जिसकी जन्मकुण्डलीमें बलवान नवम घरका स्वामी तो दशम घरके स्वामीके घरमें और बलवान होकर दशम घरका स्वामी नवम घरके स्वामी के घर में बैठा हो तब उसकी सेनाके चीत्कार मारते हाथियों के शब्दसे त्रस्त हुये शत्रुगण दशो दिशामें भागकर जाते हैं ॥९६॥

यदा पुण्यस्वामी दशमभवने पुण्यभवने वली कर्माधीशो भवति भविनामेव जनने। समुद्रान्तं कीर्तिर्विजयगमने वैरिपटली धनुर्ज्यटङ्कारैर्भ-जति चकिता भीतिपदवीम् ॥९७॥

और जिसका बलवान् होकर नवमेष दशम घर में और बलवान् दशम घरका स्वामी नवम घरमें बैठा हो तब वा मनुष्य समुद्र पर्यंत विख्यात कीर्ति वाला और अपनी धनुष टङ्कार से वैरियों को दशों दिशाओं में भगाने वाला होता है ॥९७॥

अथ सुराजयोगः

भवेदंगाधीशो जननसमये पुण्यभवने तथा कर्मस्वामी भवति च विलग्ने लनिमताम्। तदा गर्जद्दन्ता बलकलभवाजिव्रजपदैः समाक्रान्ता पृथ्वी ब्रजति गमने मोहपदवीम् ॥९८॥

जिसकी जन्मकुण्डलीमें लग्नेश ग्रह तो हो नवम घर में और दशमेश ग्रह हो लग्न में तब उस राजाकी सेना के चीत्कार मारते हाथी घोड़ों के बच्चों के पावों से आक्रमण की भूमि थहराने लगती है ॥९८॥

यदा राज्यस्वामी नवमसुतकेन्द्रेऽर्थभवने बलाक्रान्तो यस्य प्रभवति स वीरो नरवरः। सदा काव्यालापी नवमणिकलापी बहुबली तुरंगालीदन्ता बलकलभगन्ता घनपतिः ॥९९॥

जिस पुरुषके जन्मकाल में राज्यका स्वामी ग्रह नवम पंचम केन्द्र १।४।७।१० अथवा द्वितीय घर में बलवान् होकर बैठाहो तो काव्योंका ज्ञाता नवीन मणियोंका धारण करने वाला बड़ा बलवान् वो पुरुष घोड़ों की पंक्ति और हाथियों के बच्चों के साथ गमन करने वाला और अनेक प्रकार धनोंका पति होता है ॥९९॥

यदा कर्मस्वामी सुतभवनगामी शुभयुतः सुतेशः कोदंडे भवति भविनो यस्य जनने। भयातीतो भोगी भवति चिरजीवी बहुगुणी मतङ्गालीग-न्तारिघुनिकरहन्ता नरपतिः ॥१००॥

जिस पुरुषके जन्मसमय में दशम घर का स्वामी ग्रह तो शुभग्रहके साथ पंचम घरमें बैठा हो और पंचम घर का स्वामी ग्रह बलवान होकर धन राशि में बठा हो तब वो पुरुष निर्भय होकर अनेक भोगों का भोगने वाला दीर्घायु अनेक गुणोंसे संपन्न मतङ्गोंकी पंक्तिको साथ लेकर चलने वाला शत्रुजनोंका हंता राजा होता है ॥१००॥

धनागारस्वामी भवति यदि पारावतपदे विशालं भूपालं कलयति नृवालं बहुबलम्।

अरातीभब्रातांकुशमनिशमानन्दनिरतं नितान्ते श्रीमन्तं विविधधनदानोद्यतमलम् ।१०१॥

जिसकी कुण्डली में द्वितीय भवन का स्वामी ग्रह पारावत पदमें स्थित हो तब यह योग उस राजकुमार को भूमिका पालन करने वाला बड़ा बली शत्रुरूप हाथियों को अंकुश की तरह दमन करने वाला निरंतर आनन्द से रहने वाला बड़ा श्रीमान् और अनेक प्रकार धनदान करने वाला करता है ॥१०१॥

देवपूज्यलवगो निशाकरात्पुरुषराशिपतिरिंदुकांतिभाक् । गोगजव्रजतुरङ्गमण्डलीमण्डितो-मणिगणैरिलापतिः ॥१०२॥

जिस मनुष्य का चंद्रमा से नवम भवन का स्वामी ग्रह बृहस्पतिके नवांशमें बैठा हो और वह चंद्रमा षोडश कला से परिपूर्ण हो तब वो पुरुष गऊ, हाथी और घोड़ों की मंडलीसे मंडित भूमिपति होता है ॥१०२॥

अथ कुबेरसमराजयोगः

यदा माने याने भवति मदने वासवगुरौ स्वतुङ्गे वा पंकेरुहनिकरबन्धावपि भृशम् । भयत्राता

दाता निगमविहिताचारचतुरो गुणव्रातैर्नम्रो धनपतिसमानो विजयते ॥१०३॥

जिस मनुष्य के जन्म समय में दशम भवन में या चतुर्थ घरमें अथवा सप्तम घरमें बृहस्पति अपने उच्चके चंद्रमा को साथ लेकर बैठा हो तब वह मनुष्य भयसे रक्षा करनेवाला वेदाविहित अपने सदाचारका करने वाला गुण समूहों से युक्त बड़ा नम्र होकर कुबेरके तुल्य ऐश्वर्य वाला सर्वत्र विजय करने वाला राजा होता है॥ १०३ ॥

एतेषु योगेषु नरो नृपालो भवेदलं नीचकुलप्रजातः। नृपालबालोऽपि च वक्ष्यमाणैः सुयोगजातैरिति संप्रवक्ष्ये ॥१०४॥

कहे हुए इन योगों से नीच कुलोत्पन्न भी मनुष्य राजकुल में जन्म लेने वाला होता है और राज कुलोत्पन्न मनुष्य जिन योगों से राजा होता है उन योगों को हम अगाड़ी कहते हैं॥ १०४ ॥

अथ राजयोग विवरणम्।

मृगे विलग्ने रविजे कुलीरे दिवाकरे चंद्रयुते प्रसूतौ। कुजे यदा ये भृगुजेऽष्टमस्थे भवेन्नृपाजो नृपवंशजातः ॥१०५॥

जिस राजकुमार की जन्मकुण्डली में जन्म लग्न तो मकर हो कर्क राशि का शनि हो चन्द्रमा सूर्य दोनों एकत्र हों ग्यारहवें घर में मङ्गल और अष्टम भवनमें शुक्र बैठा हो तब वह राजा का वंशजात मनुष्य पति होता है ॥१०५॥

यदा कवीज्यौ भवतश्चतुर्थे नृपालबालोऽपि च भूमिपालः। कुलीरगो देवगुरुः सचन्द्रो नृपाल बालं प्रकरोति बालम् ॥१०६॥

और जिस राजकुमार के लग्नसे चौथे घरमें बृहस्पति शुक्र दोनों बैठे हों तो राजा होता है अथवा चंद्रमा सहित बृहस्पति कर्कराशि में बैठा हो तब भी राजकुमारको राज्य पदकी प्राप्ति करता है ॥ १०६ ॥

यदेन्द्रमंत्री बिधुजं प्रपश्येद्गुणज्ञविज्ञं नृपतिं करोति। प्रसूति काले यदि पंचराशौ चैको-ऽपि बालंकुरुते नृपालम् ॥१०७॥

जो बृहस्पति चंद्रमाको देखता हो अथवा पंचम भवन में कोई एकभी ग्रह बली होकर बैठा हो तब भी उस राज-कुमार को पद प्राप्त होता है ॥ १०७ ॥

हितलवे तपनो विधुनेक्षितो नृपसुतं कुरुते च

नृपोत्तमम्। विधुसुतः सविधु कुरुते नृपं भवत्तुंगगतो यदि जन्मनि ॥१०८॥

जिस राजकुमार की कुण्डली में चंद्रमा से दृष्ट सूर्य अपने मित्र के घर में बैठा हो अथवा चन्द्रमा सहित बुध अपने उच्चका होकर बैठा हो तब भी राजकुमार को राज्य पद देता है ॥ १०८ ॥

जनुषि लग्नगतो यदि लग्नपो बलयुतः किल कण्टकगोऽपि वा। अविरतं प्रकरोति तदा नृपजमेव न चित्रमिति स्फुटम् ॥१०९॥

यदि जन्म समय में बलवान होकर लग्न का स्वामी अह लग्नमें अथवा केन्द्रमें अर्थात् लग्न चतुर्थ दशम भवन में बैठा हो तब वह राजकुमार राज्य पद प्राप्त करे यह स्पष्ट है इसमें कुछ आश्चर्य की बात नहीं है ॥१०९॥

अथ द्रविड़केरलदेशोद्भावानां राजपुत्राणां राजयोगः।

रविरजे शनिना बलिना युतो भवति भूमिपतिं कुरुते शिशुम्। द्रविड़केरलदेश समुद्भवं कृति वरं च परत्र धनेश्वरम् ॥११०॥

जिसके बलवान् शनि से युक्त सूर्य यदि मेष राशिका होकर बैठा हो तब वो द्रविड़ केरल देश के जन्मे राजकुमार को कृति जनोंमें श्रेष्ठ शत्रु जनों के धनका स्वामी भूमि मण्डल का पालन करने वाला राजा करता है ११०

अथ राजपुत्राणां राजयोगस्तथान्यजनानां धानधीशयोगः ।

गुरुकवी यदि तुंगगताविमौ जनुषि कंटककोणगृहाश्रितौ । नृपकुले कुरुते नृपमन्यथा द्रविडपं परितो भवतो नरम् ॥१११॥

जिसके जन्म समय में अपने अपने उच्च के होकर वृहस्पति और शुक्र दोनों लग्न चतुर्थ सप्तम दशम और पञ्चम नवम इनमें से किसी घर में बैठे हों तब ये राजकुलोत्पन्न को राजा और राजकुल से अन्य पुरुष को धनाधीश करते हैं ॥ १११ ॥

अथ छत्रयोगः ।

प्रसूतिकाले यदि सर्वखेटास्तनुव्ययागार्थगृहस्थिताश्चेत् । पुरातनात्पुण्यत एव पुसां श्री छत्रयोगं प्रवदन्ति सन्तः ॥११२॥

जिस पुरुषके जन्म समयमें लग्न द्वादश सप्तम द्वितीय

इन्हीं चार घरोंमें सब ग्रह बैठेहों इसे सज्जन (विद्वान्)लोग छत्रयोग कहते हैं ये पुरातन (पहिले) पुण्यसे होते हैं ११२

अथान्यराजपुत्राणां राजयोगः

यदा जीवो लग्ने मकरमपहाय प्रवसति तदालं भूपालं नृपतिकुलबालं जनयति। भवत्येवं चन्द्रो जनुषि तनुरङ्गं च कलया परिक्रान्तः केन्द्रे नरपतिसुतं भूपतिपरम् ॥११३॥

जो अपनी नीच राशि मकर को छोड़कर बृहस्पति जिसके लग्नमें बैठा हो तब उस राजकुमारको राज्यपद देता है इसीप्रकार अपने नीच टको छोड़कर पूर्ण चंद्रमा लग्न चतुर्थ सप्तम दशम इनमें से किसी स्थान में बैठा हो तबभी राजकुमारको राज्यासन प्राप्ति कराता है ॥११३॥

सुखागारस्वामी भवति नवमे वाथ दशमे सुखे वा लग्ने वा हिबुकगतो वा शुभखगैः। युतो दृष्टो दन्ता बलतुरगयानेन नितरां जनानामागारं कनकमणिसङ्घैः परिवृत्तम् ॥११४॥

जिसका चौथे घर का स्वामी नवें दशवें घर में या चौथे ही घरमें अथवा लग्न में वा अपने मित्रके नवांशका

होकर बैठाहो और उसे शुभग्रह कोई देखते हों या समीप बैठे हों तब उस मनुष्यके घरको हाथी घोड़ों की सवारियों से और सुवर्ण और मणियोंके समूहोंसे आच्छादित (व्याप्त) करता है ॥११४॥

पंचमे भवति कर्मभावपे कांतिभाजि गजवा-
जिजंसुखम् । सर्वतोऽस्य विधुता ततो भवेदा-
दिगंतमतुला यशोलता ॥११५॥

जिसकी कुण्डली में उदय हुआ दशम घरका स्वामी पंचम घरमें हो तब उस मनुष्य को हाथी घोड़ों के सुखको करता है और उस पुरुष की यशोलता आदिगंत (दिशों की समाप्ति तक) फैलती है और उस पुरुषका सर्व भूमि मंडलमें चंद्रवत् प्रकाश होता है ॥११५॥

अथ चन्द्रयोगः ।

भवति चंद्रमसो दशमाधिपो जनुषि केन्द्रनव-
द्विसुतोपगः । अतिविचित्रमणिव्रजमंडितो
वसुमतौ वसुभूषणसंयुतः ॥११६॥

जिस पुरुष के जन्म समयमें चंद्रमासे दशम भवनका स्वामी ग्रहलग्न चतुर्थ सप्तम दशम नवम द्वितीय और पंचम

घरोंमें से किसी घरमें बैठा हो तो उस पुरुषको अति विचित्र मणि समुदायोंसे सुभूषित और अनेक धन आभूषणों से परिपूर्ण करता है ॥ १६ ॥

चन्द्रक्रांतभयः सुखालयगतो दंतावलानां सुखं मुक्तास्वर्णमणिव्रजामलयशः पुंजं विचित्रालयम्। भृत्यापत्यकलत्रमित्रपटली विद्याविनोदं तथा पुण्यं सन्ततुतै मुदं नरपतेरर्थं नराणामिह ॥१६॥

जिसकी जन्म कुण्डली में चन्द्रकांत राशि का स्वामी ग्रह अर्थात् कुण्डलीमें जिस घरमें चन्द्रमा हो उस घर में राशि है उस राशि का जो स्वामी ग्रह है वह ग्रह चौथे घर में बैठा हो यह योग मनुष्योंको हाथियों की सवारी के सुख को सुवर्ण, मोती, मणियों के समुदाय को, निर्मल यश के पुंज को चित्र. मणि मय महल मन्दिरों के भृत्य, सन्तान, स्त्री और मित्रोंके सुखको विद्याके आनन्दको और अत्यन्त आनन्दको देनेवाला होता है ॥ १७ ॥

अथानफादियोगः।

व्ययगतैरनफा रविवर्जितैर्धनगतैः खचरैः स्व-

नफा विधोः। उभयतोऽपि गतैरुदिता नृणां दुरुधरा मधुराशन भोगदा ॥१८॥

सूर्य के विना जिसके चन्द्राधिष्ठित लग्नसे बारहवें घर में सब ग्रह हों तब अनफा नाम योग होता है और यदि चन्द्रमासे द्वितीय घरमें ही सकल ग्रह हों तब स्वनफा नाम योग होता है।

और जिसकी जन्मकुण्डलीमें चन्द्रमासे दोनों तरफ अर्थात् द्वितीय द्वादश घरमें ही सूर्यवर्जित सब ग्रह हों तब दुरुधारा योग होता है ये दुर्धरा योग मधुर भोजन देता है।

अथानफायोगफ०।

जनिमतामनफा कुरुतेतरां गुणवतीं रतिवर्धनीम्। नृपसभापटुतामलं यशो वरपशोरपि सौख्यकरं परम् ॥१९॥

जिस मनुष्यकी कुण्डलीमें अनफानाम योग होता है उस मनुष्यको सकल गुणवती रति बढ़ाने वाली पत्नी, राजसभामें चतुराई निर्मल यश और उत्तम हाथी, घोड़ा, गाय भैंसों के सुख प्राप्त होते हैं ॥ १९ ॥

अथ स्वनफायोगफलम् ।

भुजबलेन रमापरमालयं जनिमतां गरिमा स्वनफा यदा । अबलयामलया नवयानभूवि-भुतयाद्भुतया परमं सुखम् ॥ १२० ॥

जिस मनुष्य की कुण्डली में स्वनफा नाम योग होता है वो अपने भुजों के बल से लक्ष्मी से परिपूर्ण अपने मन्दिर को संपादन करता है और जन्म लेने वाले मनुष्यों में गुरुत्व (श्रेष्ठत्व) को, उत्तमोत्तमा निर्दोष पत्नी को, नवीन अनेक प्रकार अद्भुत सवारियों की और भूमि की विभुता (स्वामित्व) से परम सुख को प्राप्त होता है ॥१२०॥

अथ दुरुधरायोगफलम् ।

दुरुधरा बहुधा बसुधावसुव्रजसुवारणवाजिसुखं नृणाम् । वि तनुते नृपतेरतुलं यशो गुणकला-पपटुत्वमिहाद्भुतम् ॥ २१ ॥

दुरुधरानाम योग मनुष्य को अनेक प्रकार भूमि, धन संपत्ति का समुदाय, उत्तम हाथी, घोड़ों का सुख, राजद्वार से अतुल यश और गुण कला के अद्भुत चातुर्य को देता है ॥ २१ ॥

अथ केमद्रुमयोगः ।

न धने न व्यये खेटाश्चन्द्रादिह भवन्ति चेत् ।
तदा केमद्रमं प्राहुः पण्डिता मिहिरादयः ।२२

जिस मनुष्य की कुण्डली में चन्द्राधिष्ठित स्थान से द्वितीय भवन में और बारहवें घर में कोई भी ग्रह नहीं बैठा हो तब इसको मिहिरादि ज्योतिषाचार्य केमद्रुम नाम योग कहते हैं ॥ २२ ॥

अथ केमद्रुमयोगफलम् ।

केमद्रुमे सुरपतेरपिनन्दनोऽयं देशान्तरं व्रजति पुत्रकलत्रहीनः । धर्मच्युतो विकलितोगदसंघभीतो नानाधितापसहितो महितोषहीनः।२३।

जिसकी जन्म कुण्डली में केमद्रुम नाम योग होता है वह पुरुष यदि इन्द्र का भी पुत्र हो तब भी पुत्र कलत्र से रहित होकर देश को छोड़कर देशांतरों का घूमने वाला स्वधर्म से भ्रष्ट होकर विकलता से युक्त रोगों के समुदाय से भयभीत अनेक मानसी व्यथा से पीडित अनेक तापों से युक्त होकर भूमि और सन्तोष से रहित हुआ सर्वत्र भ्रमण करने वाला होता है ॥ २३ ॥

अथ केमद्रुमयोगभङ्गः ।

शुक्रेज्यसौम्यसहितोऽपि च कंटकस्थो चा पूर्ण-बिम्ब इह यस्य भवेन्मृङ्गाकः । केन्द्राणि खेच-रयुतानि तदानराणां केमद्रुमोद्भवफलं विफ-लत्वमीयात् ॥ २४ ॥

जिसके जन्म समय में शुक्र, बृहस्पति या बुध के साथ पूर्ण चन्द्रमा लग्न चतुर्थ, सप्तम, दशम में से किसी घर में बैठा हो अथवा चारों केन्द्रों में ग्रह बैठे हों तब मनुष्यों का केमद्रुम योग यदि हो तब भी निष्फल होजाताहै॥१४

अथ हृदयोगः

जनुषि नीचगताः सकलाग्रहा यदि भवन्ति तदा हृदसंज्ञकः । हृदभवोविकलो विभवोनितो रिपुहतो नितरां शठतायुतः ॥ २५ ॥

जिसकी जन्मकुण्डली में सब ग्रह नीचे के ही होकर बैठे हों तब इसको हृदयोग कहते हैं हृदयोग वाला मनुष्य विभव से हीन बैरी से ताडित अति विकल होकर निरन्तर शठता से युक्त पुरुष होता है ॥ २५ ॥

अथ फणियोगः ।

घटगते तपने क्रियगे शनावलिगते च विधौ

निजनीचभे । भृगुसुते जनने फणिसंज्ञको विकलितं कुरुते नरपुंगवम् ॥ २६ ॥

जिसकी जन्म कुण्डली में कुम्भका सूर्य,मेष का शनि, वृश्चिक का चन्द्रमा और नीच का शुक्र बैठा होवे तब फणिनाम योग होता है यह योग मनुष्य को सब समय विकल करता है ॥ २६ ॥

अथ काकयोगः ।

अजगते भृगुजे रविजे जनुर्वृषभगे दिनपेऽनिमिषे विधौ । अवनिजे यदि कर्कटगेहगे भवति काकभवोविभवोनितः ॥ २७ ॥

जिसकी कुण्डली में मेष का शुक्र,लग्न में शनि, वृष राशि का सूर्य,मीन का चन्द्रमा और कर्क राशि का होकर मंगल बैठा हो तब काकभव नाम योग होता है इस योग के होने से मनुष्य सकल विभवों से हीन होता है ॥२७॥

अथ दरिद्रयोगः ।

विधुयुतो घटभे दिवसाधिपो गुरुमहीजकवीनसुतः पुनः । यदि भवन्तिच नीचगता जनुर्व्रजति राजसुतोऽपि दरिद्रताम् ॥ २८ ॥

जिसकी कुण्डली में चन्द्रमा सहित सूर्य कुम्भ राशि का होकर बैठा हो और बृहस्पति, मंगल, शुक्र और शनि ये चारों ग्रह अपने अपने नीच के होकर बैठे हों इस योग के होने से यदि राजकुमार भी हो तब भी वह दरिद्र भाव को प्राप्त होता है ॥ २८ ॥

अथ हुताशनयोगः ।

शनिमहीजनिशाकरचन्द्रजा यदि जनुः किल नीचसुपाश्रिताः । मकरभेभृगुजोऽपि हुताशनः परमतापकरो न करोति शम् ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यकी जन्म कुण्डलीमें शनि, मंगल, चन्द्रमा और बुध ये चारों ग्रह तो नीच के होकर बैठे हों और मकर राशि का होकर शुक्र बैठा हो तब ये हुताशन (अनल) नाम योग होता है इस योग से मनुष्य सब समय अग्नि के ताप की तरह तप्त रहता है कभी उसको शान्ति नहीं होती है ॥ २९ ॥

अथ राजयोगभङ्गयोगः ।

यदि भवन्ति नवायदशाधिपा जनुषि नीचगता विकला भृशम् । नृपतियोगजमङ्गभृतां फलं परिणयत्यपि निष्फलतामिह ॥ ३० ॥

जिसकी कुण्डली में नवे ग्यारहवें और दशवें घरके स्वामी तीनों ग्रह अपने नीच के होकर बैठे हों और अस्त आदि दोषसे वह पीड़ितहो तब ये राजयोग से उत्पन्न हुये शुभ फलकी निवृत्ति करने वाले होते हैं ॥३०॥

अन्यच्च

रितुमन्दिरगैरेव वैरिभावगतैरपि ।
राजयोगा विनश्यन्ति दिवाकरकरोपगैः॥३१॥

यदि राजयोग कारक ग्रह अपने शत्रुके घरके होकर बैठे हों अथवा लग्न से छटे घर में स्थित हो अथवा अस्त होकर बैठेहों तबभी वह राजयोगको निवृत्तकर देतेहैं ॥३१॥

अन्यच्च

भवति वीक्षणवर्जितमंगिनां जननलग्ननिहाम्बर गामिनाम् जननभं च नृपालभवो नरो जगति याति तरामतिरंकताम् ॥३२॥

जिस मनुष्य की जन्मराशि और जन्म लग्न को कोई भी शुभग्रह नहीं देखता हो तब वो मनुष्य रराजयोग से युक्त होवे तब भी रङ्कता (निर्धनत्व) को प्राप्त होता है ।३२॥

अन्यच्च ।

भद्रायां व्यतिपाते वा तथा केतूदये जनिः ।
यस्य तस्य विनश्यन्ति राजयोगफलान्यपि ३३

जिस मनुष्यका भद्रामें व्यतिपातमें और केतूदयसमये जन्म हो उस मनुष्यके राजके फल नष्ट हो जाते हैं ॥३३॥

अन्यच्च ।

परमनीचलवे यदि चन्द्रमा भवति जन्मनि तस्य विशेषतः । नृपतियोगफलं विफलं ततः कलयतीति वदन्ति मुनीश्वराः ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें चन्द्रमा परमनीचांशका होकर बैठा हो तब मुनिजन कहते हैं कि उस मनुष्यके राजयोगका फल निष्फल होजाता है ॥ ३४ ॥

इति भावकुतूहले चतुर्वेदमथुरास्थवनमालिचिरचिते भाषानुवादेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ सामुद्रिकविचाराध्यायः ॥८॥

जनने प्रबलो यस्य राजयोगो भवेद्यदि ।
करेवा चरणेऽवश्यं राजचिह्नं प्रजायते ॥३५॥

अनामा मूलगा रेखा सैव पुण्याभिधा मता।
मध्यमांगुलिमारभ्य मणिबाधांन्तमागता ३६

अथोर्ध्वदेशेरेखाफलम् ।

सोर्ध्वरेखा विशेषेण राज्य लाभकरी भवेत् ।
खंडिता दुष्टफलदा क्षीणा क्षीणफलप्रदा ३७

जिसकी जन्म कुण्डलीमें यदि कोई प्रबल राजयोग होगा तब उस मनुष्यके हाथ पांव आदि अंगमें अवश्य कोई एक न एक चिन्ह होगा ॥ ३५ ॥ अनामिका उंगली की जड़में जो रेखा होती है उसे पुण्यनाम रेखा कहते हैं और जो मध्यमा (विचली) उंगली के नीचे से लेकर पोंहचे के समीपतक खड़ी रेखा होती है उसे ऊर्ध्वरेखा कहतेहैं यह ऊर्ध्वरेखा विशेषकर राज्य लाभ कराती है और यह रेखा यदि खण्डिता हो तब दुःखोंको देती है और यह रेखा क्षीणा (पतली) (वा अपूर्णा) हो तब ये रेखा क्षीणफलको देती है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

अथ यवाकारचिन्हफलम् ।

अंगुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य विराजते चारु यवो यशस्वी । स्ववंशभूषासहितो विभूषा योषाज-नैरर्थगणैश्चमर्त्यः ॥ ३७ ॥

जिस मनुष्य के अंगूठे के मध्य में यव का चिह्न है तो मनुष्य बड़ा यशस्वी स्ववंशका भूषण और अनेक भूषण स्त्री भृत्यगण और अनेक प्रकार द्रव्यों से वो पुरुष संयुक्त होता है ॥ ३८ ॥

अथ राजचिह्नम्

वैसारणो वातपवारणो वा चेद्वारणो दक्षिण पाणिमध्ये । सरोवरं चाङ्कुशएन यस्य बीणा च राजा भुवि जायते सः ॥ ३९ ॥

जिसके दक्षिण हस्त में मछली, छत्र अथवा हाथी, तलाव, अंकुश, बीणा इनमें से कोई चिह्न हो वो मनुष्य भूमिपति राजा होता है ॥ ३९ ॥

मुशलशैलकृपाणहलांकितं करतलं किल यस्य स वित्तपः । कुसुममालिकया फलमीदृशं नृपतिरेवनृपाल भुवो यदा ॥ १४० ॥

जिसके हाथ में मुशल, पर्वत, खंग, हल और पुष्पमाला इनमें से कोई सा चिन्ह हो तब वो मनुष्य धनवान् होता है और वे योग यदि किसी राजकुमार के होवे तो वो अवश्य राजा ही होता है ॥ ४० ॥

अथ लक्ष्मीप्राप्तिचिन्हम्।

करतलेऽपि च पादतले नृणां तुरगपंकजचा-
परथांगवत । ध्वजरथासनदोलिकया समं
भवति लक्ष्म रमापरमालये ॥ ४१ ॥

जिस मनुष्य के हाथ में या पांव में घोड़ा, कमल, धनुष्य, चक्र, ध्वज, रथ, आसन और डोली, इनमेंसे कोई चिन्ह हो तो उस पुरुषके घरमें पूर्ण लक्ष्मी होती है॥४१॥

अथ खंडलक्ष्मीचिन्हम्।

कुम्भःस्तम्भोवातुरंगो मृदङ्गः पाणावंघ्रौ वा
द्रुमो यस्य पुंसः । चञ्चद्दण्डोऽखण्डलक्ष्म्या
परीतः किंवासोऽयं पण्डितःशौंडिकोवा॥४२॥

घड़ा, खम्भ, घोड़ा, मृदङ्ग, वृक्ष और दंड, इनमें से कोई चिन्ह जिस मनुष्यकी पगतली या हस्ततली में होता है वो पंडित हो अथवा मद्य बेचने वाला हो कोई हो पर अखण्ड लक्ष्मी से युक्त वो पुरुष होता है॥ ४२ ॥

अथोत्तमराजचिन्हम्।

विशाल भालोम्बुजपत्रनेत्रः सुवृत्तमौलिः क्षिति
मंडलेशः॥ आजानुबाहुः पुरुषं तमाहुः क्षौणी

भृतां मुख्यतरं महान्तः ॥४३॥ नाभिर्गभी-रासरला च नासा वक्षःस्थलं रत्नशिलातला-भम्। आरक्तवर्णौ खलुयस्य पादौमृदू भवेतांस नृपोत्तमः स्यात् ॥ ४४ ॥

जिसका ललाट विशाल हो कमल दल से नेत्र हों सुन्दर गोल शिर के जानुपर्यंत लंबित भुजा हो वह पुरुष को भूमंडल का पालन करने वाला राजाओं में मुख्य राजा होता है ॥४३॥ और जिसकी नाभि गंभीर हो, सूधी नासा हो, रत्नशिला के समान जिसका वक्षःस्थल हो, अरुण रंग जिसकी पावोंकी पगतली और कोमल दोनों पांव हों वो पुरुष नृपोत्तम होता है ॥४४॥

अथ करे वा पादतले तिल लक्षणम् ।

राजते करगो यस्य तिलोऽतुलधनप्रदः ।
तथापादतले पुंसां वाहनार्थसुखप्रदः ॥४५॥
राजवंशप्रजातानां समस्तफलमीदृशम् ।
अन्येषामल्पतांयाति तथाव्यक्तंसुलक्षणम् ४६

जिसके हथेली में तिल होता है वो असंख्य धन का धनी होता है और जिसकी दहिनी पगतलीमें तिल होता

है वो पुरुष अनेक उत्तमोत्तम सवारियों का सुख भोगता है ॥४५॥ उक्त समस्त लक्षणोंसे यदि राजकुलोत्पन्न हो तब तो ये समस्त फल ऐसे ही होते हैं जैसे कि कहा है और अन्य किसी पुरुषके उक्त लक्षणोंमें से कोई लक्षण हो तब कहे फलसे कुछ न्यून फल होता है ॥४६॥

इति भावकुतूहले चतुर्वेदमथुरास्थवनमालिनिर्मिते भाषानुवादेऽष्टमोऽध्यायः । ८ ॥

अथ स्त्रीजातकाध्यायः ॥ ४९ ॥

अथाग्रे स्त्रीणांलक्षणानां कालनिर्णयः ।

शुभाशुभं पूर्वजनेर्विपाकात्सीमन्तिनीनामपि तत्फलं हि ॥ विवाहकालात्परतैःप्रवीणैरसम्भवात्तत्पतिषु प्रकल्पम् ॥ ४७ ॥ अतीव सारं फलमङ्गनानामुदीरितं शौनकनारदाद्यैः । व्यक्तं यथा लग्ननिशाकराभ्यां मया तथैव प्रतिपाद्यतेतत् ॥ ४८ ॥

जितने उक्तानुक्त लक्षण हैं वो समग्र पूर्वजन्मके कीने कर्मोंके फलरूप होते हैं स्त्री जनोंको भी वैसा ही समझना परन्तु विवाहकाल के पश्चात् उक्त फलोंको उसके पति को

कल्पना करने अर्थात् उक्त फल यदि स्त्रीमें न दीखें तो उसके पतिको वे सुखादि भोगफल प्राप्त होते हैं ॥ ४७ ॥ जो फल शौनक और नारदादि ऋषियों ने स्त्रियोंके लिये कहे हैं वो सत्य हैं इससे लग्नसे और चंद्रमासे जोजो फल स्त्रियों को होते हैं उन्हें मैंभी उसी तरह प्रतिपादन करताहूँ ॥४८॥

अथ स्त्रीणां सौभाग्यादिभावसंज्ञा ।

सौभाग्यंसप्तमस्थाने शरीरं लग्नचन्द्रयोः ।
वैधव्यं निधनस्थाने पुत्रे पुत्रं विचिन्तयेत् ४९

स्त्रीके सौभाग्य का सप्तम घरसे, लग्नसे, तथा चंद्रमासे स्त्रीके शरीरका लग्नसे अष्टम घरसे वैधव्य (विधवापन) का और लग्नसे पंचम घरसे स्त्री के पुत्र के होनेका विचार करना ॥ ४९ ॥

अथ सौभाग्यवती तथा दुष्टयोगाः ।

सौम्याभ्यां प्रवरा शुभत्रययुते जाया भवेद्भूपतेः शौम्येकेन प्रतिप्रिया मदनभे दुष्टे युते जन्मनि ॥ पापैकेन पुनर्विलोलनयना पापद्वयेनाधमा पापानां त्रितयेन सा परकुलं हत्वा पतिं गच्छति ॥ ५० ॥

जिस स्त्री की कुण्डली में लग्न से सप्तम घर को दो शुभग्रह देखते हों या दो शुभग्रह लग्नसे सप्तम घरमें बैठे हों तब वोस्त्री स्त्रियोंमें उत्तम होतीहै यदि तीन शुभग्रह सप्तम घरको देखते हों या बैठेहों तब वो स्त्री राजाकी रानी होती है और एक शुभग्रह सप्तम घरको देखता हो या बैठा हो तब वो स्त्री अपने पतिकी प्रिया होती है इसी तरह जिस स्त्रीके सप्तम घरको एक पापग्रह देखता हो या बैठा हो तब चंचल नेत्रों वाली दो पापग्रह सप्तम घर को देखते हों तब अत्यन्त अथवा (पुश्चली) और तीन पापग्रह जिसके सप्तम घरमें देखते हों या बैठे हों तब महादुष्टा वो स्त्री अपने पतिको मारकर परपुरुष के साथ मरण करने वाली होती है ॥ ५० ॥

अथान्यपुश्चल्यादियोगः ।

जनुकाले यस्यामदनभवने वासरमणिः पतिं त्यक्त्वा नूनं कुपितहृदया भूमितनये । अवश्यं वैधव्यं सपदि कमलाक्षी रविसुते जरां पापैर्दृष्टे निजपतिविरोधं व्रजति वा ॥५१॥

जिस स्त्री की कुण्डलीमें लग्न से सप्तम घरमें सूर्य हो

तब वह अपने पतिको परित्याग करनेवाली और सदा क्रोधसे युक्त होती है और जिसके सप्तम घरमें मंगल बैठा हो तब वह स्त्री अवश्य विधवा होती है और जिसके सप्तम घरमें शनि बैठा हो तब वह स्त्री शीघ्रही वृद्ध हो जाती है और जिसके सप्तम घरको पापग्रह देखते हों वह स्त्री अपने पतिसे विरोध करने वाली होती है ॥ ५१ ॥

अथ रूपगुणयुक्तपतिव्रतायोगः ।

यस्याः शशाङ्काज्जनिलग्नभे वा रामर्क्षगे सा प्रकृतिस्थिरा स्यात् । शुभेक्षिते रूपवती गुणज्ञा पतिक्रिया चारु विभूषणाढ्या ॥ ५२ ॥

जिस स्त्रीके लग्नमें अथवा लग्नसे तीसरे घरमें चंद्रमा हो वह स्त्री स्थिर स्वभाववाली होती है यदि चंद्रमाको शुभ ग्रह देखते हों तब वह स्त्री रूपवती बड़ी गुणज्ञा पतिकी सेवा करनेवाली और दिव्य आभूषणोंसे संपन्न होती है ॥५२॥

अथ नराकारकुरूपायोगः ।

यदाङ्गवन्द्रावसमे भवेतां तदा नराकारसमा कुरूपा । पापेक्षितौ पापयुतौ विशेषाद्गदातुरा रूपगुणैर्विहीना ॥ ५३ ॥

जिस स्त्री का लग्न और चंद्रमा विषम (ऊना) राशिके हों तब वह स्त्री कुरूपा और पुरुषके समान आकार-वाली होती है और जो लग्नको तथा चंद्रमाको पापग्रह देखते हों तब वह स्त्री विशेषकर रोगोंसे युक्त और रूप तथा शुभ गुणोंसे रहित होती है ॥ ५३ ॥

अथ स्त्रीणां राजयोगः ।

जनुः काले यस्या मदनसदने दानवगुरौ शुभाभ्यामाक्रान्ते गतवति तदा सा विधुमुखी। गजेन्द्राणां मुक्ताफलविमलमालावृतकुचा प्रियापत्युर्नित्यं प्रभवति शचीवन्नितिलके ५४ समाक्रान्ते लग्ने त्रिदशगुरुणा वाऽथ भृगुणा। बुधे कन्याराशौ मदनभवने भूमितनये। मृगे कर्के चन्द्रे सति भवति लावण्यतिलका तपो-रेखा योषा प्रभवति विशेषात् क्षितिपतेः ५५ शशांके कर्कस्थे भवति हि युवत्यां विधुसुते तनौजीवे मीने गवि भृगुसुते जन्मसमये। सह-स्राली मान्या जगति नृपकन्या गुणवती विशे-षादेषास्यान्नृपतिपतिका पुण्यलतिका ॥५६॥

तब वह अपने पति को परित्याग करने वाली और सदा क्रोध से युक्त होती है और जिसके सप्तम घर में मंगल बैठा हो तब वह स्त्री अवश्य विधवा होती है और जिसके सप्तम भवन में शनि बैठा हो तब वह स्त्री शीघ्र ही वृद्ध हो जाती है और जिसके सप्तम घर को पापग्रह देखते हों वह स्त्री अपने पति से विरोध करने वाली होती है ॥५१॥

अथ रूपगुणयुक्तपतिव्रतायोगः

यस्याः शशाङ्काजनिलग्नभे वा रामर्क्षगे सा कृतिस्थिरा स्यात्। शुभेक्षिते रूपवती गुणज्ञा पतिक्रिया चारु विभूषणाढ्या ॥ ५२ ॥

जिस स्त्री के लग्न में अथवा लग्न से तीसरे घर में चन्द्रमा हो वह स्त्री स्थिर स्वभाव वाली होती है यदि चंद्रमाको शुभ ग्रह देखते हों तब वह स्त्री रूपवती बड़ी गुणज्ञा पति की सेवा करने वाली और दिव्य आभूषणों से सम्पन्न होती है ॥ ५२ ॥

अथ नराकारकुरूपायोगः

यदाङ्गचन्द्रावसमे भवेतां तदा नराकारसमा कुरूपा। पापेक्षितौ पापयुतौ विशेषाद्रुगदातुरा रूपगुणैर्विहीना ॥ ५३ ॥

जिस स्त्री का लग्न और चन्द्रमा विषम (ऊना) राशि के हों तब वह स्त्री कुरूपा और पुरुष के समान आकार वाली होती है और जो लग्न को तथा चन्द्रमा को पापग्रह देखते हों तब वह स्त्री विशेष कर रोगों से युक्त और रूप तथा शुभ गुणों से रहित होती है ॥ ५३ ॥

अथ स्त्रीणां राजयोगः ।

जनुः काले यस्या मदनसदने दानवगुरौ शुभाभ्यामाक्रांते गतवति तदा सा विधुमुखी। गजेन्द्राणां मुक्ताफलविमलमालावृतकुचा प्रियापत्युर्नित्यं प्रभवति शचीवद्धितिलके ५४ समाक्रान्ते लग्ने त्रिदशगुरुणा वाऽथ भृगुणा। बुधे कन्याराशौ मदनभवने भूमितनये। मृगे कर्के चन्द्रे सति भवति लावण्यतिलका तपोरेखायोषा प्रभवति विशेषात् क्षितिपतेः॥५५॥ शशांके कर्कस्थे भवति हि युवत्यां विधुसुते तनौजीवे मीने गवि भृगुसुते जन्मसमये। सहस्राली मान्या जगति नृपकन्या गुणवती विशेषादेषास्यान्नृपतिपतिका पुण्यलतिका५६

जिस स्त्री के जन्म समय में लग्न से सप्तम घरमें दो शुभ ग्रहों के साथ शुक्र बैठा हो तब वह स्त्री चन्द्र के तुल्य मुख वाली और गजमुक्तों की मालाओं से आच्छादित स्तन वाली होती है, और जिसके नेत्र में तिल का चिन्ह होता है वह स्त्री अपने पति को शची (इन्द्राणी) के समान प्यारी होती है ॥ ५४ ॥

और जिस स्त्री की कुण्डली में लग्न में बृहस्पति बैठा हो अथवा शुक्र बैठा हो कन्या राशिका बुध, लग्न से सप्तम घर में बैठा हो मकर का मङ्गल बैठा हो और कर्क का होकर चन्द्रमा बैठा हो वह स्त्री लावण्यों में शिरोमणि अति तपस्विनी और राजराणी होती है ॥५५॥ जिस स्त्री के जन्म समय में कर्कराशि का होकर चन्द्रमा, कन्याराशि का होकर बुध, लग्न में मीन राशि का होकर बृहस्पति और वृषराशि का होकर शुक्र बैठा हो इस योग के होने से वह स्त्री एक हजार सखियों में मान (सत्कार) पाने वाली राज कुल में जन्म लेने वाली सद्गुणों से संम्पन्न लता की तरह पुण्य कर्म सम्पादन करने वाली और विशेषकर राजा की राणी होती है ॥ ५६ ॥

अथ स्त्रीणांसप्तमभावेप्रत्येकग्रहफलम् ।

तत्रादौसप्तमस्थरावफलम् ।

दिनपतावि॒ह कामनिकेतनं गतवति प्रवराप्य-

वरा भवेत् । जनुषि वल्लभभावविवर्जिता सुजनतारहिता वनिता भृशम् ॥ ५७ ॥

जिस स्त्री के नग्न से सप्तम घर में सूर्य वर्तमान हो वह स्त्री यदि उत्तम काल जन्मादि होने से उत्तमा भी हो तो भी अधम बरताव वाली होती है और पति से परस्पर स्नेह रहित होकर सुजनता (सलज्जता) से रहित अर्थात् लज्जादि गुणों से रहित होती है ॥ ५७ ॥

अथ सप्तमगतचन्द्रफलम् ।

वृषे राकानाथे भवति मदने जन्मसमये भवेद्देषा योषा विमलवसना चारुवदना । विनम्रा मुक्तालीवलीतकुचभारेण नितरां परा लीला-लक्ष्मी रतिपतिरमेव क्षितितले ॥ ५८ ॥

जिस स्त्री के सप्तम् घर में वृषराशि का होकर चन्द्रमा बैठा हो वो स्त्री उज्वल वस्त्रों की पहनने वाली मनोहर जिसका मुख बड़ी नम्रता से रहने वाली मोतियों की माला से आच्छादित स्तनों के भार से नम्र कटि वाली अनेक उत्तम लीला करने वाली लक्ष्मी अथवा साक्षात् रति के समान सुन्दर होती है ॥ ५८ ॥

अथ सप्तमभावगतभौम फलम्

अंगारके मदनमन्दिरमिन्दुभावं मन्दान्विते हरिभगे जननेऽङ्गनायाः । वैधव्यमेव नियतं कपटप्रबन्धाद्वारांगना भवति सैव वरांगनापि ॥ ५९ ॥

जिसके जन्म समयमें कर्कराशिका होकर मंगल सप्तम भवनमें बैठा हो अथवा शनिके साथ मंगल सिंहराशिका होकर सप्तम घरमें बैठा हो इन दोनों योगोंके होने से वो स्त्री अवश्य वैधव्य गुण युक्त होती है और अनेक कपट युक्त वरतावसे यदि उत्तम कुलोत्पन्ना हो तब भी अवश्य वेश्या हो जाती है ॥ ५९ ॥

अथ सप्तमस्थबुधफलम्

अनेकश्रीभर्ता भवति मखकर्ता च मदने बुधे तुंगे यस्या जनुषि खलु तस्याः पतिरिह। स्वयं वामा कामाकुलितहृदयामोदकलया परीता मुक्ताली रजतकनकाली मणिगणैः ॥६०॥

जिसके सप्तम घरमें बुध बैठा हो उस स्त्रीका पति अनेक प्रकार संपत्तियों धर्ता (धारण करने वाला) अनेक यज्ञोंका करने वाला होता है और वो स्त्री आप भी सब

समय विषयकी अभिलाषा करनेवाली सब समय आनंदित रहनेवाली और मोतियों की तथा सुवर्ण की माला और मणिनिर्मित आभूषणों से सम्पन्न होती है ॥ ६० ॥

अथ सप्तमस्थ गुरुफलम्

परिक्रान्ते यस्या मदनभवने देवगुरुणा गुणज्ञा धर्मज्ञा निजपतिपदाब्जं भजति सा। मणीनां मालाभिः कनकघटिताभिश्च शिरसा समाक्रान्ता कान्ता रतिपतिपताकेन शशिभे ॥६१॥

जिस स्त्रीकी जन्मकुण्डली में लग्न से सप्तम भवन में बृहस्पति स्थित हो वो स्त्री गुणों की जानने वाली धर्म की जाननेवाली अपने पतिके चरण कमलका सेवन करनेवाली सुवर्णघटित मालाओं को और मणि जटित मालाओं को कण्ठ में पहरनेवाली और अपने पतिको प्यारी कामदेवकी मूर्तिमती पताकाके तरह देखनेवाले पुरुषोंके मनमें कामोद्दीपन करनेवाली होती है ॥ ६१ ॥

अथ सप्तमस्थशुक्रफलम्

कवौ यस्या जन्मन्यपि मदनगे मीनभवने तदा कान्तो दान्तो रतिपतिकलाकौतुकपटुः। धनुर्धर्ता भर्ता स्वयमपि च संगीतरसिका विलोला पद्माक्षी वसनललिता भूषणवृता ॥६२॥

जिस स्त्री की कुण्डली में लग्न से सप्तम घर में शुक्र बैठा हो उस स्त्री का कामकला में अति प्रवीण इन्द्रियों का दमन करने वाला धनुर्धारी पति होता है और आप भी वो स्त्री सङ्गीत विद्या की रसिका अति चंचला कमल नयनी दिव्य वस्त्र और दिव्य भूषणों को धारण करने वाली होती है ॥ ६२ ॥

अथ सप्तमस्थशनिफलम् ।

मदनभावगते पनात्मजे पतिरतीवगदाकुलितो भवेत् । मलिनवेषधरो विबलो महान् जनुषि तुङ्गगते प्रवरो धनी ॥ ६३ ॥

जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में लग्न से सप्तम घर में शनि स्थित हो उस स्त्री का पति अनेक प्रकार रोगों से अति व्याकुल मलिन वेष धारण करने वाला और अति बलहीन होता है और जो कहीं शनि अपने उच्च का होकर सप्तम घर में बैठा हो तब उसका पती धनवान् और अत्यन्त प्रतिष्ठित होता है ॥ ६३ ॥

अथ सप्तमगतराहुफलम् ।

सप्तमे सिंहिकापुत्रे कुलदोषविवर्द्धिनी । नारीसुखपरित्यक्ता तुंगे स्वामिसुखान्विता ॥

जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में लग्न से सप्तम घर में

राहु बैठा हो वो स्त्री अपने कुल को दोष लगाने वाली सुख भोग से रहित होती है और जो कहीं राहु उच्च का होकर सप्तम घर में बैठा हो तब वो स्त्री सदा अपने पति के सुख से सम्पन्न होती है ॥६४॥

अथान्यदुष्कर्मयोगः ।

मिथस्तौशुक्रार्की यदि लवगतौ वीक्षणमितौ भवेतां वा लग्ने गुरुशनिलवेशुक्रभवने । अनंगै-रालीला कलितनररूपा भिरनिशं स्थिताभिः कान्ताभिः खलु मदनशान्ति व्रजति सा ६५

जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में शुक्र के नवांश में शनि और शनि के नवांश में शुक्र बैठा हो अथवा शुक्रको शनि और शनि को शुक्र देखता हो अथवा वृष या तुला तो लग्न हो उसमें गुरु का या शनि का जन्म समय में नवांश वर्तमान हो तब वो स्त्री कामदेव की लीलावाली पुरुषाकार धारण करनेवाली प्यारी स्त्रियों से निरन्तर युक्त होकर वो आप काम शान्ति को प्राप्त होती है यानी उस स्त्री को कभी काम बाधा नहीं होती है ॥६५॥

अथ मोहिनीरूपकारकयोगः ।

क्षपानाथेयस्यागतवतिकुलीरांगमथवामदागारं सारं सुरगुरुबुधाभ्यामपियुतम् । महान्तोऽपि

भ्रान्ताः कति कति मनोजाधिकतया पुरस्तां पश्यन्तो दधति परमानन्दलहरीम् ॥ ६६ ॥

जिसके जन्म समय में कर्क राशि का होकर चन्द्रमा लग्न में स्थितहो अथवा जिसका सप्तम घर बृहस्पति और बुध सहित मंगल से युक्त हो अर्थात् मंगल, बुध और बृहस्पति ये तीनों ग्रह सप्तम घर में बैठे हों उस स्त्री के रूपको देखकर भ्रान्त हुए पुरुष काम के आधिक्य होने से अपने मनमें परम आनन्दकी लहरी को प्राप्त होते हैं ६६

अथ सुभगायोगः।

मृगागारे सारे गतवति विसारं सुरगुरो कवौ वा पातालं तपनतनयेनापिमिलिते। जनुःकाले यस्याःकरिमुकुटमुक्ताफलमणिव्रजानां माला-भिर्वलितमुत वक्षोजयुगलम् ॥ ६७ ॥

जिस स्त्री के जन्म समयमें मकर राशि में मंगल बैठा हो बृहस्पति मीनका होकर बैठाहो और शनि संयुक्त शुक्र लग्न से चौथे घर में बैठा हो तब उस स्त्रीके वक्षोज (स्तन) युगल अनेक गजमुक्तों की माला से और अनेक प्रकार मणिमाला से संवलित (आच्छादित) होता है ॥६७॥

अथ स्त्रीणां वैधव्ययोगः।

निशाकरात् सप्तमभावसंस्था महीजमन्दाशु

दिवाकराश्चेत् । तनोरिभे जन्मनि नैधने वा दिशन्ति वैधव्यमलं मदेवा ॥६८॥

जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में, चन्द्रमा से सप्तम घरमें मंगल, शनि, राहु और सूर्य इनमें से कोई ग्रह बैठा हो अथवा सप्तम घर में लग्न में या छठे घरमें या अष्टम घरमें उक्त चारों ग्रहों में से कोई सा ग्रह बैठा हो तब वो ग्रह उसको अवश्य वैधव्य योग को देते हैं यानी वो स्त्री अवश्य विधवा होजाती है ॥६८॥

अथ स्वैरिणीयोगः ।

लग्नाधिपो वाऽथ मदालयेशो वर्गे गतः पाप नभश्चराणाम् । मदे तनौ वा खलखेटवर्गस्तदा कुलं मुंचति चंचलाक्षी ॥६९॥

जिस स्त्री का लग्नेश अथवा सप्तमेश पापग्रहों के षड्वर्ग का होकर बैठा हो अथवा सप्तम घर में तथा लग्न में पापग्रहों का जन्म समय में षड्वर्ग हो तब चंचल नेत्र वाली वो स्त्री अपने कुल को परित्याग करती है अर्थात् वेश्या हो जाती है ॥६९॥

अथ व्यभिचारिणीयोगः ।

पापान्तराले यदि लग्नचन्द्रौ स्यातां शुभालो-

कवनवर्जितौ तौ। अनंगलोला खलसंगमेन कुलद्वयं हन्ति तदा मृगाक्षी ॥७०॥

जिस स्त्री का जन्म लग्न और चन्द्रमा ये दोनों ही पापग्रहों के बीच में हों और उन दोनों को शुभग्रह देखते न हों तब वो स्त्री खल मनुष्यों के साथ में पड़कर काम-कला (विषय) में अति चंचला होकर अपने पिता और श्वसुर दोनों के कुल को भ्रष्ट करती है यानी पर पुरुष गामिनी होजाती है ॥७०॥

अथ पुंश्चलीयोगः।

व्ययेष्टमे भूमिसुतस्य राशावगौ सपापे भवती-हरण्डा। मदे कुलीरे सरवौ कुजेपि धनेन हीना रमतेऽन्यलोकैः ॥ ७१ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय में सप्तम घर में तथा बारहवें घर में दोनों घरों में मंगल की राशि विद्यमान हो अर्थात् सप्तम भवन में वृश्चिक और बारहवें घर में मेष राशि हो उसमें पापग्रह सहित राहु बैठा हो तब वो स्त्री रण्डा होती है और जो सप्तम घर में कर्क राशि के होकर सूर्य और मंगल बैठे हों तब वो स्त्री धन से हीन होने से अन्य लोगों से रमण करने वाली होती है ॥७१॥

तनौ चतुर्थे निधने व्यये वा मदालये पापयुतः कुजश्चेत् । अनङ्गलीलां प्रकरोति जारैः पतिं तिरस्कृत्य विलोलनेत्रा ॥७२॥

जिस स्त्री की कुण्डली में लग्न चतुर्थ अष्टम द्वादश या सप्तम घर में से किसी घर में पापग्रह सहित मंगल बैठा हो वो स्त्री अपने पति का तिरस्कार करके परपुरुषों के साथ रमण करने वाली होती है ॥७२॥

परस्परांशोपगतौ भवेतांमहीजशुक्रौ जननेऽङ्गनायाः । स्वयं मृगाक्षीत्यभिसारिकेव प्रयाति कामाकुलितान्यगेहे ॥७३॥

जिस स्त्री की कुंडली में शुक्र के नवांश में मंगल और मंगल के नवांश में शुक्र बैठा हो वो स्त्री आपही कामाकुलिता होकर अभिसारिका की तरह अन्य पुरुष के घर में जाने वाली होती है (अपने प्रिय के संकेत स्थान को शृंगार कर प्रतिज्ञात समय पर जाने वाली स्त्री को अभिसारिका कहते हैं) ॥७३॥

अथ पत्याज्ञया व्यभिचारिणीयोगः

पापग्रहे सप्तमगे बलोने शुभेन दृष्टे पतिसौख्य-

हीना । स्यातां मदे भौमकवी सचन्द्रौ पत्या-ज्ञया सा व्यभिचारिणी स्यात् ॥ ७४ ॥

जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में बलहीन पापग्रह सप्तम घर में स्थित हो और उसे कोई शुभग्रह देखते नहीं तब वो पति के सुख से रहित होती है, और जिसके सप्तम घर में चन्द्रमा सहित मंगल और शुक्र बैठे हों वो स्त्री अपने पतिकी आज्ञा से व्यभिचारिणी (परपुरुषगामिनी) होती है ॥७४॥

अथ सप्तमाष्टमेऽब्दे रण्डायोगः ।

पापग्रहे सप्तमलग्नगेहे भर्ता दिवं गच्छति सप्त-माब्दे ॥ निशाकरे चाष्टमबैरिभावे तदाष्टमाऽब्दे निधनं प्रयाति ॥ ७५ ॥

जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में सप्तम घर में और लग्न में पाप ग्रह हों उस स्त्री का भर्त्ता सप्तम वर्ष में स्वर्गगामा होता है, और यदि चन्द्रमा भी अष्टम घर में तथा छठे घर में बैठा हो तब उसका पति अष्टम वर्ष में मृत्यु पाता है ॥७५॥

अन्यच्च रण्डायोगः ।

सप्तमेशोऽष्टमे यस्याः सप्तमे निधनाधिपः ।
पापेक्षणयुतो बाला वैधव्यं लभते ध्रुवम् ॥७६॥

जिस स्त्री का सप्तम घर का स्वामी ग्रह तो अष्टम घर में बैठा हो और अष्टम घर का स्वामी ग्रह सप्तम घरमें बैठा हो और उन्हें पापग्रह देखता हो तब वो बालक अवस्था ही में बिधवा हो जाती है ॥ ७५ ॥

सप्तमाष्टपती षष्ठे व्यये वा पापपीडितौ ।
तदा वैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र संशयः॥७७॥

जिस स्त्री के सातवें आठवें घर के स्वामी दोनों ग्रह पापग्रह से पीड़ित (दृष्ट) होकर छठे घर में या बारहवें घरमें बैठेहों तब वो स्त्री अवश्य बिधवा हो जाती है ॥ ७७ ॥

अथ मात्रासह व्यभिचारिणीयोगः

मन्दारराशौ ससिते शशाङ्के खलेक्षिते लग्नमते मृगाक्षी ॥ मात्रा सहैव व्यभिचारिणी स्यान्मदे खलांवे व्रणविद्धयोनिः ॥ ७८ ॥

जिस स्त्री के कुण्डली में शनि मंगल की राशि में शुक्र सहित चन्द्रमा यदि लग्न में बैठा हो उसे पापग्रह देखता हो तब वो स्त्री अपनी माता सहित व्यभिचारिणी (परपुरुष गामिनी)होती है और जिसके सप्तम घरमें पापग्रह का नवांश होता है तब उस स्त्री की योनिपर घाव का चिह्न होताहै।७७।

अथ ग्रहराशिवशेन प्रत्येक त्रिंशांशफलानि ।

तत्रादौ कुजस्य राशेः ।

यदांगचन्द्रौ कुजभे कुजस्य त्रिंशांशके दुष्टतमैव कन्या । मन्दस्य दासी हि गुरोस्तु साध्वी मायाविनी ज्ञस्य कवेः कुवृत्ता ॥ ७९ ॥

जिस स्त्री की कुण्डली में लग्न में भी मंगल की राशि हो और चन्द्रमा भी मंगल की ही राशि का हो अथवा लग्न में भी मंगल का त्रिंशांश हो और चन्द्रमाभी मंगल के त्रिंशांश का हो तब वो कन्या अति दुष्ट होती है और शनि का त्रिंशांश हो तो दासी, बृहस्पति के त्रिंशांशके होने से पतिव्रता, बुद्ध के नवांश के होने से अनेक प्रकार छल संयुक्ता और शुक्र के त्रिंशांश के होने से खोटे बर्ताव वाली होती है ॥ ७० ॥

अथ शुक्रराशौ ।

शुक्रभे भौमत्रिंशांशे दुष्टासौरेः पुनर्भवा । गुरोर्गुणमयी विज्ञा बुधे कामातुरा कवेः ॥ ८० ॥

जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में लग्न और चंद्रमा दोनों शुक्रकी राशिमें मंगल के त्रिंशांश हो हों तब वह स्त्री अति-दुष्टा होती है और लग्नचंद्रमा दोनों शुक्र ही राशिमें शनिके

त्रिंशांशके हों तब वह स्त्री पुनर्भू अर्थात् कन्या अवस्था में प्रथम गर्भिणी होकर पश्चात् विवाह होने वाली होती हैं और लग्न चंद्रमा दोनों शुक्रकी राशिमें बृहस्पतिके त्रिंशांशके हों तब सकल शुभ गुणयुक्ता होती है और यदि लग्न और चंद्रमा दोनों शुक्रकी राशिमें बुधके त्रिंशांशके हों तब वह स्त्री बड़ी विज्ञा होती है और लग्न और चंद्रमा दोनों शुक्र की राशि में शुक्र के ही त्रिंशांश के हों तब वह स्त्री सदा कामातुरा होती है ॥ ८० ॥

अथ बुधराशौ ।

बुधभ भूमिपुत्रस्य कापटी क्लीबवच्छनेः ।
गुरोःसतीविदोविज्ञाकवेःकामातुराभवेत्॥८१॥

जो चंद्रमा लग्न बुधकी राशि में मंगलके त्रिंशांश के हों तब वह स्त्री कपट से युक्त होती है और शनिके त्रिंशांश के हों तब क्लीब (नपुंसक) के तुल्य होती है और बृहस्पति के त्रिंशांश के हों तो वह स्त्री पतिव्रता होती है और बुधके त्रिंशांशमें होनेसे वह स्त्री विशेष जानने वाली होती है और कवि (शुक्र)के त्रिंशांशके होनेसे स्त्री अति चतुरा होती है॥

अथ चंद्रराशौ ।

कुलीरभे भूमिसुतस्य वेश्या शनेः पतिप्राणवि-

घातकर्त्री । गुरोर्गुणव्रातवती बुधस्य शिल्प-क्रियाज्ञा कुलटा भृगोःस्यात् ॥ ८२ ॥

यदि लग्न और चंद्रमा दोनों कर्क राशि में मंगल के त्रिशांशा में बैठे हों तब वह स्त्री वेश्या हो जाती है और शनि के त्रिशांशा में हों तब वह स्त्री अपने पति के प्राणों का नाश करने वाली होती है यदि बृहस्पति के नवांशा में हों तब वह स्त्री सौभाग्यादि अनेक गुणों से युक्त होती है यदि बुध के नवांशा में हों तब वह स्त्री अनेक कारीगरी जानने वाली होती है और शुक्र के नवांशा में हों तब वह स्त्री कुल में डोलने वाली पुँश्चली होती है ॥८२॥

अथ सूर्यराशौ

सिंहे नराकारधरा कुजस्य वरांगना भानुसुत-स्यनारी । गुरोरिलाधीशवधूर्बुधस्य दुष्टा कवेरङ्ग जगामिनी स्यात् ॥ ८३ ॥

जिसकी कुण्डली में लग्न और चंद्रमा दोनों सिंह राशि में मंगल के त्रिशांशामें बैठे हों वह स्त्री पुरुषाकार रूप वाली होतीहै और शनिके त्रिशांशामें हो तब वह स्त्री वारांगना (वेश्या) होती है यदि बृहस्पति के त्रिशांसा में

हों तब वह स्त्री राजराणी और बुध के नवांश में हो तब दुष्टा और शुक्र के त्रिशांशा में लग्न चन्द्रमा के होने से स्त्री अपने पुत्र के भी साथ गमन करने वाली होती है अर्थात् सर्वगामिनी होती है ॥ ८३ ॥

अथ गुरुराशौ ।

गुरोर्विचित्रा गुरुभे कुजस्य मन्दस्य मन्दा गुणतत्वविज्ञा । जीवस्य विज्ञा शशिनन्दनस्य शुक्रस्य रम्यापि भवेदरम्या ॥ ८४ ॥

यदि चन्द्रमा और लग्न दोनों बृहस्पति की राशि (धनमीन) में मङ्गल के त्रिशाँशों में बैठे हों तब विचित्र सद्गुणों से सम्पन्ना शनि के त्रिशाँशा में हो तब अति मन्दा बृहस्पति के ही त्रिशाँशा में हों तब विशेष कर गुणतायों की जानने वाली, बुध के नवाँशा में हों तब सब बातों की जानने वाली और यदि शुक्र के नवाँशा में यदि लग्न और चन्द्रमा हों तब वह स्त्री यदि रम्य (सुन्दर) भी हो तब अरम्भा (कुरूपा) हो जाती है ॥ ८४ ॥

अथ शनिराशौ ।

मन्दालये भूमिसुतस्य दासी शनेरसाध्वी भवतीति साध्वी गुरोर्निशानाथसुतस्य दुष्टा शुक्रस्य वन्ध्या क्रमतः प्रदिष्टा ॥ ८५ ॥

जिस स्त्री के जन्म समय में लग्न और चन्द्रमा दोनों शनि की राशि १०। ११ में मङ्गल के त्रिशाँशा के होकर बैठे हों तब वह दासी अर्थात् चाकरी करने वाली, शनि के त्रिशाँशा में हों तो पर पुरुष गामिनी, बृहस्पति के त्रिशाँशा में हो तब पतिव्रता, बुध के नवाँशा में हों तो अत्यन्त दुष्टा और यदि शुक्र के नवाँशा में लग्न और चन्द्रमा दोनों हों तब वह स्त्री बंध्या होती है ॥ ८५ ॥

अथ पुरुषवत्तथा ब्रह्मवादिनीयोगः

मन्दे मध्यबले कवीन्दुशशिजैर्वीर्यच्युतैः प्रायशः
शेषैर्वीर्य्यसमन्वितैः पुरुषवन्नारी यदोजे तनुः ।
जीवाङ्गारविधुजैर्बलयुतैश्चेदङ्गराशौ समे गी-
तातत्वविचारसार चतुरा वेदांतवादिन्यपि ८६

जिस स्त्री की कुण्डली में शनि तो मध्यबली होकर बैठा हो शुक्र चन्द्रमा बुध क्षीण वीर्य हों बाकी ग्रह (सूर्य बुध, मङ्गल) बलवान हों और बृहस्पति, मंगल, सूर्य और बुध बलवान् होकर सम जन्म लग्न या सम जन्म राशि में बैठे हों तब वह स्त्री गान विद्या के तत्व के विचार जानने वाली बड़ी चतुरा और वेदांत विद्या में प्रवीण होती है ॥ ८६ ॥

अथाष्टमस्थग्रहाणां फलम् ।

यदाष्टमे देवगुरौ भृगौ वा विनष्टगर्भा मृत-पुत्रका च । कुजेऽष्टमे साकुलटा मृगाक्षी चन्द्रे-ऽष्टमे स्वामिसुखेन हीना ॥ ८७ ॥ मन्दे-ऽअष्टमे रोग रतस्य भार्या दिनाधिपे सा परि-तापतप्ता । अनङ्गरङ्गा परकान्तसङ्गा मृतावगौ सा कुल धर्मभङ्गा ॥ ८८ ॥

जिसकी कुण्डली में लग्न से अष्टम घर में बृहस्पति या शुक्र बैठा हो तब वह स्त्री विनष्टगर्भा होती है यानी उसके गर्भ पाँच या सात माँस के गिर पड़ते हैं अथवा मृतापत्या होती है यदि मंगल अष्टम घर में स्थित होवे तब वह स्त्री कुल-कुल में डोलने वाली और जो चन्दमा अष्टम घर में हो तो वह स्त्री पति के सुख से रहित होती है ॥ ८७ ॥ और जो शनि अष्टम घर में हो तब वह रोग ग्रस्त पति की भार्या होती है और सूर्य अष्टम होवे तब परिताप से तप्त होती है और जिसके अष्टम घर में राहु होता है वह स्त्री कामदेव के रंग में मग्न पर पुरुष का संग करने वाली और कुलधर्म से भ्रष्ट होती है ॥ ८८ ॥

अथ स्त्रीणां पुत्रभाव विचारः ।

पंचमे शुभसंदृष्टे पंचमाधिपतावपि । केन्द्रकोणे

तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत् ॥ ८९ ॥ पंच-पुत्रवती जीवे सबले ससिते विधौ। सुता सुख-वती पापेनारी सन्तानवर्जिता ॥ ९० ॥

जिस स्त्री के लग्न से पंचम घर को तो शुभ ग्रह देखता हो और पंचमेश इन्द्र में या त्रिकोण में १।४।७ १०।५।९ बैठा हो तब वह स्त्री बहु पुत्रवती होती है ॥८९॥ जिसके पंचम घर में बृहस्पति बैठा हो वह स्त्री पाँच पुत्र वाली होती है और जो बलवान चन्द्रमा शुक्र सहित पंचम घर में बली होकर पाप ग्रह बैठा हो तब वह स्त्री सन्तान से होती है ॥ ९० ॥

अथ विषाख्यायोगः

भद्रासार्पानलवरुणे भानुमन्दारवारे यस्या जन्म प्रभवति तदा सा विषाख्या कुमारी। पापे लग्ने शुभखगयुतः पापखेटावरिस्थौ स्या-तां यस्या जननसमये सा कुमारी बिषाख्या ॥ ९१ ॥ आदित्यसूनोर्दिवसे द्वितीया भुज-ङ्गमे भौमदिनेम्बुजर्क्षे। चेत्सप्तमी वाथरवौ विशाखा हरे स्थितौ वापि च सा विषाख्या ९२

धर्मगेह गते भौमे लग्नगे रविनन्दने। पंचमे दिवसाधीशे सा विषाख्या कुमारिका ॥९३॥

भद्रा, श्लेषा, कृत्तिका, शतभिषा इनमें से कोई नक्षत्र और रवि, शनि, मंगल वार में से कोई वार हो इस योग में जन्म लेने वाली कन्या विषाख्या होती है और लग्नमें शुभग्रह के साथ पापग्रह हो और पापग्रह छठे घर में बैठा हो इस योगमें जिस स्त्री का जन्म होता है वो भी स्त्री विषाख्या कहाती है ॥ ९१ ॥ शनिवार दोज तिथि श्लेषा नक्षत्र का जिसका जन्म हो या मंगलवार सप्तमी शतभिषा नक्षत्र में जन्म हो अथवा रविवार द्वादशी विशाखा नक्षत्र का जन्म हो वह कन्या विषाख्या होती है ॥ ९२ ॥ और जिसके जन्मकाल में नवम स्थान में मंगल, लग्न में शनैश्चर और पंचम स्थानमें सूर्य होय तो वह कन्या विषाख्या होती है ॥ ९३ ॥

अथ विषाख्ययोगफलम्

विषाख्या शोकसन्तप्तादुर्भगा मृतपुत्रिका। वस्त्राभरणहीना च पुराणै रुदिता भवेत्॥९४॥

जिसकी कुण्डलीमें विषाख्य नाम योग होता है वह स्त्री शोकसे संतप्त दुर्भगा मृतापत्य और वस्त्र आभरणों से रहित होती है ऐसा पुराण ऋषियों ने कहा है ॥ ९४ ॥

अथ विशाख्यायोगभंगः

सप्तमे सप्तमाधीशः शुभो वा लग्न चन्द्रयोः ।
विषयोगमलं हन्ति रहो हरिरिभं यथा ॥९५॥
इत्थं विवाहकालेऽपि ज्ञातव्यं लग्नचन्द्रयोः ।
तदधीनं यतः स्त्रीणां शुभाशुभफलं भवेत् ९६

जिसकी कुण्डली में सप्तम घरका स्वामी सप्तम घर में बैठा हो अथवा लग्न में और चन्द्रमा के साथ शुभ ग्रह बैठा हो तब विषाख्या नाग योगके फल को नाश करता है जैसे हाथी को सिंह नाश करता हैं ॥९५॥ इसी प्रकार विवाह काल में भी लग्न का और चन्द्रमा का फल जानना चाहिए क्योंकि स्त्रियों का शुभाशुभ विवाह के आधीन होता है ॥९६॥

अथ वैधव्यभंगोपायः

वैधव्ययोग युक्तायाः कन्यायाः शान्तिपूर्वकम् ।
वेदोक्तविधिनोद्वाहं कारयेच्चिरजीविना॥९७॥

जिस कन्या के विधवा का योग हो उस कन्या का वेदोक्त विधि से शान्ति कराकर पश्चात् विवाह करे ॥९७॥

इति भावकुतूहले चतुर्वेद वनमालिकृते भाषानुवादे
नवमोऽध्यायः समाप्तः शुभं भूयात् ॥९॥

अथ कन्यायाः शुभाशुभांगलक्षणाऽध्यायः ॥१०॥

शुभलक्षणसंयुक्ता भवेदिह यदांगना ।
तत्कर ग्रहणादेव वर्द्धते गृहिणां सुखम्॥९८॥
शुभाशुभं पुरा गीतं वेदव्यासेन धीमता ।
प्रकाश्यते तदेवात्र नारीणामंगलक्षणम्॥९९॥

जो कन्या शुभलक्षणों से युक्त होती हैं उस कन्या के पाणिग्रहण करने वाले गृहस्थी पुरुषों को सब समय सुख की वृद्धि होती है ॥९८॥ बुद्धिमान् श्रीवेदव्यासजी ऋषि ने जो शुभाशुभ लक्षण पूर्व निरूपण किये हैं उन्हीं स्त्रियों के अंग लक्षणों को मैं भी प्रकाश करता हूँ ।९९॥

अथादौ स्त्रीणां पादतललक्षणम्

युवतीपादतलं किल कोमलं सममतीव जपाकुसमप्रभम् । दिशति मांसलमुष्णमिलापतेरतिहितं बहुधर्मविवर्जितम् ॥१००॥

जिस स्त्री की पगतली कोमल बराबर (बीचके गढेसे रहित) दुपहरियों के पुष्प के समान लाल गरमाई सहित और कुछ मोटी होती है तब कन्या धर्म से रहित राजाकी पत्नी होती है ।१००॥

कमलकम्बुरथध्वजचक्रवत्पृथुलमीनविमानवितानवत्। भवति लक्ष्म पदे यदि योषितां क्षितिभृतां वनिता विभुताभृता॥१॥शूर्पाकार विवर्णं च विशुष्कं परुषं तथा। रूक्षं पादतलं तन्व्या दौर्भाग्यपरिसूचकम्॥२॥

जिस स्त्री की पगतली में कमल, शंख, रथ, ध्वजा, चक्र, मछली, विमान और चन्दोयेके चिन्होंसे युक्त बीच के गढेसे से रहित पाँव होता है वह स्त्री बिभुता (ऐश्वर्य) से सम्पन्न राजा की रानी होती है॥१॥ और जिस स्त्री का चरण सूपके आकार, रंगसे रहित, विशेष कर सूखा करडा और रूखा होता है तब वो पाँव मन्द भाग्य का सूचन करनेवाला होता है॥२॥

अथाङ्गुष्ठनखलक्षणम्

यस्याः समुन्नताङ्गुष्ठो वर्तुलोऽतुलसौख्यदः। शूपकारा नखा यस्याः सा सवेद्र दुःखभागिनी॥३॥

जिस स्त्रीके पांवका अगूठा उन्नत और गोल होता है वह अतुल सुख देनेवाला होता है और जिसके नख सूर्पके आकार हों वह स्त्री दुःखोंकी भोगनेवाली होती है॥३॥

अथ गतिलक्षणम्

संचलन्त्याः पदा धूलिधारा यदा राजमार्गे-
बलायाँ वलाद्दुच्छलेत् । पाँसुला सा कुलानाँ
त्रयं सत्वरं नाशयित्वा खलैर्मोदते सर्वदा॥४॥

जिस स्त्रीके चलनेमें मार्ग में धूलि उड़ती हो वह स्त्री जारिणी (परपुरुष गामिनी) होकर अपने माता पिता और पति तीनोंके कुलको दूषित करनेवाली होकर सब समय दुष्ट कामी पुरुषों के साथ आनन्दसे विषय करनेवाली होती है ॥ ४ ॥

अथ पादाङ्गुल्योपर्य्यङ्गुलिलक्षणम्

यस्याअन्योन्यमारूढापादाँगुल्यो भवन्तिचेत् ।
सा पतीन्बहुधा हत्वा वारवामा भवेदिह ॥५॥

जिसकी २ अंगुली एक अंगुलीपर एक चढी हुई हों वह स्त्री अनेक प्रकार अपने पतिको मारकर वारवेश्या (वेश्या) होती है ॥ ५ ॥

अथ कनिष्ठाङ्गुलिलक्षणम्

कनिष्ठा न स्पृशेद्भूमि चलत्या योषितस्तदा ।
साद्रुतं स्वपतिं हत्वा जारेण रमते पुनः ॥६॥

जिस स्त्री के पाँव की कनिष्ठा अंगुली चलने में भूमि को स्पर्श न करती हो वह स्त्री शीघ्र ही पति को मार कर पर पुरुष से रमण करने वाली होती है ॥ ६ ॥

अथानामिका तथा मध्याङ्गुलिलक्षणम् ।

अनामिका च मध्या च यदि भूमि न संस्पृशेत् । आद्या पतिद्वयं हन्ति चापरा तु पतित्रयम् ॥ ७ ॥ अनामिका च मध्या च यदि हीना प्रजायते । तदासा पतिहीना स्यादित्याह भगवान्स्वयम् ॥ ८ ॥

जिस स्त्री के चलने में बिचली और अनामिका (छुङ्गनी के पास की) दोनों अंगुली यदि भूमि को स्पर्श न करती हो उनमें भी अनामिका भूमि को स्पर्श न करे तो दो पतियों को और मध्यमा अंगुली भूमिको स्पर्श न करती हो तब वह स्त्री तीन पतियों को मारती है ।७॥ और अनामिका मध्या दोनों अंगुली जिस स्त्री की छोटी हों तब वो स्त्री पतिहीना होती है यह बात भगवान ने अपने मुख से कही है ॥ ८ ॥

अथ पादनखलक्षणम् ।

यदि पादनखाः स्निग्धा वर्तुलाश्च समुन्नताः । ताम्रवर्णा मृगाक्षीणां महाभोग प्रदायकाः ९

जिसके पाँव के नख लाल चिकने गोल उन्नत हों तब उस स्त्री को अनेक भोगों के देने वाले होते हैं ॥ ९ ॥

अथ पदपृष्ठलक्षणम् ।

यदि भवेदमलं किलकोमलं कमलपृष्ठवदेव-
मृगी दृशाम् । अरुणकुङ्कुमविद्रुमसन्निभं
बहुगुणं पदपृष्ठमिति ध्रुवम् ॥ १० ॥

जिस स्त्री का पदपृष्ठ कोमल उज्ज्वल मङ्गा या केशर के समान रंग का लाल और कमल के पृष्ठ का सा हो तब वह स्त्री अनेक सद्गुणों से युक्त होती है ॥ १० ॥

अथान्याशुभलक्षणम् ।

अंघ्रिमध्ये दरिद्रा स्यान्नम्रत्वेन सदाङ्गना ।
शिरालेनाध्वगा नारी दासी लोमाधिकेनसा ११

जिस स्त्री की अंगुलियों के बीच में गहरापन तब वह स्त्री दरिद्रा होती है, यदि वो ही अंगुलियों का मध्य शिराल (अधिकनश वाला) हो तब वह स्त्री रस्ता चलने वाली और जो अधिक रोमों से संयुक्त हो तब वह स्त्री दासी होती है ॥ ११ ॥

अथ गुल्फयोर्लक्षणम् ।

निर्मांसेन सदा नारी दुर्भगा खलु जायते ।
गुल्फौगूढौशुभौ स्यातामशिरालौ च वर्तुलौ ।

जिस स्त्री की पिंडुली निर्मांस (पतली) हों वह स्त्री दुर्भगा होती है और नसों के आधिक्य से रहित गोल और माँस से छिपे हों तब शुभफल के देने वाले होते हैं ॥ १२ ॥

अगूढौशिथिलौ यस्यास्तस्या दौर्भाग्यसूचकौ।
गुल्फलक्षणमाख्यातं पार्ष्णिलक्षणमुच्यते १३

जिस स्त्री के टकुना माँस से निकले और शिथिल हों तब वे दुर्भाग्य के जताने वाले होते हैं यह टकुनों का लक्षण कहा है अब एडी को लक्षण कहते हैं ॥ १३ ॥

अथ पार्ष्णिलक्षणम् ।

समानपार्ष्णिः सुभगा पृथुपार्ष्णिश्च दुर्भगा ।
कुलटातुङ्गपार्ष्णिश्च दीर्घपार्ष्णिर्गदाकुला १४

जिस स्त्री की एडी समान होती है तब वह स्त्री सुभगा होती है और मोटी एडी होने से दुर्भगा, ऊँची एडी होने से पर पुरुष गामिनी और लम्बी एडी होने से स्त्री रोगिणी होती है ॥ १४ ॥

अथ जङ्घालक्षणम् ।

जंघे रम्भोपमे यस्या रोमहीने च वर्तुले ।
मांसले च समे स्निग्धे राज्ञी सा भवति ध्रुवम्।

जिस स्त्री की जङ्घा केला के समान चिकनी रोम-राजि से रहित गोल समान और मांसल होती हैं वह स्त्री अवश्य राज राणी होती है ॥ १५ ॥

अथ रोमलक्षणम् ।

एकरोमा प्रिया राज्ञो द्विरोमा सौख्यभागिनी।
त्रिरोमा विधवा ज्ञेया रोमकूपेषु कामिनी १६

जिसकी एक रोम वाली रोमराजी होती है तब राजा की राणी, दो दो रोम वाली रोम राजी होने से सुख भोगने वाली और हर एक रोम कूपों में तीन तीन रोम होने से विधवा होती है ॥ १६ ॥

अथ पुनर्जानुलक्षणम् ।

भवति जानुयुगं यदि मांसलं तदतिबृत्तमतीव शुभप्रदम् । भुवनभर्तुरतौ विपरीतिभादिभि-रिदं विपरीतमुदीरितम् ॥१७॥

जिस स्त्री की दोनों जङ्घा मोटे और अति गोल हों तब राजा की राणी होती है और इसमें विपरीत होने से विपरीत फल होता है (पूर्व पीढ़ियों का और ये जाघों का फल कहा) ॥ १७ ॥

अथ नितम्ब तथा कटिलक्षणम्।

समुन्नतनितम्बाद्या यस्याः सिद्धांगुला कटिः।
सा राजपट्टमहिषी नानालीभिः समावृता १८
निर्मांसा विनता दीर्घा चिपिटा शकटाकृतिः।
लध्वी रोमाकुला नार्य्याः वैधव्यं दिशतेकटिः।

जिस स्त्री के नितम्ब (कटि-पश्चाद्भाग) ऊँचे हों और चौबीस अंगुल के प्रमाण की कमर हो वह स्त्री अनेक सखिजनों के साथ रहने वाली राजरानी होती है ॥१८॥और माँस से रहित आगे को या पीछे को कुछ नवी लम्बी चिपटी गाड़े के आकार लघ्वी और रोम संयुक्त जिस स्त्री की कमर हो वह स्त्री विधवा होती है ॥ १९ ॥

सीमन्तिनीनां यदि चारुबिम्बो भवेन्नितम्बो बहुभोगदः स्यात्। समुन्नतो मांसल एवयासां पृथुःसदा काममुखाय तासाम् ॥२०॥

जिस स्त्री के कटि के पश्चाद्भाग बिम्ब के समान होता है वह स्त्री अनेक भोगों को भोगने वाली होती है और जिसका कटि पश्चाद्भाग ऊँचा माँसल और पुष्ट होता है तब वह सदा काम सुखों को भोगती है ॥ २० ॥

अथ योनि लक्षणम् ।

यदागजस्कन्धसमानरूपो भगोऽथवा कच्छप-
पृष्ठवेषः । इलापतेः कामविनोददायी वासो-
न्नतः सोऽपि सुताजनेता ॥२१॥

जिस स्त्री की योनि (भग) हाथी के कन्धे के समान हो या कच्छप के पीठ के आकार वाली हो वह राजराणी कामक्रीड़ा करने वाली होती है और उन्नत (ऊँची) भग होने से स्त्री कन्या सन्तान की उत्पन्न करने वाली होती है।

अश्वत्थदलरूपो वा भगो गूढमणिः शुभः ।
चुल्हिकोदररूपो यः कुरङ्गखुरसन्निभः ॥२२॥
रोमाकुलो युष्टयोनिर्विकृतास्यो महाधनः ।
कामिनां न विनोदार्हो भगोभवति सर्वथा२३
कामिन्या कंचुकावर्तो भगो दौर्भाग्यवर्द्धकः ।
सगर्भधारणाशक्तो वक्राकारोऽपितादृशः ।२४।
वेतसवशदलप्रतिभासः कर्परूपदेव भगो वा ।
लम्बगलो विकटो गजलोमा नैव शुभश्चिपि-
टोपि निरुक्तः ॥२५॥

रोमों से आकुल जिनों से योनि दीखती न हो वह

स्त्री धन हीन होती है और वह भग कामी पुरुषों के विनोद करने योग्य नहीं होती है॥ २२ ॥ और जिस स्त्री का भग पीपल के पत्ता के समान आकार वाला गुप्तमणि तुल्य या चुल्हिका (चूल्हे का) भीतर के समान या हरिण के खुर के आकार का होने से शुभ होता है ॥२३॥ और जो स्त्री का भग दोनों तरफ से उन्मत्त मध्य में नीचा रो तब दुर्भाग्य बढ़ाने वाला गर्भ के धारण करने में असक्त होता है और वक्राकार भग का भी ये ही फल होता है ॥ २४ ॥ यदि वेत या बाँस के दल के आकार का या खप्पर के आकार का भग हो अथवा लम्बे गले वाला बिकट या हाथी के समान लोम वाला भग हो अथवा चिपटाकार भग होवे तब शुभ नहीं होता है ॥ २५ ॥

मृदुतरं मृदुरोमकुलाकुलं यदि तदा जघनं भग भाजनम् । उत समुन्नतमायतमादरात्पतिक लाकलितं गदितं बुधैः ॥२६॥ तदेव दक्षिणा- वर्तं मांसलं शुभसूचकम् । वामावर्तं च नारीणां खंडितंखंडिताश्रयम् ॥२७॥ निर्मांसं कुटिलाकारं रूक्षं वैधव्यसूचकम् । अतिस्थूलं मदादीर्घं सद्यो दौर्भाग्यकारकम् ॥२८॥

जिस स्त्री का भग अथवा कटि पश्चाद्भाग अति कोमल और अति कोमल रोम वाला या सम्यक् प्रकार उन्नत (ऊँचा) या लम्बा होवे तब वह पति कला से (पतिस्नेह से) आदर पूर्वक सेव्य कहा है ये ही सब बुध मनुष्यों ने निर्णय किया है॥ २६ ॥ यदि वेाही भग दक्षिणावर्त और माँसल हेा तब शुभ सूचक होता है यदि वह वामावर्त और खण्डित हो तब खण्डिता (जारिणी) पन का आश्रय होता है ॥ २७ ॥ यदि वह भग मांस रहित और टेढ़े आकार वाला या रूख हेा तब वह वैधव्य को सूचित करता है और जेा स्थूल या लम्बा भग हेा तब दौर्भाग्य (अभोग्य) का करने वाला होता है ॥ २८ ॥

मृदुला विपुला वस्तिः शोभना च समुन्नता।
अशुभा रेखयाक्रान्ता शिराला लोमसंकुला॥

जिस स्त्री के नरम बड़े और ऊँचे नले हों तो शुभ और जेा अनेक रेखा वाले और नसें दीखते और रोमों से युक्त हों तब वह नले अशुभ सूचक होते हैं॥ २९॥

अथ नाभिलक्षणम्।

गभीरा दक्षिणावर्ता नाभिर्भोगविवर्द्धिनी।
व्यक्तग्रन्थिः समुत्तानावामावर्ता न शोभना

जिस स्त्री की नाभि गहरी और दक्षिणावर्ता हो वह भोगों की बढ़ाने वाली होती है जिसकी ग्रन्थि (मध्य की घुन्डी) दीखती और ऊँची हो और वामावर्त युक्त नाभि हो वह नाभि अशुभ फल देने वाली होती है ॥३०॥

अथोदर लक्षणम्।

पृथूदरी यदा नारी सूते पुत्रान् बहूनपि। भेकोदरी नरेशानां बलिनं चायतोदरी ॥ ३१ ॥ उन्नतेनोदरेणैव वन्ध्या नारी प्रजायते। जठरेण कठोरेण सा भवेद्भिन्डुकाङ्गना ॥३२॥ आवर्तेन युतेनैव दासिका भवति ध्रुवम्। कोमलैर्मांससंयुक्तैः समानैः पार्श्वकैः शुभम् ॥३३॥ विशिरेण मृदुत्वाचा सपुत्राःजठरेणातिकृशेनकामिनी सा। बहुधातुलभोगलालिता सानुदिनं मोदकसत्फलाशिनी स्यात् ॥ ३४ ॥ घटाकारं यस्या भवति च मृदंगेन सदृशं यवाकारं दैवाद्दुदरमहिपुत्र रहितम्। अभद्रं नो भद्रं तदपि यदि कूष्माण्ड सदृशं निरुक्तम् तत्त्वज्ञैः कठिनसुरुशाले न च समम् ॥ ३५ ॥

जिसका उदर पुष्ट होता है वह स्त्री अनेक पुत्रों को उत्पन्न करने वाली होती है और जिसका पेट मेंढक के आकार वाला होता है वह स्त्री राजा और बलवान् पुत्र उत्पन्न करने वाली होती है ॥ ३१ ॥ और उन्नत पेट वाली स्त्री वन्ध्या (बाँझ) होती है और जिस स्त्री का कठोर उदर हो वह स्त्री भिंदुक (अधम मनुष्यों में उत्तम) पुरुष की पत्नी होती है ॥ ३२ ॥ और जिस स्त्री के पेट पर भौंरी होती है वह स्त्री अवश्य दासी होती है और जिसकी नरम माँसयुक्त और समान कूखें होती हैं तब भगुणा होती है ॥ ३३ ॥ और जिस स्त्री का नसों से रहित कोमल खाल वाला और पतला होता है वह स्त्री अनेक भोगों से लाड़ लड़ाई और प्रति दिन अनेक प्रकार मोदकों की खाने वाली अनेक फलों की भोगने वाली होती है ॥ ३४ ॥ और जिस स्त्री का उदर घड़े के आकार या मृदङ्गके आकार अथवा यवके आकार वालाहो तब वह स्त्री पुत्र से रहित अमंगल रूपा होती है और यदि कूष्माण्ड (कुम्हडे के फल) के सदृश आकार वाला हो तब वह अमंगल रूप नहीं किन्तु मंगल रूपी होती है और तत्वज्ञों ने कहा है कि जिस स्त्री के उरुशाल कठोर हों तब भी पूर्वोक्त ही उसका फल होता है ॥ ३५ ॥

अथ त्रिवलीवली लक्षणम्

कृशतरा त्रिवली सरलावली ललितनर्मविनोदविवर्धिनी। भवति सा कपिला कुटिलाकुला शुभकरी विरला महदाकृतिः ॥३६॥

जिस स्त्री के उदर में अति पतली सूधी त्रिवली हो वह स्त्री मनोहर हास्य क्रीड़ाकी बढ़ाने वाली होती है यदि वह त्रिवली कपिल (भूरे) रंग की कुछ टेढ़ी हो तब वह स्त्री व्याकुल रहनेवाली होती है और यदि छिलछिली और बड़ी त्रिवली हो तब वह शुभफल देनेवाली होती है॥३६॥

अथ वक्षःस्थल लक्षणम्

लोमहीनहृदयं यदा भवेन्निम्नताविरहितं समायतम् ॥ भोगमेत्य सकलं वराङ्गनासा पुनः प्रियवियोगमालभेत् ॥ ३७ ॥ उद्भिन्नरोमहृदया स्वपतिं निहन्ति विस्तारूपहृदया व्यभिचारिणी स्यात्। अष्टादशांगुलमितं हृदयंसुखाय चेद्रोमशं च विषमं न सुखाय किंचित् ॥३८॥ उन्नतं पीवरं शस्तं हृदयं वर योषिताम्। अपीवरमिदं नीचं पृथुदौर्भाग्यसूचकम् ॥ ३९॥

जिसकी (हृदय) छाती रोम राजि से और गढेले से रहित बराबर तथा लम्बी हो वह स्त्री सब भोगों को भोगनेवाली होकर पश्चात् पति के वियोग को पाती है यानी विधवा होजाती है ॥ ३७ ॥ और रोमयुक्त हृदयवाली स्त्री अपने पति को मारनेवाली और विस्तृत हृदयवाली परपुरुष गामिनी होती है और अठारह अंगुल प्रमाण का हृदय सुख देनेवाला होता है परन्तु यदि अधिक रोमवाला या विषम (ऊँचाखाली) हृदय हो तब उस स्त्री को सब समय दुःख का देनेवाला होता है ॥ ३८ ॥ उन्नत (ऊँचा) पृष्ठ हृदय हो तब वह उत्तम स्त्रियों को सब समय अत्यन्त सुख देनेवाला होता है और यदि पतला नीचा हृदय हो तब स्त्री को दौर्भाग्य सूचक हृदय होता है ॥३९॥

अथ स्तन लक्षणम् ।

भवत एव समौ सुदृढाविमौ यदि घनौ सुदृशस्तु पयोधरौ । निजपतेरनिशं परिवर्तुलौ कुसुमबाणविनोदविवर्धकौ ॥ ४० ॥ सुभृवो विरलौ सूक्ष्मौ स्थूलाग्रावहिताविमौ । पयोधरौ तदा नार्य्याः प्रभवेद्दक्षिणोन्नतः ॥४१॥ पुत्रदोऽन्यथकन्यादो यदा वामोन्नतो भवेत् । सान्तरालौ

च विस्तारौ पीवरास्यौ न शोभनौ ।।४२।।मूले स्थूलौ क्रमकृशावग्रे तीक्ष्णौ पयोधरौ । सुखदौ पूर्वकालेतु पश्चादत्यन्तदुःखदौ ।।४३।।

जिस स्त्री के स्तन मजबूत और परस्पर मिले हुये गोल हो तब उस स्त्री को अपने पति के द्वारा कामक्रीड़ा के बढ़ाने वाले होते हैं ।। ४० ।। और बीच में अन्तराल सहित सूक्ष्म और मोटे अग्र भाग वाले हों तब स्त्री को अहित करनेवाले होते हैं और दक्षिणोन्नत स्तन होने से पुत्र सन्तति देने वाले और वामोन्नत स्तन होने से कन्या सन्तति देनेवाले होते हैं और यदि स्तनों के बीच में खाली हो अर्थात् दूर दूर हों या अति पुष्ट हों अथवा स्तनों का अग्रभाग मोटा हो तब शुभ नहीं होते ।।४१।४२।। और जड़ में स्थूल होकर तदनन्तर क्रम से कृश हों और अग्र भाग में तीक्ष्ण हों तब वे स्तन पूर्व अवस्था में सुख देने वाले और वृद्धावस्था में दुःख देने वाले होते हैं ।।४३।।

अथ स्कन्ध लक्षणम्

पुत्रिणी विनतस्कन्धा ह्रस्वस्कन्था सुखप्रदा । पुष्टस्कन्धा तु कामान्धा रतिभोगसुखावहा।४४

मदांधा कुटिलस्कंधा स्थूलस्कन्धा च तादृशी।
यदि लोमाकुलस्कन्धा वैधव्यं द्रुतमावहेत्।४५।

नवे हुए कन्धों के होनेसे स्त्री पुत्र सन्तानवाली हस्व कन्धों के होने से सुख भोगने वाली पुष्ट कन्धों के होने से स्त्री सब समय काम में अन्धी और रतिभोग रूप सुख के देने वाली होती है ॥ ४४ ॥ और जिस स्त्री के कन्धा टेढे हों या स्थूल हों तब वो स्त्री सब समय मदसे अन्धी होती है यदि स्त्री के कन्धों में रोम अधिक हों तब उस स्त्री को शीघ्र ही वैधव्य प्राप्त होता है ॥४५॥

अथ बाहुलक्षणम्

स्रस्तांसा संहतांसा च धन्या भवति कामिनी।
तुङ्गांसा विधवाज्ञेया विमांसा सा तथैव च।४६।

जिस स्त्री के बाहुमूल (खवें) स्रस्त (फैले हुये) अथवा दृढ़ (मजबूत) हो तब वह स्त्री-धन्य कामिनी होती है और जिसके ऊंचे बाहुमूल हों अथवा मांस रहित हों वह स्त्री विधवा होती है ॥४५॥

अथ हस्तांगुलीलक्षणम्

अंगुष्ठांगुलिकं युग्मं यत्पद्मकलिकासमम्।

बहुभोगाय नारीणां निर्मितं विधिनापुरा॥४७॥

जिस स्त्री का अँगूठा और अँगूठे के पास की दोनों अँगुली कमल कली के समान होवें तो वह बहु भोगों की सम्पादन करने वाली होती है ऐसा ब्रह्माजी ने कहा है।४७।

अथ करतल लक्षणम्

करतलं भुजयोर्यदि कोमलं विमलपद्मनिभं च समुन्नतम्। निजपतेः कुसुमायुधवर्धकं निदिगतं मुनिना विधिनो दितम्॥ ४८॥ स्वच्छरेखाकुलं भद्रं नो भद्रं हीनरेखया। अभद्रं रेखया हीनं वैधव्यं चातिरेखया ॥४९॥

जिस स्त्री की करतली (हथेली) निर्मल और कमल के समान तथा ऊंची यानी ऊपर को उठी हो तो वह स्त्री पति को कामीदीपन करनेवाली होती है ऐसा सामुद्रिक जानने वाले ऋषियों का मत है॥ ४८॥ और जिस स्त्री की करतली स्वच्छ (साफ) रेखाओं से युक्त हो वह कल्याण करनेवाली और हीन रेखावाली करतली अमंगल करनेवाली होती है और बिलकुल रेखों से रहित होने से अमङ्गल देनेवाली और बहु रेखायुक्त हथेली होने से वैधव्यदायक होती है॥ ४९॥

करपृष्ठ लक्षणम्।

शिराजालं कुरुते निःस्वं नारीकरतलं यदि।
समुन्नतं च विशिरं करपृष्ठं सुशोभनम् ॥५०॥
रोमाकुलं गभीरं च निर्मांसं पतिजीवहृत्।
सुभ्रुवः करपृष्ठस्य लक्षणं गदितं बुधैः ॥५१॥

जिस स्त्री का हाथों का पिछला भाग नसों से अधिक युक्त हो तब दरिद्र करता है और जिस स्त्री का हाथों का पिछला भाग ऊंचा और नसों के आधिक्य से रहित हो वह श्रमदायक होता है ॥ ५० ॥ और जिस स्त्री के हाथ का पिछला भाग रोमों से युक्त गंभीर और मांस से रहित हो वह उस स्त्री के पति के प्राणों का नाश करने वाली होती है बुद्धिमान पंडितोंने यहकर पृष्ठका लक्षण कहाहै ५१

अथ हस्तरेखालक्षणम्।

गभीरा रक्ताभा भवतिमद्धुजा वा स्फुटतरा करे वामे रेखा जनयति मृगाक्ष्या बहु शुभम्। यदा वृत्ताकारा पतिरतिसुखं विन्दति परं विसारं सौ भाग्यं बलमपि सुतं स्वस्तिकमपि ॥५२॥ करतले यदि पद्ममिलापतेः प्रियतमा परमा गरि

मावृता। नृपमपत्त्यमलं जनयेदरं बलवतामपि मानविमर्दकम् ॥५३॥ यदा प्रदक्षिणाकारो नन्द्यावर्तः प्रजायते। चक्रवर्तिनृपस्त्री सा यस्याः पाणितलेऽमले ॥ ५४ ॥ आतपत्रं च कमठः शङ्खोऽपि यदि वा भवेत्। नृपमाता गुणोपेता भव्याकारा पतिव्रता ॥ ५५ ॥ यस्यावामकरे रेखा तुलामालोपमा भवेत्। वैश्यवामा रमा पूर्णा नानालङ्कारमंडिता ॥५६॥ करतले गजवाजिवृषाकृतिः कृतिविदामबला किलकोविदा। भवति सौधसमा यदि सुभ्रुवः शशिनिभाऽतिशुभा किल रेखिका ॥ ५७ ॥ भवति सा विमलांकुशचामरामलशरासनवद्यदि रेखिका। गुणविभूषितभूतिबल्लभा करतले शकटेन विशोऽबला ॥ ५८ ॥ अंगुष्ठमूलतो रेखा कनिष्ठां यदि गच्छति। यस्याः सा पतिहन्त्री तां दूरतः परिवर्जयेत् ॥५९॥ यदि करे करवालगदामलप्रखरकुन्तमृदङ्गकुरङ्गवत्। भवति शू-

लनिभा खलु रेखिका भुवि सदा धनदा प्रमदा तदा ॥ ६० ॥ बृषभेकवृश्चिकभुजङ्गजम्बुकाः खरकंकपत्रशलभाबिडालकाः । यदि वामपाणितलगा भवन्ति चेत्कलहेन साद्धर्मति रोगकारकाः । ६१ ॥ कोमलः सरलोऽङ्गुष्ठो वर्तुलो यदि योषिताम् । क्रमादेवं कृशांगुल्यो दीर्घाकाराश्च वर्तुलाः ॥ ६२ ॥ पृष्ठरोमाः प्रजाः शस्ताश्चिपिटा उदिता बुधैः । कृशाः कुञ्चितपर्वाणो ह्रस्वा रोगभयावहाः । अनेकपर्वसंयुक्ता उन्नतांगुलयो शुभाः ॥ ६३ ॥

जिस स्त्री के वाम हाथ की हथेली में गहरी रंग की लाल कोमल और अच्छी तरह से दीखती हुई रेखाहों वह उस स्त्रीको अति शुभ करने वाली होती हैं और यदि वह रेखा गोल हो तो पति संबंध से रति सुख प्राप्त होता है और मछलीकी रेखा होनेसे स्त्रीको सौभाग्य बल और पुत्रका पूरा फल प्राप्त होताहै और सातिए की रेखा होने से भी यही फल होता है ॥ ५२ ॥ और स्त्री की हथेली में कमल का चिन्ह होनेसे वह स्त्री राजा की परमप्रिया अनेक गुणों के

महत्वसे युक्त और बलवानोंके मानके खंडन करने वाले राज पुत्र की शीघ्र ही जनने वाली होती ॥ ५३ ॥ और जिस स्त्री का हथेलीमें नघावर्तका चिन्ह हो तब वह स्त्री चक्रवर्ती राजा की राणी होती है ॥५४॥ और छत्र कछुआ अथवा शंखमें से कोई चिन्ह होने से स्त्री अनेक गुणवाली कल्याण रूपा और पंतिव्रता राजा की माता होती है ॥५५॥ जिस स्त्री की वाम हथेली में तुला या माला की रेखा होती है वह स्त्री अनेक आभूषणोंसे शृंगार करने वाली लक्ष्मीसे पूर्ण किसी धनिक वैश्य की स्त्री होती है ॥ ५६ ॥ और जिस स्त्रीकी हथेलीमें हाथी घोड़ा मंदिर और वृषकी रेखा हों वह स्त्री अनेक कारीगरीकी जानने वाली बड़ी विदुष्मती चंद्रवत् मुखवाली अनेक शुभ संपादन करने वाली होती है । ५७॥ और जिस स्त्रीकी हथेली में अंकुस चमर अथवा धनुष की रेखा होती है वोस्त्री अनेक गुणों से विभूषित और राजपत्नी होती है और यदि गाढे की रेखा हो वह किसी व्यापारी साहूकारकी स्त्री होती है ।५८। और जिसके अंगूठाके मूल में कनिष्ठा अँगुली तक रेखा गई हो वोस्त्री अपने पति की मारने वाली यानी विधवा होती है, उस स्त्रीको दूरसे परित्याग करै ॥ ५९ ॥ और जिसकी हथेली में खड्ग गदा भाला मृदंग शूल और हिरण इनमें से कोई रेखा हों वह

स्त्री सर्व समय धन की देने वाली होती है ॥ ६० ॥ और जिसकी वाम हाथकी हथेली में वृष मेडका वीछी स्यार सर्प गदहा बाण टीड़ी और विडाल इनमें से कोई रेखा हो तब वो स्त्री कलहा और अति रोगिणी होती है ॥ ६१ ॥ जिस का अंगूठा सरल तथा कोमल और गोल हो और उंगली क्रमसे सब एकसे दूसरी छोटी तथा लम्बी और गोलहों और अंगुली ऊपर रोमसे युक्त तथा चिपटी छोटे पोरुऐ वालीहों उंगली छोटी हो तब वो स्त्री रोगों के भयसे युक्त होती है उन्नता और अनेक पर्व युक्त उंगली हों तब शुभ फल की देने वाली होती है ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

अथ नखलक्षणम् ।

शङ्खशुक्तिनिभा निम्ना विवर्णा न नखाःशुभाः कपिला वक्रिता रूक्षाः सुभुवःसुखनाशकाः ॥६४॥ यदि भवन्तिनखेषु मृगीदृशां सितरुचो विरलायदि बिन्दवः। अतितरांकुसुमायुधपीडया परजनेन लपन्ति रमन्ति ताः ॥६५॥

जिस स्त्री के नख शङ्ख या सीप के समान निम्न (गढेले वाले) और विवर्ण हों तब शुभ फल देने वाले होते हैं और जिसके सफेद टेढे तथा रूखे नख हों तो सुखके

नाश करने वाले होते हैं ॥६४॥ जिस स्त्रीके नखों में रंग के सफेद तथा विरल (छिरछिरे) बिंदु हों तब वो स्त्री कामदेवकी पीड़ा से पीड़ित होकर अपने नौकरों से बतलाने वाली तथा रमण करने वाली होती है ॥ ६५ ॥

अथ पृष्ठ लक्षणम् ।

शुप्तास्थिपृष्ठवंशेन मांसलेन पतिप्रिया ।
रोममूलेन पृष्ठेन विधवा भवति ध्रुवम् ॥६६॥
सशि रेणातिभुग्नेन विनतेन च दुःखिता ।
सरलो मांसलो यस्याः पृष्ठवंशः समुन्नतः ।६७।
सा पत्युरनुभद्राख्या मुक्तालङ्कारमण्डिता ।
अतिप्रिया सुशीला च बरालीभिः समावृता ६८

जिस स्त्रीके हाथकी हथेलीके पृष्ठभागकी नसें मांससे छिपी हुई हों वह स्त्री अपने पति की प्रिया होती है और जिसके हथि का पृष्ठ भाग रोम से युक्त होता है वो स्त्री अवश्य विधवा होजाती है ॥६६॥ और जिसका हाथ का पृष्ठ भाग टेढ़ा तथा नवा हुआ होता है वो स्त्री दुःखित होती है और यदि सरल सीधा तथा मांसल और ऊँचा हो वह स्त्री अपने पतिकी अनुकूला और मोतियों के आभू-

वर्णों से भूषित अपने पति को अत्यन्त प्रिया सुशीला और उत्तम श्रेष्ठ सखियों से युक्त होती है॥ ६७॥ ६८॥

अथ कण्ठलक्षणम्।

कण्ठो वर्तुलरूपः कमनीयः पीनतायुक्तः। चतुरंगुलश्च यस्याः सा निजभर्तुः प्रिया भवति ॥६९॥ गृध्रास्थिमांसला ग्रीवा त्रिरेखाभिः समावृता। सुसंहता तदा शस्ता विपरीता न शोभना॥७०॥ स्थूलग्रीवा धवत्यक्ता रक्तग्रीवा च दासिका। अपतिश्चपिट ग्रीवा लघुग्रीवार्थवर्जिता॥ ७१॥

जिसका कण्ठ वर्तुल (गोल) पुष्टतासे युक्त और चार अंगुलके प्रमाणका ऊँचा हो वो स्त्री अपने पति की प्रिया होती है॥६९॥ और जिसकी ग्रीवा मांसलाहो और तीन रेखावाली संहता(दृढ) हो तब शुभ फल देने वाली होती है और यदि इससे विपरीत हो तो अशुभ फल देने वाली होती है॥७०॥ और स्थूल ग्रीवा होने से पति की परित्याग करने वाली, लाल रंगकी ग्रीवा के होने से दासीपन का काम करने वाली चिपटी ग्रीवा होनेसे विधवा और छोटी (कोते) ग्रीवा होने से स्त्री दरिद्रिणी होती है॥७१॥

अथ हनुलक्षणम् ।

सुघना कोमला यस्या निर्लोमा च हनुः शुभा ।
लोमशा कुटिला लघ्वी चातिस्थूला न शोभना ॥

जिसकी अति दृढ़ कोल और रोमाँचों से रहित ठोड़ी होती है तब शुभ फल देने वाली और रोमांचों से युक्त ठोड़ी छोटी और मोटी ठोड़ी हो तब शुभ फल देने वाली नहीं होती है ॥ ७२ ॥

अथ कपोललक्षणम् ।

मांसलौ कोमलावेतौ कपोलौ वर्तुलाकृता ।
समुन्नतौ मृगाक्षीणां प्रशस्तौ भवतस्तदा ७३
निर्मांसौ पुरुषाकारौ रोमषौ कुटिलाकृती ।
सीमन्तिनीनामशुभौ दौर्भाग्यपरिवर्द्धकौ ७४

जिस स्त्री के माँसल तथा कोमल और गोलाकार कपोल हों तथा कुछ ऊँचे हों तब शुभ फल देने वाली और यदि माँसल रहित रोमांचों से युक्त टेढ़े और पुरुष के से कपोल हों तब उस स्त्री को अशुभ फल देने वाले और निर्भाग्य करने वाले होते हैं ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

अथोष्ठ लक्षणम् ।

वर्तुलो रेखयाक्रान्तो बन्धूकसदृशोऽधरः ।

स्निग्धो राजप्रियो नित्यं सुभ्रुवः परिकीर्तितः७५
प्रलम्बः पुरुषाकारः स्फुटितो मांसवर्जितः ।
दौर्भाग्यजनको ज्ञेयः कृष्णो वैधव्यसूचकः७६

जिस स्त्री के गोल अनेक रेखाओं से युक्त चिकने और कुदुरूके समान अरुण अधर हों तब वह स्त्री अवश्य राजा की पत्नी होती है ॥ ७५ ॥ यदि लम्बे पुरुष के से फूटे हुए और माँस रहित कपोल हों तब दौर्भाग्य सूचक और यदि काले रङ्ग के कपोल हों तब उस स्त्री को विधवापन सूचन करने वाले होते हैं ॥ ७६ ॥

अथ दन्तलक्षणम् ।

उपर्यधः समा दन्ताः स्तोकरूपा पयोरुचः ।
द्वात्रिंशदास्यगा यस्याः सा सदा सुभगा भवेत्७७
अधोदन्ताधिकत्वेन मातृहीना च दुःखिता ।
विधवाविकटाकारैः स्वैरिणी विरलद्विजैः ७८

जिसके ऊपर नीचे से समान छोटे छोटे दूध के समान शुक्ल और गिनती के पूरे बत्तीस दाँत होते हैं वो स्त्री सदा सौभाग्यवती होती है ॥ ७७ ॥ और नीचे के दांत यदि अधिक हों तब वह स्त्री मातृ सुख से रहित होकर

सदा दुःख पाने वाली विकटाकार दाँतों के होने से विधवा और छिरछिरे दाँतोंके होनेसे स्त्री वेश्या होती है ॥ ७८ ॥

अथ जिव्हालक्षणम् ।

कोमला सरला रक्ता श्वेता च रसना शुभा ।
स्थूला या मध्यसङ्कीर्णा विकृता सुखनाशिना ७९
श्यामया कलहा नित्यं दरिद्रा स्थूलया भवेत् ।
अभक्ष्यभक्षिणी ज्ञेया जिव्हया लम्बमानया ८०

जिसकी कोमला सीधी रङ्ग की लाल या सफेद जीभ हो तो शुभ फल देने वाली होती है यदि मोटी बीच में से सिमटी और विकृता जिव्हा हो तो स्त्री के सुख नाश करने वाली होती है ॥ ७९ ॥ काली जीभ होने से कलह करने वाली मोटी जीभ होने से दरिद्रिणी और लम्बी जीभ होने से स्त्री अभक्ष्य भक्षण करने वाली होती है ८०

अथ तालुलक्षणम् ।

तालु कोकनदाभासं कोमलं भद्रकारकम् ।
नारी प्रव्रजिता पीते सिते वैधव्यमाप्नुयात् ८१
श्यामले पुत्रहीना च रूक्षे तालुनि दुःखिता ।
वक्रे कलिप्रिया नारी बहुरूपे च दुर्भगा ॥ ८२ ॥

जिस स्त्री का तालु कोमल और सुवर्ण के समान लाल होवे तो कल्याण कारक होता है पीले रंग के तालु होने से वैराग्य लेने वाली और शुक्ल तालु के होने से विधवा स्त्री होती है ॥ ८१ ॥ और काले तालुए के होने से पुत्र हीना रूखे तलुए के होने से दुःख पाने वाली टेढ़े तलुए के होने से स्त्री दुर्भागा होती है ॥ ८२ ॥

अथ घण्टिकालक्षणम् ।

क्रमसूक्ष्मारुणा वृत्तास्थूला घण्टी शुभा मता ।
अतिस्थूलां प्रलम्बा च कृष्णा नैव शुभा भवेत् ८३

जिस स्त्री की तालुके स्थान में जिव्हा क्रम से सूक्ष्मा तथा अरुण रङ्ग की गोल और मोटी हो तब शुभ फल देने वाली और यदि उक्त स्थानगत जिव्हा अति मोटी और लम्बी या काली हो तब उस स्त्री को अशुभ फल देने वाली होती है ॥ ८३ ॥

अथ वाणीलक्षणम् ।

भवति चेदनिमीलितलोचनं शुभादृशां दरफुल्लकपोलकम् । अलमलक्षितदन्तमुदीरितं पतिहितं सततं स्मितमुत्तमम् ॥ ८४ ॥

जिस स्त्री का मन्द मुसकान सहित आँखों के मीचे

बिना किंचित् कपोलों के बिकसने सहित जिसमें दन्त न दीखे इन गुणों से सहित वर्णोच्चार यानी बतलाना हो हो तब वो सब समय पति के लिए हित करने वाली होती है ॥ ८४ ॥

अथ नासिकालक्षणम् ।

नासिकातु लघुच्छिद्रा समवृत्तपुटा शुभा ।
स्थूलाग्रा मध्यनम्रा च न शस्ता सुभ्रु वो भवेत्८५
लोहिताग्रा कुञ्चिता च महावैधव्यकारिणी ।
नासिका चिपटाकारा प्रलम्बा च कलिप्रिया८६

जिस स्त्री की नासिका समान और गोल नथने वाली और छोटे२ नथनों के छिद्र वाली होवे तब शुभ होती है और मोटे अग्रवाली बीच में नवी यदि स्त्री की नासिका हो तब शुभ नहीं होती है ॥ ८५ ॥ और लाल रङ्ग के अग्रवाली तथा सिमटी हुई नासिका बालकपन से ही स्त्री को वध्यव करने वाली होती है और चिपटाकारा तथा लम्बी नासिका होने से स्त्री कलहप्रिया होती है ॥ ८६ ॥

अथ नेत्रलक्षणम् ।

रक्तान्ते लोचने भद्र तदन्तः कृष्णतारके ।
कम्बुगोक्षीरधवले कोमले कृष्णपक्ष्मणी॥८७॥

अल्पायुरुन्नताक्षी च वृत्ताक्षी कुलटा भवेत् ।
अजोक्षी केकराक्षी च कासराक्षी च दुर्भगा ८८
पिङ्गाक्षी च कपोताक्षी दुःशीला कामवर्जिता ।
काटराक्षी महादुष्टा रक्ताक्षी पतिघातिनी ८९
बिडालाक्षी मजाक्षी च कामिनी कुलनाशिनी ।
वन्ध्या च दत्तकाणाक्षी पुश्चली वामकाणिका
सदा धनवती नारी मधुपिङ्गललोचना ।
पुत्रपौत्रसुखोपेता गदिता पतिसम्मता ॥९१॥

जिस स्त्री के दोनों कोओं में अरुणतासहित और मध्य में काली पुतली वाले शंख औ गो दूध के समान सफेद काले पलक वाले और नम्रता सहित हों तब शुभदायक होते हैं ॥ ८७ ॥ ऊँचे नेत्र होने से स्त्री अल्प आयुष्य वाली और गोल नेत्रों के होने से पुंश्चली होती है और बकरी के समान या ताली अथवा भैंस के तुल्य आँखों के होने से वह स्त्री दुर्भगा होती है ॥ ८८ ॥ और पीले नेत्र वाली और कबूतर की सी आँखों वाली स्त्री दुष्ट स्वभाव वाली और काम से वर्जिता होती है और खोंतर के समान नेत्र वाली स्त्री महादुष्टा और बिलकुल लाज

नेत्रों वाली स्त्री पति को मारने वाली होती है ॥ ८९ ॥ और विडाल (बिलाई) के समान नेत्र तथा हाथी के समान नेत्रवाली स्त्री कुलनाश करने वाली होती है और दहिने नेत्र के काने होने से वन्ध्या और वाम नेत्र के काणे होने से स्त्री पुंश्चली होती है ॥ ९० ॥ यदि मदमाते पीले नेत्र हों तब वह स्त्री धनवती और बेटा नाती वाली अपने पति को प्यारी होती है ॥ ९१ ॥

अथ नेत्रपक्ष्मलक्षणम् ।

कोमलैरसिताभासैः पक्ष्मभिः सुघनैरपि ।
लघु रूपधरै रेव धन्या मान्या पतिप्रिया॥९२॥
रोमहीनैश्च विरलैर्लम्बितैः कपिलैरपि ।
पक्ष्मभिः स्थूलकेशैश्च कामिनी परगामिनी९३

जिस स्त्री के कोमल और काले, सघन और हलके पलक होते हैं वह स्त्री मान्या धन्या और पतिकी प्रिया होती है ॥ ९२ ॥ और जिस स्त्री के पलक रोमों से रहित छिरछिरे लम्बे और माथे के बाल मोटे हों वो स्त्री पर पुरुष गामिनी होती है ॥ ९३ ॥

अथ भ्रुकुटीलक्षणम् ।

वर्तुला कोमला श्यामा भ्रूर्यदा धनुराकृतिः ।

अनंगरंगजननी विज्ञेया मृदुलोमशा ॥९४॥
पिंगला विरला स्थूला सरला मिलिता यदि।
दीर्घलोमा विलोमा च न प्रशस्ता नतभ्रुवः९५

जिसकी भ्रुकुटी (भोंहें) गोल तथा कोमल काली नरम रोमवाली और धनुष्याकार हों वह स्त्री कामकलाओं को उत्पन्न करने वाली होती है॥ ९४ ॥ यदि पीली छिरछिर मोटी सूधी लम्बे रोमों वाली अथवा रोमों से रहित और परस्पर मिली हुई नतभ्रू (स्त्री) की भोंहें हों तब अच्छी नहीं होती हैं॥ ९५ ॥

अथ कर्णलक्षणम्।

प्रलम्बौ वर्तुलाकारौ कर्णौ भद्रफलप्रदौ।
शिरालौ च कृशौ निन्द्यौ शष्कुलीपरिवर्जितौ॥

जिस स्त्री के अत्यन्त लम्बे गोलाकार कर्ण हों तब अत्युत्तम फल देते हैं और यदि नशों से सहित तथा कृश और मध्यकी फेणिका रहितहों तब वे कान निन्द्य होते हैं॥

अथ मस्तकलक्षणम्।

उन्नतस्त्र्यंगुलोभालः कोमलश्च नतभ्रुवाम्।
अर्धचन्द्रनिभो नित्यं सौभाग्यारोग्यवर्द्धकः९७

व्यक्तं स्वस्तिकरेखयाकुलमलं नार्या ललाट-स्थलं सौभाग्यामलभोग्यकृत्तदलिकं लम्बाय-मानं यदि । अद्धा देवरमाशु हन्ति नितरां रो-माकुलं रोगदं रेखाहीनमनंगभंगजनकं ज्ञेयं बुधैः सर्वदा ॥९८॥ करिपुंगवकुंभसमान उत प्रवरोन्नत एव कदम्बनिभः । इह मौलिरजस्र-मिला विमला विविधा बहुधान्ययुता सुदृशः९९ पीनमौलिरतिमानहारिका दारिका कुजनसं-गकारिका । लम्बमौलिरपिसर्वनाशिकाबन्धकी निजकुलान्तकारिका ॥१००॥

जिस स्त्री का उन्नत कोमल और तीन अंगुल से कुछ अधिक चौड़ा अष्टमी के चन्द्रमा के समान माथा हो तब उस स्त्री को सौभाग्यारोग्य बढ़ाने वाला होता है ॥ ९७ ॥ जिस स्त्री के माथे में स्वस्तिक (सातिये) की रेखा हो तब वो स्त्री अमल सौभाग्य भोगों की भोगने वाली होती है यदि ललाट नीचे को लटकता लम्बायमान हो तब वो स्त्री अपने सगे देवर की मारने वाली होती है, यदि रोमोंसे युक्त ललाट हो तब रोगों के देने वाला और यदि रेखों से

रहित बिल्कुल सलपट ललाट हो तब बुध जनों ने कहा है कि वो ललाट काम रङ्गका भङ्ग करनेवाला होता है॥९८॥ और जिस स्त्री का ललाट यदि मत्त हाथी के कुम्भस्थल के समान ऊँचे को उठा हुआ हो अथवा कदम्ब के पुष्प के आकार हो तब वह स्त्री निरन्तर विमलभूमि की पोलन करने वाली और अनेक धनधान्यों की भोगने वाली होती है॥ ९९॥ जिसका माथा पुष्ट होता है वह स्त्री औरों के मानके हरनबाली खोटे पुरुषों के साथ रहने वाली होती है, और लम्बे माथे वाली स्त्री भी सबों की नाश करने वाली अपने कुलभर की अन्त करने वाली होती है॥ १००॥

अथ शिरःकेश लक्षणम्।

केशा यस्या भ्रमरपटलोपेक्षवर्णाः सुवर्णा वक्राकाराः कुवलयदृशः किञ्चिदाकुञ्चिताग्राः। भाग्यं सद्यो ददति विरलाः पिङ्गुलाः स्थूलरूपा रुक्षाकाराः परमलघवो बन्धवैधव्यदुःखम्॥

जिस स्त्री के माथे के केश भ्रमर के समान काले देखने में सुढाल टेढ़े आकार वाले और किंचित् आगे से घुघराले हों तब तत्काल भाग्य बढ़ाने वाले होते हैं यदि रङ्ग के पीले मोटे छिर छिरे रूखे और अति छोटे२ शिरके

बाल हों तब उस स्त्री को बन्धन और वैधव्य दोष करने वाले होते हैं ॥ १ ॥

अथ मशकतिलादिचिन्हलक्षणम् ।

मशकोऽपिललाटपट्टवर्ती यदि जागर्ति स मध्यगो भ्रुवोर्वा । तनुते सुखमर्थराशिभोगं सततं पत्युरपत्यभृत्ययोश्च॥ २॥ मशकोपि कपोलमध्यगामी सुदृशो लोहित एव मिष्टदः स्यात् । हृदयं तिलकेन शोभितं लसुनेनापि च राज्यकारणम् ॥ ३ ॥ लोहितेन तिलकेन मण्डितं सुभ्रुवो हि कुचमण्डलं यदा । जायते किल सुताचतुष्टयं बालकत्रयमुदीरितं तदा॥४॥भवति वामकुचेऽरुणलाञ्छनं शुभदृशस्तिलकं कमलप्रभम् । प्रथमतस्तनयं परिसूय सा कृतिवरं विधवा तदनन्तरम् ॥ ५ ॥ लसति बालमधुव्रतसन्निभं शुभदृशस्तिलकं गुददक्षिणे । नरपतेरबलाकमलालया नृपमपत्यमरं जनयेदलम् ॥६॥ मशकोऽपि च नासिकाग्रगामी सुदृशी विद्रुमकान्तिरर्थदायी । अलिपक्षनवाभ्ररूपधारी पति-

हन्त्री किल पुंश्चली विशेषात् ॥७॥ यदि नाभेरधोभागे तिलकं लान्छनं स्फुटम् । सौभाग्यसूचकं ज्ञेयम् मशको वा नतभ्रुवाम् ॥८॥यदि करे च कपोलतलेऽथवा भवति कण्ठगतं तिलकं तदा श्रुतितलेऽपि च सा पतिबल्लभा वरदृशी मशकामललान्छनैः ॥९॥

जिस स्त्री के ललाट में मस्सा हो अथवा भौंहों के बीच में मस्सा हो तब उस स्त्री को अत्यन्त सुख, धनों के समूह, भोग, और पति पुत्र भृत्यों के सुखको भोगती है २ और यदि स्त्री को कपोल के मध्य में लाल रङ्ग का मस्सा हो तब वांछित पूरण करने वाला होता है और जिस स्त्रीके हृदयमें तिलहो अथवा लसुनहो तब वह स्त्री राजराणी होती है ॥ ३ ॥ यदि लाल रङ्ग का तिल स्त्री के स्तनों के मध्य में हो तब उस स्त्री के चार बेटी और तीन बेटा होते हैं ॥ ४ ॥ और जिस स्त्री के बाम कुच में लाल रङ्ग का तिल कमल के समान होवे तब प्रथम उत्तम पुत्र को उत्पन्न कर के तदनन्तर वह स्त्री बिधवा हो जाती है ॥५॥ और जिस स्त्री की गुदा के दाहिने तरफ छोटासा भौंरा के आकारका तिल हो तब वह स्त्री लक्ष्मीकी निवासस्थान राजाकी पत्नी और शीघ्र ही राजकुमर पुत्र को उत्पन्न करती है ॥ ६ ॥

और जिस स्त्री के नासिका के अग्रभाग पर मूगे के आकार मस्सा हो तब वह धन का देने वाला होता है ॥ ७ ॥ यदि भौंरें के पक्ष समान या नए मेघ के समान वोही मस्सा हो तब वह स्त्री अपने पतिकी मारने वाली पुश्चली (खामिनी) होती है ॥७॥ और जिस स्त्री के नाभि के नीचे प्रत्यक्ष तिल या समा मसा हो तब वो सौभाग्य सूचन करने वाला होता है ॥८॥ और यदि कपोल के नीचे या हाथ पर या कण्ठमें या कानके नीचे तिल हो या मस्सा या लहसन होवे तब वो स्त्री अपने पति की प्रिया और उत्तम नेत्र वाली होती है ॥९॥

अथ कपालेत्रिशूललक्षणम् ।

भालस्थेन त्रिशूलेन शम्भुना निर्मितेन वै ।
यस्याःसालीसहस्राणामीशितामाप्नुयादरम् १०

जिस स्त्री के ललाट में त्रिशूल का चिन्ह होता है वो स्त्री शीघ्र ही एक सहस्र सखी की प्यारी और उनकी स्वामिनी होती है ॥ १० ॥

अथ दन्तशब्दलक्षणम् ।

किटकिटेति कलं कुरुते मिथः शुभदृशः शयने तु रदावली । महदमङ्गलमाह विशेषतः प्रियतमे तनुलक्षणकोविदः ॥११॥

जिस स्त्री के सोते समय दाँतों की किट किट ऐसा शब्द होता हो तब शरीर के लक्षण जानने वालों ने कहा है कि ये दाँतों का किट किटाना पति के वास्ते महदमंगल करने वाला होता है ॥ ११ ॥

अथ ललाटे भगशकटलक्षणम् ।

शकटवद्यदियोनिललाटगो मृगदृशो मृदुलोमगणो भवेत् । वरदुकूलमणिव्रजमण्डिता क्षितिभृतां वनिता वनितावृता ॥१२॥ विलसति भलभाले दक्षिणावर्तरूपः कुवलयनयनायाः कोमलो लोमसङ्घः । नरपतिकुलभर्तुः कामिनी मानिनीनामिह भवति वदान्या सैव धन्या विशेषात् ॥१३॥

जिस स्त्री के ललाट में कोमल लोम गणो से युक्त गाड़े का या योनि (भग) का आकार हो तब वो स्त्री उत्तम दुकूल और मणि व्रज से मंडिता राजा की बनिता (भार्या) और अनेक सखी के बीच में रहने वाली होती है ॥१२॥ और जिस स्त्री के ललाट में दक्षिणावर्त रूप नरम रोमों के युक्त भग का चिन्ह हो वो स्त्री राजाधिराज

की राजरानी और मानिनी स्त्रियों में मान्या और धन्या सर्वोत्तमा होती है ॥ १३ ॥

अथ कण्ठे भ्रमरलक्षणम्

कण्ठावर्ता भवति कुलटा भर्तृहन्तीकुरूपा पृष्ठावर्ता कठिनहृदया स्वामिहन्त्री कुलघ्नी। आवर्तौ वा भवत उदरे द्वावि[1]कोऽपि यस्याः सापि त्याज्या कृतिभिरबला लक्षणज्ञैस्तु दुरात्॥१४॥ सीमन्ते च ललाटे वा कण्ठे वापि नतभ्रुवः। लोम्नावर्तको दक्षी वामी वैधव्यसूचकः॥१५॥

जिसके कण्ठ में भौरी हो वो स्त्री कुलटा (खानिगी) धन की मारने वाली कुत्सितरूपा होती है पीठ में भौरी होने से कठोर हृदय वाली पति को मारने वाली और कुलको नाश करने वाली होती है और जिसके पेट में दो या एक भौरी हो वो भी स्त्री लक्षण के जानने वाले कृति (कुशल) मनुष्यों को त्याग कर देनी चाहिये ॥१४॥ जिसके सीमंत (भाग) में या ललाट में अथवा कण्ठ में दाहिनी या वांई तरफ भौरी होवे वो अवश्य वैधव्य को सूचन करती है॥१५॥

पूर्वोक्तशुभाशुभलक्षणानां कारणम्

याभिरेव वरदो महेश्वरो पूजितःकिलपुरा व्रता-

दिभिः । पार्वतीपरिपूजिता मुदा भक्तियोग-विधिना सुवासिनी ॥१६॥ भूषितामल विभू-षणादिभिः क्षालितं वपुरनेकधा पुरा। तीर्थ-राजपयसा भवन्ति ता लक्षणैरिह शुभैः सुलक्षणाः ॥१७॥ कृतं न हि तपो यया नगज या समाराधितो हरो नहि रविव्रतं नहि कृतं च तीर्थाटनम्। धनं नहि धरामरे परममर्पितं तर्पि-तं गुरोः कुलमिहांगनाभवति सैव दीना गना ॥ १८ ॥

जिन स्त्रियों ने वरों के देने वाले महादेवजी का प्रथम अनेक व्रतादिकों से पूजन किया होता है अथवा भक्तियोग विधि से आनन्दपूर्वक पार्वतीजी का पूजन किया होता है अथवा अनेक तीर्थों के स्नान से जिन्होंने शरीर पवित्र किया होता है वे स्त्री निर्मल भूषणों से भूषिता और समग्र शुभ लक्षणों से सुलक्षणा होती है ॥ १६ ॥ १७ ॥ और जिसने न तो कभी तप किया होता है न कभी पार्वती सहित शिव पूजन किया है न कभी सूर्य का व्रत न कभी तीर्थाटन किया होता है न कभी ब्राह्मणों को धन दिया

होता है और न कभी गुरुकुल को जिसने तृप्त किया होता है वो स्त्री सकल शुभ लक्षणों से हीना होती है ॥ १८ ॥

अथ स्त्री रेखतो पत्युः शुभाशुभफलम् ।

यतः सुलक्षणा रेखा योषा हीनायुष पतिम् ।
दीर्घायुषंसुचरितैः प्रकरोति सुखास्पदम् ॥१९॥
दीर्घायुषं पति पन्तिकुयोगैश्च कुलक्षणैः ।
अतःसुलक्षणा कन्या परिणीया विचक्षणैः२०

जिस स्त्री के सुलक्षण रेखा होती है वो हीनायु पति को दीर्घायु करती है और अपने सुन्दर बर्तावे से पति को सुखित करती है ॥ १९ ॥ और जो कुलक्षण स्त्री होती है वो स्त्री अपने कुलक्षणों से दीर्घायु पति को भी अल्पायु कर देती है इसीसे विलक्षण पुरुषों को चाहिये कि पूर्व ही सकल सुलक्षणों को देख कर कन्या का पाणिग्रहण करना उचित होता है ॥ ३२० ॥

अथ कुलक्षण शान्ति ।

कुलक्षणविलक्षतायदि सुतात्र सञ्जायते श्रुति स्मृतिपथानया परमसोमवारव्रतम् विधाय तदनन्तरं रहसि कारयित्वाच्युतहुमै हरिणा कृती शुभघटेन पाणिग्रहम् ॥ २१ ॥ शुभेऽहनि कु-

मारिकाकनिपीडनं कारयेद्वरेणचिरजीविना पुनरिदंन दोषायते। इदं तुवहुसम्मतं मुनिवरेण गीतं पुनःप्रमाणपटुनादृतं प्रियविनोदकन्दप्रदम् ॥२२॥ कुलक्षणैःकुयोगैश्च लक्षिता वनिता यदा। तस्याःपूर्वाविधानेन विवाहं कारयेद्बुधः ॥२३॥ जीवनाथविदुषाऽत्र कामिनीलक्षणं बुधमनोमुदेमया । स्कन्दकुम्भभवयोर्विवादजं व्यासगीतमखिलंप्रकाशितम् ॥ २४ ॥

जिसके कुलक्षण वाली बेटी हो तव उसे चाहिये कि उस कन्या से श्रुति स्मृतिमार्गानुसार सोमव्रत कराकर तदनन्तर गुप्त स्थान में पीपल से या सालिग्रामजी के साथ अथवा घट के साथ विवाह कराकर पश्चात् उस कन्या का शुभ घड़ी में दीर्घायु वर के साथ पाणिग्रहण करावे तव ये कुलक्षण दोष करने वाले नहीं होते हैं ये ही बात सर्व संमत है और ये ही बात सर्वोत्कृष्ट मुनिश्रेष्ठों ने प्रमाणों के जानने वालों ने कही है इससे ये वर कन्या के लिये आनंद समूह का देने वाला होता है ॥ २१ ॥ २२ ॥ यदि स्त्री कुलक्षण और कुयोगों से लक्षिता होवे तव बुद्धिमान

मनुष्य होवे तो पूर्व कहे प्रकार से विवाह करे ॥२३॥ इस ग्रन्थ के बनाने वाले मुनि जीवनाथजी कहते हैं कि मैंने बुद्धिमान मनुष्यों के आनन्द देने को स्वामि कार्तिक और अगस्त्यजी के विवाद से उत्पन्न हुए व्यासजी के कहे अखिल सिद्धांत का प्रकाश किया है ॥ २४ ॥ इति भाव-कुतूहले चतुर्वेद बनमालि निर्मित भाषानुवादे लक्षणाध्यायो दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

तत्रावस्थामानि

प्रथमं शयनं ज्ञेयं द्वितीयमुपवेशनम् ।
नेत्रपाणिः प्रकाशश्च गमनागमने ततः॥२५॥
सभायांच ततो ज्ञेय आगमो भोजनं तथा ।
नृत्यलिप्सा कौतुकंच निद्रावस्था नभःसदाम्२६

शयन १ उपवेशन २ नेत्रपाणि ३ प्रकाश ४ गमन ५ आगमन ६ सभा ७ आगम ८ भोजन ९ नृत्य लिप्सा १० कौतुक ११ और निद्रा १२ ये ग्रहों की बारह अवस्था होती है ॥ २५ ॥ २६ ॥

अथ ग्रहाणामवस्थानिष्कासनक्रमः ।

ग्रहर्क्षसंख्याखगमाननिघ्नी खेटांशसंख्यायुणि

ताग्रहाणाम्। निजेष्टजंजर्क्षतनुप्रमाणैर्युतार्कत ष्टायनाद्यवस्था ॥ २७॥ शेषं शेषहतं स्वरांक सहितं तष्टं पुनर्भानुना। संक्षेपंगुणशेषितं खलु भवेद्दृष्ट्याद्यवस्था त्रिधा । पंचद्विद्विगुणाक्ष रामगुण वेदाः क्षेपकाङ्का रवेः प्राचीनैर्यवना दिभिः समुदितास्तेऽमीननिबद्धामया ॥२८॥

प्रथम इसमें ये विचार है कि जिस ग्रह की अवस्था निकालनी हो उस ग्रह को देखे कि किस नक्षत्र पर है जिस नक्षत्र पर वो ग्रह वर्तमान हो उस नक्षत्र को अश्विनी से गणना करके देखे कि कितनी संख्याका हुआ उस संख्या को ग्रह की संख्यासे गुणा कर तदन्तर उसे उसी ग्रह की अंश संख्यासे गुणा करे तब जो अंक सिद्धहो उसमें अपनी इष्ट घड़ी तथा जन्म नक्षत्र तथा जन्म लग्न संख्या को सिद्धांक में जोड़दे तब जो अंक सिद्ध हो उसमें बारह का भाग देने से जो अंक भाग देने के पश्चात् शेष रहे उसी संख्या परिमिति ग्रहों को शयन उपवेशन आदि अवस्था जाने अर्थात् एक अंक शेष रहे तब शयन दो अंक शेष रहे तो उपवेशनादि अवस्था क्रम से समझलेनी ॥ २७॥ तदनन्तर संख्या जो पूर्व बारह के भाग दिये पश्चात् जो

अंक शेष रहा है उस अंकको उसी अंकसे गुणा कर तदनंतर बोलते नाम के प्रथमाक्षर के खरांक सहित अंकों को बारह के अंक से भाग देकर शेषित करे तदनन्तर जिस ग्रह की अवस्था निकालनी हो उसी ग्रह के क्षेपकांक को जोड़ कर तीन का भाग देकर शेष रहे अंक का क्रमसे दृष्टि चेष्टा और विचेष्टा नाम की अवस्था जाननी जैसे एक शेष रहने से दृष्टि दो शेष रहने से चेष्टा और तीन या शून्य शेष रहने से विचेष्टा नाम अवस्था जान लेनी और पांच ५ दो २ दो २ तीन ३ पांच तीन ३ तीन ३ और चार ४ क्रम से सूर्यादि ग्रहों के क्षेपकांक होते हैं जैसे सूर्य का क्षेपकांक पांच ५ चन्द्रमा का क्षेपकांक दो २ मङ्गलका क्षेपकांक दो २ बुधका क्षेपकांक तीन ३ बृहस्पति का क्षेपकांक पांच ५ शुक्र का क्षेपकांक तीन ३ शनिका क्षेपकांक तीन ३ और राहु का क्षेपकांक चार ४ होता है ग्रन्थ बनाने वाले जीवनाथ जी आचार्य कहते हैं कि जे प्राचीन यवनाचार्यों ने क्षेपकांक कहे हैं वे ही क्षेपकांक मैंने भी ये क्षेपकांक उन्हीं के कथनानुसार कहे हैं, उदाहरण जैसे श्रावण कृष्ण अष्टमी चन्द्रवार के दिन का इष्ट घड़ी चार ४ नक्षत्र अश्विनी कर्क लग्न का जन्म है सूर्य के सात अंश और सूर्य पुष्प नक्षत्र का है अब हमें सूर्य की

ही अवस्था निकालनी है तो देखो सूर्य पुष्य नक्षत्र का है वो पुष्य अश्विन्यादि संख्या से आठ संख्या का है ग्रह संख्या में सूर्य १ प्रथम संख्या का है उसे नक्षत्र संख्या से गुणा किया तब ८ आठ हुए इसे अंश संख्या सात से ७ गुणा किया तब छप्पन ५६ का अंक सिद्ध हुआ इस अंक में इष्ट घड़ी अंक चार ४ और जन्म नक्षत्र अश्विनी संख्या एक१ और जन्म लग्न कर्क संख्या चार इन सबों को जोड़ दिये तब पैंसठ ६५ अंक सिद्ध हुआ इस सिद्धांक में बारह का भाग दिया तब पाँच ५ अंक शेष रहा तब देखो सूर्य की पांचवी गमन अवस्था सिद्ध हुई अब जो अंक पांच शेष रहा था उसे पांच ५ से ही गुणा किया तब पचीस २५ अंक सिद्ध हुआ उसमें मोहनलाल नाम के प्रथमाक्षर में प्रथम मात्रा (ओ) है उसका स्वरांक चक्र में पांच ५ अंक है वो जोड़ दिया तब तीस ३० अंक सिद्ध हुआ उसमें बारह १२ का भाग देने से शेष अंक छः ६ रहा इसमें सूर्य का चेपकांक पांच ५ के जोड़ने से ग्यारह ११ सिद्ध हुए उसमें तीन ३ का भाग देने से शेषांक दो २ रहे तब चेष्टा अवस्था सिद्ध हुई तब देखो इसका ये निष्कर्ष हुआ कि सूर्य की गमन अवस्था में चेष्टा अवस्था सिद्ध हुई इसी प्रकार चन्द्रमा आदि ग्रहों की भी अवस्था निकालनी ॥ २८ ॥

अथावस्थाफलानि ।

तत्रादौ सूर्यावस्था ॥ त्रिकोणं वा कर्मण्यपि नयतपाणौ दिनमणेः फलंशस्तं ज्ञेयं मदनसदने नन्दनपदे। प्रकाशेमार्तण्डेमृतिपदमपत्त्यं जनिमतां तथा जायायाति व्ययसदनमाने च जनने ॥२९॥ पुण्यबाधाकरः पुण्यभे भोजने कौतुके वैरिभे वैरिहान्ता रविः । सप्तमे पञ्चमे तत्रगो वा भवेदङ्गहा पुत्रहा लिङ्गगोगप्रदः ॥३०॥

यदि सूर्य जन्म समय में नवम पंचम अथवा दशम स्थान में नेत्रपाणि नाम की अवस्था हो तब उस सूर्य का उत्तम फल जानना और जो सातवें या पाँचवे घर में प्रकाश नाम की अवस्था में हो तब वो सूर्य उस मनुष्य के पुत्र की मृत्यु करता है और जन्म समय में यदि सूर्य सप्तम घर में गमन नाम अवस्था में बैठा हो अथवा बारहवें घरमें गमन अवस्थामें बैठा हो तब भी उक्त फल को ही देता है यानी पुत्र की मृत्यु करता है १८ यदि जन्म समय में सूर्य भोजन अवस्थामें तब नवम घरमें बैठा हो तबवो सूर्य पुण्य कर्म की बाधा करता है और छठे घरमें कौतुक अवस्था में

सूर्य बैठा हो तब बैरियों को नाश करता है और जो कौतुक अवस्था में वर्तमान होकर सप्तम या पंचम घर में बैठा हो तब वो सूर्य उस पुरुष के शरीर का बिगाड़ने वाला पुत्र को मारने वाला और विषयेन्द्रिय में रोग करने वाला होता है ॥ ३० ॥

अथ चन्द्रस्य द्वादशावस्थाफलम् ।

चन्द्रस्यद्वादशावस्थाफलं शुक्लदले शुभम् ।
अशुभं कृष्णपक्षे तु विज्ञेयं गणकोत्तमैः ॥३१

चन्द्रमा की द्वादश १२ अवस्थों का फल शुक्लपक्ष में शुभ और कृष्ण पक्ष में अशुभ होता है ऐसा गणकोत्तमों ने कहा है ॥ ३१ ॥

अथ भौमावस्थाफलम् ।

मदननन्दगोऽवनिनन्दनः शयनगश्च कलत्रसुतक्षयम् । प्रथमतःकुरुतेरिपुणेक्षितो रिपुगृहेकरभंगमनंगतः ॥३२॥ यदि युतः शनिनापि च राहुणा शिरसि रोगकरोधरणीसुतः । तनुगतश्चयनेनयने गदंवितनुतेनितरांक्षतमंगिनाम्।३३। अङ्गारकोंगे यदि नेत्रपाणो करोत्यनंगातिशये

नभङ्गम् । भुजङ्गदन्तक्षतपावकाम्बुभयं नगे हानिमिहांगनायाः ॥३४॥ प्रकाशने पञ्चमस प्तमस्थःसुतंनिहन्त्याशु निहन्तिवामाम् । पापोऽन्वितः पापखगान्तराले कुकर्मिणांकेतुवरं करोति ॥ ३५ ॥

और जो मङ्गल सप्तम या पञ्चम घर में शयन नाम अवस्था का होकर बैठा हो तब क्रम से स्त्री को और पुत्रको नाश करता है तदि शयन अवस्था में वर्तमान होकर छठे घरमें मङ्गल स्थित हो उसे शत्रु कोई न देखता होवे तब कामदेव के निमित्त से उस पुरुष के कर (हाथ) का नाश करती है यानी वो पुरुष टोंटा होता है॥३२॥ और जिसकी कुण्डली में शनि और राहुसे युक्त मङ्गल शयन अवस्था में वर्तमान होकर लग्न में बैठा हो तब उस मनुष्य के नेत्रों में रोग और शरीर में घावों को तथा शिरमें पीड़ाको करता है ॥३३॥ और जिस मनुष्य की कुण्डली में मङ्गल नेत्रपाणि अवस्था में होकर सप्तम घर में बैठा हो तब उस मनुष्यको कामदेव के निमित्तसे भङ्ग और सर्प से दाँतों के काटने से या अग्नि से तथा जल से भय करता है और अंगना (पत्नी) का अभाव करता है ॥ ३४ ॥ और जिसके जन्म

समय में प्रकाशन अवस्था में वर्तमान मङ्गल पञ्चम घर में बैठा हो तब शीघ्र ही पुत्र कलत्र (स्त्री) का नाश करता है और यदि मङ्गल पाप ग्रह सहित या पापग्रहों के बीच में होकर प्रकाशन अवस्था में वर्तमान पंचम घर में बैठा होवे तब कुकर्मी मनुष्यों में ध्वजा के समान कुकर्मियों में मुख्य होता है ॥ ३५ ॥

अथ बुधावस्थाफलम् ।

नेत्रपाणौ सुते सौम्ये पुत्रहानिः सुतागमः ।
सभायामेव कन्यानामाधिक्यम् मदने सुते ३६

जिस पुरुषकी कुण्डली में बुध नेत्रपाणि अवस्था में स्थित होकर पंचम घर में स्थित होवे तब पुत्र की हानि और कन्या की प्राप्ति होती है और यदि समानाम अवस्था में स्थित होकर पंचम या सप्तम घर में बुध बैठा हो तब उस पुरुष को सन्तति की ही प्राप्ति होती है ॥ ३६ ॥

अथ गुरोरवस्थाफलम् ।

भवति देवगुरौ यदिभोजने तनुगते मनुजो हि धनुर्धरः । नवमपंचममेधनवर्जितो भवति पापयुतो विसुतो नरः ॥३७॥

जिसकी कुण्डली में यदि भोजन नाम अवस्था में स्थित होकर बृहस्पति लग्न में बैठा हो तब वो मनुष्य धनुधर होता हैं और यदि उक्त अवस्था का होकर बृहस्पति नवम या पंचम स्थान में स्थित होवे तब वो धनहीन होता है और पापग्रह युक्त बृहस्पति भोजन अवस्था में वर्तमान होकर नवम, पंचम भवन में बैठे तब वो मनुष्य पुत्र सन्तति से रहित होता है ॥ ३७ ॥

अथ शुक्रावस्थाफलम् ।

तनुगृहे मदने दशमेसितो नयनपाणिगतो यदि जन्मनि । शुभमतीवफलं तनुते बलं दशनभङ्गम नङ्गविवर्धनम् ॥३८॥

जिसके जन्म समय में नयन पाणि नाम अवस्था में होकर शुक्र लग्न में या सप्तम घर में अथवा दशम घर में स्थित होता हैं तब अति शुभफल को देता है और बल को बढ़ाता है काम देव की वृद्धि करता है परन्तु उस मनुष्य के थोड़ी अवस्था में ही दाँत उखड़ जाते हैं ॥ ३८ ॥

अथ शनेरवस्था फलम् ।

यत्रकुत्रस्थितो मन्दो जन्मकाले विशेषतः । अवस्थानामसदृशंवितनोतिशुभाशुभम् ॥३९॥

जन्म समय में जिस मनुष्य के चाहे किसी स्थान में शनि बैठा हो तब वो जिस शयनादि अवस्था का होकर बैठा हो तो उसी अवस्थाके नामके तुल्य फलको देता है।

अथ राहोरवस्थाफलम्।

नवमे मदने वापिराहुराहुरिहांगनाम्।
महान्तोनिद्रितोऽवश्यम् पुण्यक्षेत्रनिवासिताम्॥
द्वितीये द्वादशे वापि लाभे वा सिंहिकासुते।
बसुधां भ्रमते मर्त्यो विधनः शयने भवेत्॥४१॥
निजक्षेत्रे तुंगे कबिबुधगृहेमित्रभवने स्ववर्गेस-
द्वर्गेतमसि शयने जन्मसमये। फलं पूर्णं प्राहुः
कथितभवनादन्यभवने तदा दुष्टप्रांचस्तदिह
शिखिनो राहुवदिदम् ॥४२॥

और श्रेष्ठ पुरुष ऐसा कहते हैं कि जो निद्रावस्था में वर्तमान राहु यदि नवम या पाँचवें घर में बैठा होवे तब वो पुरुष अवश्यही पवित्र क्षेत्रके निवास को पाता है ४० और जो शयन अवस्था में वर्तमान होकर राहु लग्न से दूसरे बारहवें या ग्यारहवें घरमें बैठाहो तब निर्धन होकर वो मनुष्य भूमि में भ्रमण करता डोलता है ॥ ४१ ॥ जिस

मनुष्य की कुण्डली में राहु अपने क्षेत्र (कन्याराशि) का अथवा अपने उच्च (मिथुन) का या शुक्र अथवा बुद्ध के घर का या अपने मित्र के घर का अथवा अपने वर्ग का अथवा शुभग्रह के षड्वर्ग का होकर शयन अवस्था में वर्तमान होता है तब तो राहु पूर्ण फल देता है और उक्त स्थानों को छोड़कर किसी अन्य भवन में राहु बैठा होवे तब अनिष्ट फल को देता है पूर्वाचार्यों ने कहा है कि केतु का भी राहु के समान ही फल होता है ऐसा समझ लेना।

अथ विशेषफलानि।

यदि निद्रागतः पापः सप्तमे पापपीडतः।
तदाजायाविनाशःस्याच्छुभयोगे क्षयान्नहि ४३
निद्रितो रिपुगेहस्थो रिपुयुक्तेक्षितो मदे।
भार्य्याविनश्यति क्षिप्रं विधिना रक्षितापिचेत्
शुभयोगेक्षणादेका विनश्यति परानहि।
शुभाशुभदृशा भार्य्या कष्टयुक्तानृणां भवेत् ५४

यदि पाप ग्रहों में से कोई ग्रह शयन अवस्थामें होकर सप्तम घर में किसी अन्य पापग्रह से पीड़ित होकर पापग्रह बैठा हो तब पत्नी का विनाश होता है और जो कोई शुभ

ग्रह उसे देखता हो तब पत्नी मरणादि अशुभ फल नहीं होता है ॥४३॥ निद्रा अवस्था में वर्तमान जो ग्रह सप्तम घर में स्थित होवे उसे कोई उसका शत्रु ग्रह देखता होवे या शत्रु ग्रह समीप होवे तब उस पुरुष की पत्नी यदि दैव से भी रक्षित हो तब भी मर जाती है ॥४४॥ भार्या को मारने वाले ग्रह को यदि कोई एक शुभ ग्रह देखता होवे अथवा शुभ ग्रह साथ बैठा हो तब एक पत्नी मर जाती है दूसरी भार्या नहीं और जो शुभ और अशुभ दोनों ग्रह उसे देखते हों तब उस पुरुष की पत्नी सब समय कष्टयुक्त रहती है मरती नहीं है ॥ ४५ ॥

अथ पुत्रसुखासुखयोगः ।

अपत्यभावे यदि तुंगगेहे निजालय पापयुते क्षितश्चेत् । निद्रागतोऽपत्यविनाशकारी शुभेक्षितश्चैकसुतस्यहन्ता ॥४६॥

जिस मनुष्य के लग्न से पंचम घर में उच्च को होकर अथवा स्वक्षेत्री होकर कोई ग्रह शयनावस्था में स्थित हो कर बैठा हो उसे पापग्रह देखता हो अथवा पापग्रह साथ बैठा हो तब वो ग्रह उस पुरुष के पुत्र का नाश कर-

नेवाला होता है और जो उसे शुभ ग्रह देखता हो तब एक पुत्र का नाश करने वाला होता है ॥४६॥

अथाल्पमृत्युयोगः

राहुणा सहितौ यस्यनिधनस्थौ कुजार्कजौ।
अल्पमृत्युर्भवेत्तस्य शस्त्रघातान्न संशयः ॥४७॥
निधनेऽपि शुभो यस्य पापारिग्रहवीक्षितः।
तदामृत्युर्विजानीयादाहवे शस्त्रपीडनात्॥४८॥

जिस मनुष्य के जन्म समय में निद्रावस्था वाले मंगल और शनि दोनों राहु से युक्त होकर लग्न से अष्टम घरमें बैठे हों तब उस मनुष्यकी थोरी अवस्था में ही शस्त्र की चोट लगकर मृत्यु होती है ॥४७॥ और इसी प्रकार जिसकी जन्म कुण्डली में कोई शुभ ग्रह निद्रावस्था में वर्तमान होकर लग्न से अष्टम स्थान में बैठा हो उसे कोई पाप ग्रह या उसका शत्रु ग्रह देखता हो तब भी उस मनुष्यकी संग्राम में शस्त्र से ही मृत्यु होती है ॥४८॥

अथ शत्रुतीर्थकृतौ मृत्युयोगौ

यदा निद्रायुक्तो निधनभवनं पापमिलितः शयानो वा मृत्युं व्रजतिरिपुकोपेन मनुजः। शुभैर्दृ

ष्टो युक्तो निजपतियुतो वान्तसमये नरो गंगा-
मेत्य ब्रजति हरिसायुज्यपदवीम् ॥ ४९ ॥

जब निद्रा अवस्था में वर्तमान अथवा शयन अवस्था मेंवर्तमान होकर कोई शुभ ग्रह पाप ग्रह सहित लग्नसे अष्टम घरमें बैठा होवे तबवो मनुष्य शत्रुके कोपसे मृत्युपाता है और जो कोई पाप ग्रह निद्रा अवस्थामें या शयन अवस्था में स्थित होकर अष्टम घरमें स्थितहो उसे कोई शुभ ग्रह देखता होवे या कोई शुभ ग्रह उसके समीप बैठाहो अथवा अष्टमेश ग्रह उसके पास बैठा होवे तब वो मनुष्य मरने के समय गङ्गा तटपर देह त्याग कर भगवान की सायुज्य (भगवानके अंगमें लीन) गति को प्राप्त होता है ॥४९॥

अथोत्तमक्षेत्रप्राप्तियोगः

यदापश्येदङ्गं तनुभवननाथोष्टमपतिर्मूर्तिं धर्मा-
धीशो जनुषि च तपःस्थानमथवा । शुभाभ्या-
माक्रान्तं नवमभवनं पापरहितं वरक्षेत्रं प्राप्य-
ब्रजतिमनुजो मोक्षपदवीम् ॥ ५० ॥

यदि लग्नेश ग्रह तो लग्न को देखता हो और अष्टमेश ग्रह अष्टम घरको देखता हो अथवा नवें घरका स्वामी नवें घरको देखता हो और उस नवम घरमें दो शुभ

ग्रह बैठे हों और पापग्रह कोई नवें घर में बैठा न हो तब वो मनुष्य इस योगके होनेसे किसी पुण्य तीर्थमें देह त्याग करके मोक्ष पाता है ॥ ५०॥ इति भावकुतूहलजातके चतुर्वेद वनमालिकृते भाषानुवादे एकादशोध्यायः ॥११॥

अथ ग्रहाणां प्रत्येकावस्थाफलाध्यायः

तत्रादौ सूर्यस्य

मंदाग्निरोगी बहुधा नराणांस्थूलत्वमङ्घ्रेरपि पित्तकोपः। व्रणंगुदे शूलमुरःप्रदेशे यदोष्णभानौ शयनं प्रयाते ॥ ५१ ॥ दरिद्रताभारविहारशाली विवादविद्या भिरतो नरः स्यात्। कठोर चित्तः खलु नष्टवित्तः सूर्ये यदा चेदुपवेशनस्थे ॥ ५२ ॥ नरः सदानन्द धरो विवेकी परोपकारी बलवित्तयुक्तः । महासुखी राज कृपाभिमानी दिवाधिनाथे यदि नेत्रपाणौ ॥ ५३ ॥ उदारचित्तः परिपूर्ण वित्तः सभासु वक्ता बहु पुण्यकर्ता। महाबली सुन्दर रूपशाली प्रकाशने जन्मनि पद्मिनीशे ॥ ५४ ॥ प्रवासशाली किल दुःख माली सदालसी सोध-

नवर्जितश्च। भयातुरः कोपपरो विशेषाद्दिवाधिनाथे गमने मनुष्यः॥ ५५॥ परदाररतो जनतारहितो बहुधा गमने गमनाभिरुचिः। कृपणः खलताकुशलो मलिनो दिवसाधिपतौ मनुजः कुमतिः॥ ५६॥ सभागते हिते नरः परोपकारतत्परः सदार्थरत्नपूरितो दिवाकरे गुणाकरः। वसुन्धरा नवाम्बरा लयान्वितो महाबली विचित्र मित्रवत्सलः कृपाकलाधरः परः॥ ५७॥ क्षोभितो रिपुगणैः सदा नरश्चंचलः खलमतिः कृशस्तथा। धर्मकर्मरहितो मदोद्धतश्चागमे-दिनपतौयदा तदा॥ ५८॥ सदांगसन्धिवेदनापारांगनाधनक्षयो बलक्षयः पदे पदे यदातदा हि भोजने। असत्पथाच्छिरोव्यथा तदा बृथान्नभोजनं स्वावसत्कथारतिः कुमार्गगामिनी मतिः॥५९॥ विज्ञलोकैःसदा मंडतः पंडितः काव्यविद्यानवद्यप्रलापान्नित। राजपूज्यो धरमंडले सर्वदानृत्यलिप्सागते पद्मिनीनायके।६०।

सर्वदानन्दधर्ता जनो ज्ञानवान् यज्ञकर्ता धराधी शसङ्गस्थितः पद्मबन्धावरातीभपञ्चाननः काव्यविद्याप्रलापी मुदा कौतुके ॥६१॥ निद्राभरारक्तनिभे भवेतां निद्रागते लोचनपद्मयुग्मे। रवौ विदेशे वसतिर्जनस्य कलत्रहानिः कतिधार्थनाशः ॥ ६२ ॥

जब सूर्य शयन अवस्थामें बैठा होता है चाहे किसी घर में बैठा होवे तब वो मनुष्य मंदाग्नि रोगवाला पित्तके कोप से युक्त स्थूल जिसके पांव गुदामें जिसके व्रण (घाव) और उरके स्थानमें शूलवाला होता है ॥५१॥ और जब उपवेशन नाम अवस्था में बैठा होता है चाहे किसी घरमें बैठा हो तब वो पुरुष महा दरिद्रा बोझ का उठाने वाला (पल्लेदार) विवाद विद्या में निरत, कठोर चित्तवाला और धनका नाश करने वाला होताहै ॥ ५२ ॥ और जब सूर्य नेत्रपाणि नाम अवस्था में बैठा होता है चाहे किसी घरमें बैठा होवे तब वो मनुष्य सदा आनन्दसंयुक्त बड़ा विवेकी परोपकार करनेवाला बलसे और धनसे युक्त महा सुखका भोगनेवाला और राजाके कृपा पात्रका अपने मनमें अभिमान रखनेवाला होताहै ॥ ५३ ॥ और जिस पुरुष के जन्म समय में

सूर्य प्रकाश अवस्थामें बैठा होता है चाहे किसी घरमें बैठा होवे तब वो पुरुष बड़े उदारचित्त वाला धन से परिपूर्ण सभामें बोलने वाला अनेक प्रकार धर्म कर्मोंका करनेवाला बड़ा बलवान् बड़ा और रूपवान् होता है ॥५४॥ और जिस मनुष्य के जन्म समय में सूर्य गमन अवस्था में स्थित होता है चाहे कहीं बैठा हो तब वो मनुष्य सर्वत्र प्रकाश करनेवाला अनेक प्रकार दुःख पाने वाला बड़ा आलसी अशुद्धतासे रहने वाला बड़ा डरपोंक और सब समय कोप-युक्त होता है ॥ ५५ ॥ और जिस पुरुष के जन्म समय में सूर्य गमन अवस्थामें बैठा होता है चाहे किसी घरमें बैठा हो तब वो मनुष्य परस्त्रियों से गमन करने वाला सब समय इकला रहनेवाला गमन करनेमें रुचि रखनेवाला बड़ा कृपण दुष्टता करनेमें बड़ा कुशल सब समय मलिन रहने वाला और कुबुद्धि होता है॥५६॥ और जिस पुरुष के सूर्य सभा अवस्था में बैठा होता चाहे किसी स्थानमें बैठा हो तब वो मनुष्य परोपकार करनेमें तत्पर सदा धन रत्नोंसे परिपूर्ण गुणोंकी खान नवीन वस्त्र और दिव्य महल मंदिरोंका रहने वालाबड़ा बलवान अनेक मित्रवाला और अनेक प्रकार कला और दया रखने वाला होता है ॥५७॥ और जिसके सूर्य आगम अवस्था में बैठा होता है चाहे किसी अवस्था में स्थित हो तब वो मनुष्य शत्रु के गणोंसे क्षोभ पाने वाला बड़ा चंचल

स्वल बुद्धि वाला अति दुर्बल धर्म कर्म से रहित और मद से उद्धत होता है ।५८॥ और जिस पुरुष के जन्म समय में सूर्य भोजन अवस्था में होता है चाहे किसी घर में बैठा हो तब वो पुरुष गठिया वायु के रोग से युक्त पर स्त्री गामी उन्हीं के निमित्त धनव्यय करने वाला बल से हीन असन्मार्ग का चलने वाला मस्तक की व्यथा से युक्त वृथा अन्न का भोजन करने वाला दुष्टों की चर्चा करने वाला और कुमार्ग में गमन करने वाली बुद्धि रखने वाला होता है ५९

और जिस मनुष्य का सूर्य नृत्यलिप्सानाम अवस्था में स्थित हे ता है चाहे किसी घर में बैठा हो तब वो पण्डित पुरुषों के साथ सदा रहने वाला बड़ा पण्डित निर्दोष काव्य विद्या का जानने वाला और राजा से पूजा पाने वाला होता है ॥ ६० ॥ जिस मनुष्य की कुण्डली में कौतुक अवस्था में सूर्य होकर चाहे कहीं बैठा होवे तब सब समय आनन्द का धारण करने वाला बड़ा ज्ञानवान् यज्ञ करने वाला शत्रु रूप हाथियों के मारने में सिंह के समान काव्य विद्या का कहने वाला राजा के घर में निवास करने वाला होता है ॥६१॥ और जिस मनुष्य की कुण्डली में सूर्य निद्रा अवस्था में होकर किसी स्थान में बैठा हो तब निद्रा भरे नेत्रों वाला परदेश का निवासी

स्त्री से रहित और अनेक प्रकार धन के नाश से युक्त होता है ॥ ६२ ॥

अथ चन्द्रावस्थाफलम् ।

जनुःकाले क्षपानाथे शयनं चेद्गुपागते । मानी शीतप्रधानी च कामीवित्तविनाशकः॥ ६३॥रोगर्दितोमंदमतिर्विशेषाद्वित्तेनहीनोमनुजःकठोरः अपायकारीपवित्तहारी क्षपाकरे चेदुपवेशनस्थे ॥६४॥ नेत्रपाणौक्षपानाथे महारोगी नरो भवेत् । अनल्पजल्पको धूर्तः कुकर्मनिरतस्सदा ॥६५॥ यदा राकानाथे गतवति विकाशं च जनने विकाशं संसारे विमलगुणराशेरवनिपात् नवा शाला माला करितुरगलक्ष्म्या परिवृता विभूषा योषाभिः सुखमनुदिनं नीर्थगमनम्६६ सितेतरे पापरतो निशाकरे विशेषतः क्रूरतरो नरो भवेत् । सदाक्षिरोगैः परिपीड्यमानो वलक्षपक्षे गमने भयातुरः॥६७॥विधवागमनेमानी पादरोगी नरो भवेत् । गुप्तपापरतो दीनो मति-

तो षविवर्जितः॥६८॥सकलजनव दान्यो राज-राजेन्द्रमान्यो रतिपतिसमकान्तिः शान्तिकृत् कामनीनाम् सर्पादिसदर्सि याते चारु बिबे शशांके भवति परमरीतिप्रीतिविज्ञो गुणज्ञः ॥६९॥विधवागमने मर्त्यो वाचालो धर्म पूरि-तः। कृष्णपक्षेद्विभार्यः स्याद्रोगी दुष्टतरो नरः ॥७०॥भोजने जनुषि पूर्णचन्द्रमा मानयानजन तासुखंनृणाम्।आतनोति बनितासुतासुखंसर्वमे-व नसितेतरे शुभम्॥७१॥ नृत्यलिप्सागतेचन्द्रे सबले बलवान्नरः। गीतज्ञो हि रसज्ञश्च कृष्णे पापकरो भवेत॥७२॥कौतुकभवनं गतवति चंद्रे भवति नृपत्वंवा धनवत्त्वम्। कामकलासु सदा कुशलत्वं वारवधूरतिरमणपटुत्वम्॥७३॥ निद्रा गते जन्मनि मानवानां कलाधरे जीवयुते महत्वम्। यदा गुणैः सञ्चितवित्तनाशः शिवालयेरौति विचित्रमुच्चैः॥७४॥

जिस मनुष्य के जन्म समय में चन्द्रमा शयन अवस्था में स्थित होकर चाहे किसी घर में बैठा होवे तब वो मनुष्य बड़ा अभिमानी शीत प्रधान बड़ा कामी और धन का नाश करने वाला होता है ॥ ६३ ॥ और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा उपवेशन अवस्था में होता है वो मनुष्य रोगों से पीड़ित मन्दबुद्धि वाला धन से हीन बड़ा कठोर वियोग करने वाला और दूसरे के धनका हरने वाला होता है ॥ ६४ ॥ और जिसकी कुण्डली में चन्द्रमा नेत्रपाणि नाम अवस्था में बैठा होकर चाहे किसी घर में बैठा हो तब वो मनुष्य बड़ा रोगी अत्यन्त निरर्थक बोलने वाला बड़ा धूर्त और कुकर्म करने में निरत होता है ॥६५॥ और जिसके जन्म समय में विकास अवस्था में होकर चन्द्रमा चाहे किसी अवस्था में बैठा हो तब वो पुरुष किसी विमल गुण युक्त राजा के सम्बन्ध से विकास (गुणप्रकाश) को पाता है और नवीन शालाओं के समुदाय के स्वाम्य को तथा अश्व गजों की शोभा से युक्त भूषण और दिव्य स्त्रियों के सुख का भोगने वाला और सब समय तीर्थों में विचरने वाला होता है ॥ ६६ ॥ जिस मनुष्य के जन्म कुण्डली में चन्द्रमा चाहे किसी अवस्था में होकर कृष्णरज का आगमन अवस्था में बैठा

हो तब वो मनुष्य पाप करने में निरत और विशेष कर क्रूर होता है और यदि शुक्ल पक्षका चन्द्रमा आगमन अवस्था में बैठा हो तब वो मनुष्य सदा नेत्रोंका रोगी और भयभीत होता है ॥ ६७ ॥ और जिसकी कुण्डली में चन्द्रमा आगमन अवस्था में होकर किसी स्थान में बैठा हो वो मनुष्य बड़ा अभिमानी पावों में रोगवाला गुप्त पापों के करने में निरत, बड़ा दीन और बुद्धि सन्तोष से रहित होता है ॥ ६८ ॥ और जिस मनुष्य का पूर्ण चन्द्रमा सभा अवस्था में स्थित होकर चाहे किसी घरमें बैठा हो तब वो मनुष्य सब मनुष्योंमें उत्तम सत्यवक्ता राजराजेंद्रों से मान पानेवाला कामदेव के समान सुंदर कामिनी स्त्रियों की शान्ति करने वाला उत्तम रीति और प्रीति का जानने वाला बड़ा गुणज्ञ होता है ॥ ६९ ॥ और जिसका पूर्ण चन्द्रमा आगम अवस्थाका होकर चाहे कहीं बैठा हो तब वो मनुष्य बड़ा वाचाल (व्यर्थालाप करने वाला) धर्म से पूर्ण होता है और यदि क्षीण चन्द्रमा आगम अवस्था का होकर बैठा हो तब वो पुरुष दो भार्यावाला सदा रोगी और अत्यन्त दुष्ट होता है ॥ ७० ॥ और जिसका पूर्ण चन्द्रमा भोजन अवस्थाका होकर बैठा हो तब उस मनुष्य

को मान यान स्त्री और जन समूह से सुख पानेवाला होता है और यदि चन्द्रमा क्षीण होवे तब विपरीत (उलटा) फल समझना चाहिये ॥ ७१ ॥ और जिसकी कुण्डली में नृत्यलिप्सा नाम अवस्था में वर्तमान चन्द्रमा बलवान् होकर बैठा हो तब वो मनुष्य बड़ा बलवान् गानविद्या का जाननेवाला और रसज्ञ होता है और कृष्ण पक्ष के जन्म होने से पाप करनेवाला होता है ॥ ७२ ॥ जिसका चन्द्रमा कौतुक अवस्थामें होवे तब वो मनुष्य राजा अथवा धनवान् काम कला में सदा कुशल और वेश्या स्त्रियों के साथ रमण करने में प्रवीण होता हैं ॥ ७३ ॥ और जिनके चन्द्रमा निद्रा अवस्था में बृहस्पति के साथ बैठा होता है तब वो मनुष्य गुणों के निमित्त से महत्व पाने वाला संचित धनका नाश करने वाला और शिवजी के मन्दिर में ऊंचे स्वर में विचित्र स्तुति के शब्द का करने वाला होता है ॥ ७४ ॥ इति चन्द्रावस्थाफलम् ॥

अथ भौमावस्थाफलम्

शयने वसुधापुत्रे जनुरंगे जनो भवेत् । बहुना कण्डुना युक्तो दद्रुणा च विशेषतः ॥ ७५ ॥ बली सदा पापरतो नरः स्यादसत्यवादी नितरां प्रगल्भः । धनेन पूर्णो निजधर्म

हीनो धरासुते चेद्द्यूनेशनस्थे॥७६॥यदा भूमिसुते लग्ने नेत्रपाणिमुपागते। दरिद्रता सदा पुंसामन्यभे नगरेशता॥७७॥ प्रकाशे गुणस्यापि वासः प्रवासे धराधीशभर्तुःसदा मानवृद्धिः। सुते भूसुतं पुत्रकान्तावियोगो युते राहुणा दारुणा वा निपातः॥७८॥गमने गमनं कुरुतेऽनुदिनं व्रणजालभयं कनिताकलहम्। बहुदद्रुकण्डुभयंबहुधा वसुधातनयो वसुहानिमरेः॥७९॥ आगमने गुणशाली ना मणिमाली करालकरवाली। गजगन्ता रिपुहन्ता परिजनसन्तापहारकोभौमे॥८०॥तुंगेयुद्धकलाकलापकुशलो धर्मध्वजोवित्तपः कोणेभूमिसुते सभामुपगते विद्याविहीनः पुमान्। अन्तेऽपत्यकलत्रमित्ररहितः प्रोक्तेतरस्थानगे वश्यंराजसभाबुधो बहुधनीमानीचदानीजनः॥८१॥ आगमे भवतिभूमिजे जनो धर्मकर्मरहितो गदातुरः। कर्णमूलगुरुशूलरोगवानेककातरमतिः कुसङ्गमी॥८२॥ भोजने मिष्टभोजी

च जनने सबले कुजे। नीचकर्मकरो नित्य मनुजो मानवर्जितः ॥ ८३ ॥ नृत्यलिप्सागते भूसुते जन्मिनामिन्दिरा शिरायातिभूषेःपतेः। स्वर्ण-रत्नप्रवालैः सदा मंडिता वासशाला विशाला नराणां भवेत् ॥ ८४ ॥ कौतुकीभवति कौतुके कुजे मित्रपुत्रपरिपूरितोजनः। उच्चगे नृपतिगेह पण्डितो मंडितो बुधवरैर्गुणाकरैः ॥८५॥ निद्रा वस्थागते भौमे क्रोधीधीधनवर्जितः। धूर्तो धर्म-परिभ्रष्टो मनुष्यो गदपीड़ितः ॥८६॥

जिसके जन्म समय में मंगल शयन अवस्था में वर्तमान होकर जन्म लग्न में बैठा हो वो मनुष्य खुजली और अत्यन्त दादसे युक्त होता है ॥ ७५ ॥ और जिसके मंगल उपवेशन अवस्थामें होता है तब वो मनुष्य बड़ा बलवान सदा पाप करने वाला झूठ बोलनेवाला बड़ा प्रगल्भ धन से पूर्ण और स्वधर्म से हीन होता है ॥ ७६ ॥ और जो मंगल नेत्र-पाणि अवस्था में वर्तमान होकर लग्नमें वर्तमान होवे तब वो मनुष्य दरिद्रता युक्त होता है, यदि लग्न से व्यतिरिक्त किसी अन्य स्थान में स्थित हो तब वो मनुष्य किसी नगर का

स्वामी होता है ॥७७॥ और जिसके मङ्गल प्रकाश अवस्था में होकर लग्न से पंचम घर में स्थित होता है तब वो मनुष्य सब समय प्रदेशमें निवास करने वाला गुणरहित होने पर भी राजासे मानवृद्धि पाने वाला होता है, यदि राहुयुक्त मङ्गल होवे तब पुत्रसे और स्त्रीसे वियोग पाता है और वो पुरुष वृक्ष से गिरने अथवा लाठी की चोट से दुःख पाने वाला होता है ॥७८॥ और जिसकी कुण्डलीमें मङ्गल गमन अवस्था में बैठा होवे तब वो मनुष्य नित्य गमन करने वाला घावों के भय से युक्त स्त्री से कलह करने वाला दाद और खाज से युक्त और शास्त्र से भय पाने वाला होता है ॥७९॥ और जिस मनुष्यके जन्म समय में मङ्गल आगमन अवस्था में होता है वो मनुष्य गुणों से शोभा पाने वाला मणियों की माला पहिरने वाला तीक्ष्ण खड्ग धारण करने वाला हाथीपर बैठने वाला शत्रु जनों का मारने वाला और अपने कुलके सन्तापका हरनेवाला होता है ॥ ८० ॥ जिसकी कुण्डली में मङ्गल उच्च का होकर नवम पंचम घरमें सभा अवस्था में बैठा हो तब वो मनुष्य युद्धकला के समुदाय में बड़ा प्रवीण, बड़ा धर्मध्वज, (धर्मसहित) धन का पालन करने वाला, विद्या से रहित होता है और जो बारहवें घर में मङ्गल उक्त अवस्था का होकर बैठा हो तब पुत्र स्त्री

और मित्रसे रहित होता है और उक्त स्थानोंसे अन्य किसी स्थानमें उक्त अवस्था में मङ्गल के बैठने से मनुष्य अवश्यही राजसभा में बैठनेवाला बड़ा बुद्धिमान धनसम्पन्न मान और दान करने वाला होता है ॥८१॥ यदि पुरुष के जन्म समयमें मङ्गल आगम नाम अवस्थामें होवे तब वो मनुष्य धर्म कर्मसे रहित रोगसे दुःख पाने वाला कर्णशूल रोग तथा बड़े भारी शूल राग से युक्त कातर बुद्धि वाला और दुष्ट पुरुषोंका संग करने वाला होता है ॥८२॥ और जिस मनुष्य के जन्म समय में आगम नाम अवस्था में बलवान् होकर मङ्गल बैठा होताहै वो मनुष्य मीठे पदार्थोंका भोजन करने वाला नीच कर्मों का करने वाला और मानसे रहित होता है ॥८३॥ और जिनकी कुण्डली में नृत्यलिप्सा नाम अवस्था में मङ्गल वर्तमान होवे तब उस मनुष्यको राजा से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है और स्वर्ण रत्न और मूंगों से सुशोभिता अति विशाला शालाओं में विराजमान होनेवाला होता है ॥ ८४ ॥ और जिसके जन्म समय में कौतुक नाम अवस्था में मङ्गल बैठा हो तब वो पुरुष बड़े कौतुकों का करने वाला और मित्र पुरुषों से परिपूरित होताहै और यदि उच्चका मङ्गल कौतुक अवस्थामें बैठे तब वो मनुष्य राजाओंके घरमें रहने वाला बड़ा पण्डित और गुणी बुद्धिमान

मनुष्यों से भूषित होता है।८५॥ और जिसके जन्म समय में मङ्गल निद्रा अवस्था में होता है वो मनुष्य बड़ा क्रोधी बुद्धि से धन से वर्जित बड़ा धूर्त धर्म से वर्जित और रोगों से पीडित होता है॥ ८६॥

अथ बुधावस्थाफलम्।

बुधातुरो भवेदंगे खञ्जा गुंजानिभेक्षणः। जन्मभे लम्पटो धूर्तो मनुजः शयने बुधे॥८७॥ शशाङ्कपुत्रे जनुरङ्गगेहे यदौपवेशे गुणराशिपूर्णः। पापेक्षिते पापयुते दरिद्रो हितोच्चभे वित्तसुखी मनुष्यः॥८८॥ विद्याविवेकरहितो हिततोषहीनो मानी जनो भवति चन्द्रसुतेऽक्षिपाणौ। पुत्रालये सुतकलत्रसुखेन हीनः कन्याप्रजो नृपतिगेहबुधो वरार्य्यः॥ ८९॥ दाता दयालुः खलु पुण्यकर्ता विकासने चन्द्रसुते मनुष्यः। अनेकविद्यार्णवपारगन्ताविवेकपूर्णः खलगर्वहन्ता॥९०॥ गमनागमने भवतो गमने बहुधासुवधावसुधाधिपतः।भवनेचविचित्र-

मलं रमया विदि नुश्चजनुःसमये नितरां ।९१।
सपदि विदि जनानामुच्चभे जन्मकाले सदसि
धनसमृद्धिः सर्वदा पुण्यबृद्धिः। धनपतिसमता
वा भूपता मन्त्रिता वा हरिहर पदभक्तिः सा-
त्विकी मुक्तिरद्धा ॥ ९२ ॥ आगमे जनुषि
जन्मिनां यदा चन्द्रजे भवति हीनसेवया। अर्थ-
सिद्धरपि पुत्रयुग्मता बालिका भवति मानदा-
यिका ॥९३॥ भोजने चन्द्रजे जन्मकाले यदा
जन्मिनामर्थहानिः सदा वादतः। राजभीत्या
कृशत्वं चलत्वं मतेरङ्गसङ्गा न जाया न माया-
सुखम् ॥ ९४ ॥ नृत्यलिप्सागते चन्द्रजे मानवो
मानयानप्रवालव्रजै संयुतः। मित्रपुत्रप्रतापैः
सभापण्डितः पापभे वारवामारतेर्लम्पटः ॥९५॥
कौतुके चन्द्रजे जन्मकाले नृणामंगभे गीतवि-
द्यानवद्या भवेत्। सप्तमे नैधने वारवध्वा रतिः
पुण्यभे पुण्ययुक्ता जनिः सद्गतिः ॥ ९६ ॥
निद्राश्रितं चन्द्रसुतेन मुद्रा सुखं सदा व्याधि-

समाधियोगः। सहोत्थवैकल्पमनल्पतापो निजेन वादी धनमाननाशः ॥ ९७ ॥

जिसके जन्म समय में बुध शयन अवस्था में होकर लग्नमें बैठा होता है वो मनुष्य सदा भूखसे पीड़ित पाँवोंसे खेज (लूला) चिरमिटी के से नेत्रों वाला बड़ा कामी और महाधूर्त होता है ॥ ८७ ॥ और जो बुध उपवेशन अवस्था में वर्तमान होकर लग्न में स्थित होवे तब वो मनुष्य गुणों की राशि से परिपूर्ण होता है और जो पापग्रह जिसे देखते हों या पापग्रहों से युक्त होकर बुध उपवेशनावस्था में हो तब वो मनुष्य दरिद्री होता है और मित्र क्षेत्री या अपने उच्च का होकर यदि उपवेशनावस्था में बुध होवे तब वो मनुष्य धन के निमित्त से सुख पाने वाला होता है ॥८८॥ और जिसके जन्म समय में बुध नेत्रपाणि अवस्थामें होकर किसी स्थान में हो तब वो मनुष्य विद्या के विवेक से रहित मित्र और सन्तोष से हीन और बड़ा अभिमानी होता है और उक्त लक्षण बुध यदि पंचम घर में बैठा हो तब पुत्र और स्त्री के सुख से हीन कन्या सतति वाला और राजा के घर का पण्डित श्रेष्ठ पुरुषों में गणना पाने वाला होता है ॥ ८९ ॥ और जो बुध विकासन नाम

अवस्था में होकर चाहे किसी घर में बैठा होवे तब वो मनुष्य बडा दाता जीवों पर दया करने वाला पुण्यकर्मोंका करने वाला अनेक विद्याओं के पार का जाने वाला ज्ञान से परिपूर्ण और दुष्टों का नाश करने वाला होता है ॥९०॥ जिसके जन्म समय में बुध गमन अवस्था में बैठा हो वो मनुष्य देशान्तरों में आने जाने वाला अनेक प्रकार भूमि का पालन करने वाला और घर में भी विचित्र लक्ष्मी से परिपूर्ण होता है ॥९१॥ और जो सभा अवस्था में उच्च का बुध जन्म समय में बैठा हो तब वो मनुष्य धन समृद्धि से सम्पन्न पुण्यवृद्धि करनेवाला कुबेरके समान राजा अथवा राजा का मंत्री भगवच्चरण की भक्तियुक्त और सात्विकी भक्ति से युक्त होता है ॥९२॥ और जिस मनुष्य के जन्म समय में बुध आगम अवस्था में होता है वो मनुष्य हीन मनुष्यों की सेवा से धन पाने वाला और दो पुत्र तथा एक कन्या वाला होता है ॥९३॥ जिस मनुष्यके भोजन अवस्थामें बुध बैठा हो तब वो मनुष्य वाद के निमित्त से धन हानिसे युक्त राजाके भयसे कृशता युक्त चंचल बुद्धिवाला स्त्रीके सुखसे रहित और धनके सुखसे रहित होता है॥९४॥ और जिस मनुष्य की कुण्डली में बुध नृत्यलिप्सा नाम अवस्थामें वर्तमान चाहे किसी घरमें बैठा हो तब वो मनुष्य

मान यान (सवारी) मूंगोंके समुदाय से संपन्न होता है और मित्र पुत्र तथा प्रताप से युक्त बड़ा सभा चतुर होता है और उक्त लक्षण वाला बुध यदि पापग्रह युत होवे तब वो पुरुष वेश्यागामी होता है ॥ ९५ ॥ और जो कौतुक अवस्था में बुध वर्तमान होकर लग्न में बैठा हो तब वो मनुष्य निर्दोष गानविद्या जानने वाला होता है और जो उक्त अवस्था वाला बुध यदि सप्तम या अष्टम घर में बैठा हो तब वो मनुष्य वेश्याओं में रमण करने वाला होता है और नवम घर में बैठा होवे तब उस मनुष्यका जन्म पुण्य करने वाला होकर अन्त में सद्गति का अधिकारी होता है ॥ ९६ ॥ और जिसकी कुण्डली में निद्रा अवस्था में वर्तमान बुध कहीं बैठा हो तब वो मनुष्य रूपा आदि मुद्राओं के सुख से सम्पन्न सब समय रोगों से ग्रस्त होनेसे चिन्ता मग्न अपने सगे भाइयों के निमित्त से विकलतायुक्त अत्यंत ताप का अनुभव करने वाला स्वजनों के साथ विवाद करने वाला होकर धन के और मान के नाश को पाने वाला होता है ॥ ९७ ॥

अथ गुरोरवस्थाफलम् ।

वचसामधिपे तु जनुःसमये शयने बलवानपि

हीनरवः । अतिगौरतनुः खलु दीर्घहनुः सुतरा मरिभीतियुतो मनुजः ॥९८॥ उपवेशं गतवति यदि जीवे वाचालो बहुगर्वपरीतः । क्षोणीपतिः रिपुजनपरितप्तः पदजङ्घासुखकरव्रणयुक्तः९९ नेत्रपाणौ गतेदेवराजार्चितो रोगयुक्तो वरार्थ-श्रिया शोभितः । गीतनृत्त्यप्रियः कामुकः सर्वदा गोरवर्णोविवर्णोद्भवभीतियुक्१००।गुणा नामानन्दंविमलसुखकन्दंवितनुते सदातेजःपुञ्जब्रजपतिनिकुञ्जं प्रतिगमम्। प्रकाशंचेदुच्चैर्बुतमुपगतो वासवगुरुर्गुरुत्वं लोकानां धनपतिसमत्त्वं तनुभृताम् ॥१॥ साहसी भवति मानवः सदा मित्रपुत्रसुखपूरितो मुदा। पंडितो विविधवित्तमंडितो वेदविद्यादिगुरौ गमं गते ॥ २ ॥ आगमने जनता वरजाया यस्य जनुःसमये हरिमाया । मुञ्चति नालमिहालयमद्धा देवगुरौ परितः परिवद्धा ॥३॥ सुरगुरुसमवक्ता शुभ्रमुक्ताफलाग्रः सदसि सपदि पूर्णो वित्तमाणिक्य-

यानैः गजतुरगरथाढ्यो देवताधीशपूज्ये जनुषि विविधविद्यागर्वितो मानवः स्यात् ॥४॥ नानावाहनमानयानपटली सौख्यं गुरावागमे भृत्यापत्यकलत्रमित्रजसुखं विद्यानवद्या भवेत् । द्रोणीपालसमागतानवरतं चातीवहृद्या मतिः काव्यानन्दरतिः सदाहितगतिः सर्वत्र मानोन्नतिः ॥ ५ ॥ भोजने भवति देवतागुरुर्यस्य तस्य सततं सुभोजनम्। नैव मुञ्चति रमालयं तदा बाजिवारणरथैश्च मण्डितम् ॥६ ॥ नृत्यलिप्सागते राजमानी धनी देवताधीशवन्द्यो सदा धर्मवित् । तन्त्रविज्ञो बुधैर्मण्डितः पंडितः शब्दविद्यानवद्यो हि सद्यो जनः ॥ ७ ॥ कुतूहली स कौतुके महाधनी जनः सदा निजान्वयाब्जभास्करः कृपाकलाधरः सुखी । निलिम्पराजपूजिते सुतेन भूनयेन वा युतो महाबली धराधिपेन्द्रपद्ममण्डितः ॥ ८ ॥ युगै निद्रागते

यस्य मूर्खता सर्वं कर्मणि । दरिद्रतापरिक्रान्तं भवनं पुण्यवर्जितम् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्य के जन्म समय में बृहस्पति शयनावस्था में वर्तमान होता है तब बलवान भी यदि मनुष्य होवे तब भी मन्द शब्द से वर्णोच्चार करने वाला अति गौरांग बड़ी ठोड़ी वाला और सब समय अत्यंत शत्रुभय से युक्त होता है ॥ ९८ ॥ और जिस मनुष्य की कुण्डली में उपवेश नाम अवस्था में बृहस्पति हो वो मनुष्य वाचाल (कुत्सित बोलने वाला) अनेक प्रकार गर्व से युक्त राजा के शत्रु होने से मनुष्यों से दुःख पाने वाला पावों में जंघाओं में मुख में और हाथों में घावों से युक्त होता है ॥ ९९ ॥ यदि बृहस्पति नेत्रपाणि अवस्था में वर्तमान होकर कुण्डली में बैठा हो तब वो मनुष्य रोगों से युक्त उत्तम धन और शोभा से संपन्न गाने नाचने में स्नेह रखने वाला सब समय अति कामी गौरांग और हीन वर्ण मनुष्यों से प्रीति रखने वाला होता है ॥ १०० ॥ और जिसकी कुण्डली में उच्चका बृहस्पति प्रकाश अवस्था में वर्तमान होकर बैठा हो तब उस मनुष्य को गुणों के निमित्त से आनन्द और निर्दोष सुख समुदायका तेज

पुत्र का व्रजमण्डल की तीर्थ यात्रा का लोकों में महत्व का और कुबेर के समान ऐश्वर्य का देनेवाला होता है ॥१॥ और जो गमन अवस्था में वर्तमान होकर बृहस्पति कुण्डली में बैठा हो तब वो मनुष्य बिना विचारे काम करने वाला सदा मित्र पुत्रों के सुखसे सम्पन्न प्रसन्नता युक्त बड़ा पंडित अनेक प्रकार धनों से भूषित और वेद विद्या के जानने वाला होता है ॥ २ ॥ जिस मनुष्य के जन्म समय में बृहस्पति आगमन नाम अवस्था में होता है उस मनुष्य के घर को जन समूह उत्तम स्त्री और भगवान माया (लक्ष्मी) किसी समय भी छोड़कर नहीं जाते किंतु बंधुए की तरह सदा उस पुरुष के घरमें निवास करते हैं ॥ ३ ॥ और जिसकी कुंडली में सभा स्थान में बृहस्पति बैठा होवे चाहे किसी घर में बैठा हो तब वो मनुष्य बृहस्पति ही को बराबर वक्ता उत्तम मुक्ता फलों को पास रखने वाला धन माणिक और सवारी से सदा संपन्न हाथी, घोड़ा रथों से युक्त और अनेक प्रकार विद्या के गर्व से युक्त होता है ॥ ४ ॥ और जिसकी कुंडली में बृहस्पति आगमनाम अवस्था में होकर बैठा हो वो मनुष्य अनेक सवारी और मानके द्वारा सुखका अनुभव करनेवाला अनवद्य (निर्दोष)

विद्या से संपन्न राजा के समान प्रतापी भृत्य पुत्र स्त्री और मित्र सुख से संपन्न अत्युत्तम बुद्धियुक्त काव्यानन्द में मनका रखने वाला सब समय हितकर्म करनेवाला और सब जगह मान पाने वाला होता है ॥ और जिसके जन्म समय में बृहस्पति भोजन अवस्था में होता है उस मनुष्य को निरन्तर उत्तम भोजन प्राप्त होते हैं और उस पुरुष को लक्ष्मी कभी परित्याग नहीं करती है और बाजि (घोड़े तथा) हाथियों से सब समय वो पुरुष मंडित होता है ॥ ६ ॥ जिसके नृत्यलिप्सा अवस्था में बृहस्पति होता है तब वो मनुष्य राजापन में अभिमान रखने वाला बड़ा धनी तन्त्र विद्या का जानने वाला बुद्धिमान मनुष्यों से भूषित बड़ा पंडित और निर्दोष शब्द विद्या (व्याकरण) का जानने वाला होता है॥ ७॥ और जिसकी कुंडली में बृहस्पति कौतुक अवस्था में विराजमान होता है वो पुरुष बड़ा धनवान् अपने कुल कमल का प्रकाश करने वाला कृपामृत परिपूर्ण चन्द्रमा सब समय सुख पाने वाला इन्द्र से भी पूजा पाने वाला भूमि को वश करने वाले पुत्र से युक्त बड़ा बलवान् भूमि का पालन करने वाला और कमल के चिन्ह से भूषित होता है ॥ ८ ॥ और जिसके जन्म समय में निद्राअव-

स्था में बृहस्पति होता है वो पुरुष सब कर्मों में मूर्ख दरिद्रता से पूर्ण और पुण्य से रहित होता है ॥९॥

अथ शुक्रअवस्थाफलम् ।

जनो बलीयानपिदन्तरोगी भृगौ महारोषसमन्वितःस्यात् । धनेनहीनःशयनं प्रयाते वाराङ्गना संगमलम्पटश्च ।१०॥ यदि भवेदुशना उपवेशने नवमणिव्रजकांचनभूषणैः । सुखमजस्रमरिक्षय आदरादवनिपादपि मानसमुन्नतिः ॥११॥ नेत्रपाणि गते लग्नगेहे कवौ सप्तमे मानभे यस्य तस्यध्रुवम् । नेत्रपातो धनानामलं चान्यभे वासशाला विशाला भवेत्सर्वदा ॥ १२ ॥ स्वालयेतुङ्गभेमित्रभेमार्गवेतुङ्गमातङ्गलीला कलापी जनः । भूपतेस्तुल्य एव प्रकाशं गते काव्य विद्याकलाकौतुकी गीतवित् ॥१३॥ गमने जनने शुक्रे तस्य माता न जीवति । अधियोगो वियोगश्च जनानामरिभीतितः ॥१४॥ आगमनं भृगुपुत्रे गतवति वित्तेश्वरो मनुजः । सतु तीर्थभ्रमः

शाली नित्योत्साही कराङ्घ्रिरोगी च ॥१५॥ अनायासेनालं सर्पदि महसा याति सहसा प्रगल्भत्वं राज्ञः सदसि गुणविज्ञः किल कवौ। सभायामायाते रिपुनिवहहन्ता धनपतेः समत्वं वा दन्तावलतुरगगन्ता नरवरः ॥ १६ ॥ आगमे भार्गवेनागमो जन्मिनामर्थराशेररातेरतीव क्षतिः। पुत्रपातो निपाते जनानामपि व्याधिभीतिः प्रियाभोगहानिर्भवेत् ॥ १७ ॥ क्षुधातुरो व्याधिनिपीडितःस्यादनेकधारातिभयार्दितश्च। कवौ यदा भोजनगे युवत्यां महाधनी पंडितमंडितश्च ॥ १८ ॥ काव्यविद्यानवद्या च हृद्या मतिः सर्वदा नृत्यलिप्सागते भार्गवे। शङ्खवीणामृदङ्गादिगानध्वनिब्रातनैपुण्यमेतस्य वित्तोन्नतिः ॥१९॥ कौटुकभवनंगतवतिशुक्रेशक्रेशत्वं सदसि महत्वमाहृद्याविद्या भवति च पुंसः पद्मा निवसति पद्मोदरतः ॥ २० ॥ परसेवारतो

नित्यं निद्रामुपगते कवौ परनिन्दापरो वीरो वाचालो भ्रमते महीम् ॥ २१ ॥

जिसकी कुण्डली में शुक्र शयन अवस्था में विराज मान होता हैं वो मनुष्य बलवान भी होवे तब दाँतों से रोगवाला महा रोष से युक्त धन से हीन दिव्य स्त्रियों से सङ्ग रखने वाला और लम्पट धर्म से रहित होता है ॥१०॥ और जिसकी कुण्डलीमें उपवेशन अवस्था में शुक्र वर्तमान होता है वो नवीन मणिसमुदाय तथा सुवर्ण से भूषित सब समय सुख शत्रुजनों के नाश करने वाला और राजों में मान पाने वाला होता है ॥११॥ और जिसके जन्म समय में नेत्र पाणि अवस्थामें शुक्र विराजमान होकर लग्न में सातवें अथवा दशम घर में बैठा होवे वो मनुष्य के नेत्रोंमें अवश्य रोग होता है और धनका नाश होता है और उसके विनाश करने को विशाला शाला होती है ॥ १२ ॥ और जिसकी कुण्डली में शुक्र प्रकाश अवस्था में वर्तमान होकर स्वक्षेत्री होकर या उच्च का होकर अथवा मित्रक्षेत्री हो कर बैठा होता है तब वो मनुष्य मत्त हाथियों के साथ क्रीड़ा करने वाला राजाओं के समान काव्य विद्या कला ओंमें प्रवीण बड़ा कौतुकी और गान विद्या का जानने वाला होता है ॥ १३ ॥ और जिसके जन्म समय में शुक

गमन अवस्था में होता है उस पुरुष की माता नहीं जीती है और शत्रु जनों के भय के निमित्तसे कभी स्वजनों से वियोग और कभी संयोग वाला होता है॥१४॥और जिसकी कुण्डली में आगमन अवस्थाका होकर क्रक बैठा होवे तब वो मनुष्यधन का स्वामी तीर्थों की यात्रा करनेवाला नित्य उत्साह रखने वाला और हाथों में तथा पावों में रोग वाला होता है ॥१५॥ और जिस मनुष्य की कुण्डली में शुक्र उदय हुआ बली होकर सभा अवस्था में बैठा हो तब वो मनुष्य शीघ्र ही में प्रतिष्ठित राजाओं की सभामें सम्मान को पाता है और गुणों का जानने वाला शत्रु समूह लेकर चलने वाला मनुष्यों में मुख्य होता है ॥१६॥ और जिस मनुष्य की कुण्डली में आगम अवस्था में शुक्र होता है तब वो मनुष्य धन प्राप्ति से रहित वैरियों से क्षति पाने वाला पुत्र के पात (मरण का) देखने वाला मनुष्यों में न्यूनता पाने वाला रोगों के भय से युक्त और पत्नी के भोगों से रहित होता है ॥ १७॥ और जिस मनुष्य की कुण्डली में शुक्र भोजन अवस्था में वर्तमान होता है तब वो पुरुष क्षुधा से आतुर रोगों से पीड़ित अनेक प्रकार शत्रु से भय युक्त महा धनवान् और पंडित मनुष्योंसे मण्डित (भूषित) होता है ॥१८॥ जिस मनुष्यकी कुंडली

में शुक्र नृत्यलिप्सा अवस्था में होता है तब वो पुरुष निर्दोष काव्य विद्या का जानने वाला उत्तम बुद्धि से युक्त शङ्ख, वाण, मृदङ्ग आदि बाजों के बजाने में कुशल और धनकी उन्नति सम्पन्न होता है ॥ १६ ॥ और जिसके जन्म समय में कौतुक अवस्था में शुक्र वर्तमान होता है तब वो मनुष्य इन्द्र के तुल्य ऐश्वर्य का अनुभव करने वाला सभा में महत्व पाने वाला हृदय प्रिय विद्या से सम्पन्न और भगवदनुग्रह से लक्ष्मी से सम्पन्न होता है ॥ २० ॥ और यदि शुक्र निद्रा अवस्था में युक्त होता है तब वो पुरुष अन्य पुरुषों की सेवा करने वाला निन्दा करने वाला बड़ा वीर कुत्सित बचन बोलने वाला होकर पृथ्वी में भ्रमण करने वाला होता है ॥ २१ ॥

अथ शन्यवस्थाफलम् ।

क्षुत्पिपासापरिक्रान्तो विश्रान्तः शयने शनौ ।
वयसि प्रथमे रोगी ततो भाग्यवतां वरः ॥२२॥
भानोः सुते चेद्रुपवेशनस्थे कराजकारातिजनानुतप्तः । अपायशाली खलु दद्रुमाली नरोभिमानी नृपदण्डयुक्तः ॥ २३ ॥ नयनपाणिगते रविनन्दने परमया रमया परया युतः । नृपति-

तो हितो मतितोषकृद्बहुकलाकलितो विमलोक्तकृत् ॥२४॥ नानागुणग्रामधनाधिशाली सदा नरो बुद्धिविनोदमाली। प्रकाशने भानुसुते सुभानुः कृपाऽनुरक्तो हरपादभक्तः ॥२५॥ महाधनी नन्दननन्दितः स्यादपायकारी रिपुभूमिहारी। गमे शनौ पण्डितराजभावं धरापतेरायतने प्रयाति॥२६॥आगमने पदगदभययुक्तः पुत्रकलत्रसुखेन बिमुक्तः। भानुसुते भ्रमते भुवि नित्यं दीनमनाहि यदाश्रयभावम् ॥२७॥ रत्नावलीकाञ्चनमौक्तिकानां वातेन नित्यं ब्रजति प्रमोदम्। समागते भानुसुते नितान्तं नयेन पूर्णो मनुजो महौजाः ॥२८॥ आगमे गदसमागमो नृणामञ्जबन्धुतनये यदा तदा। मन्दमेव गमनं धरातले याचनाविरहिता मतिः सदा ॥ २९ ॥ सङ्गते जनुषि भानुनन्दने भोजने भवति भोजनं रसैः संयुतं नयनमन्दताऽऽतता

मोहतापपरितापिता मतिः ॥ ३० ॥ नृत्य लिप्सागते मन्दे धर्मात्मा वित्तपूरितः । राज-पूज्यो नरो धीरो महावीरो रणाङ्गणे ॥ ३१ ॥ भवति कौटुकभावमुपागते रविसुते वसुधावसु-पूरितः । अतिसुखी सुमुखी सुखपूरितः कवित-यामलया कलया नरः ॥३२॥ निद्रागते वास-रनाथपुत्रे धनी सदा चारुगुणैरुपेतः । पराक्रमी चण्डविपक्षहन्तासुवारकान्तारतिरीतिविज्ञः३३

जिस पुरुष की कुण्डली में शनि शमन अवस्था में होता है वो पुरुष मूख प्यास से व्याप्त बड़ा श्रमित होकर प्रथम अवस्था में (बाल अवस्था में) रोगी होकर पिछाड़ी वृद्ध अवस्था में भाग्य वानों में श्रेष्ठ होता है २२ और जिस कुण्डली में शनि उपवेशन अवस्था में होता है वो पुरुष बड़े कराल शत्रु जनों से ताप पाने वाला धनादि वस्तुओं का नाश करने वाला दाद नाम रोग से युक्त बड़ा अभिमानी और राज द्वारा डंड पाने वाला होता है ॥ २३ ॥ और जिस कुण्डली में नयन पाणि नाम अवस्था में होकर शनि बैठा हो तब वो मनुष्य

उत्तमोत्तमा पर स्त्री के संग करने वाला और राजा से तथा मित्र से मति (बुद्धि) के तोष का करने वाला अनेक कलाओं का जानने वाला और निर्दोष वाणी का बोलने वाला होता है ॥ २४ ॥ जिस पुरुष की कुंडली में प्रकाशन नाम अवस्था में शनि होता है वो पुरुष नाना गुण समुदायका, स्थान बुद्धि के विनोदों का धारण करने वाला बड़ा प्रतापी बड़ा दयालु और भगवच्चरणों में अनुराग रखने वाला होता है ॥ २५ ॥ और जिस पुरुष की कुंडली में शनि गमन अवस्था में बैठा होता है तब वो मनुष्य बड़ा धनवान् पुत्रों के निमित्त से आनन्द पाने वाला धनका व्यर्थ खरचने वाला शत्रु जनों की भूमिका हरने वाला पंडितों में महत्व पाने वाला और राज्य का मुख्य कामदार होता है ॥ २६ ॥ और जिस मनुष्य की कुण्डली में आगमन अवस्था में शनि बैठा होता है वो मनुष्य पावों में रोग से युक्त पुत्र स्त्री के सुखसे रहित होकर नित्य भूमि में भ्रमण करता है और अन्य पुरुषों के आश्रय होकर रहने वाला होता है ॥ २७ ॥ और जिसकी कुण्डली में शनि सभा अवस्था में होता है वो पुरुष रत्नों से समुदाय सुवर्ण और मोतियों के समुदाय से आनन्द पानेवाला नीतिका पूर्ण जानने वाला और बड़ा

पुरुषार्थी होता है ॥ २८ ॥ और जिसका आराम अवस्था में कुण्डली में शनि बैठा हो तब उस मनुष्य को सदा रोग संभव होता है और भूमि में धीरे २ चलने वाला मांगनेकी इच्छा से रहित होता है ॥ २९ ॥ और जिस के जन्म समय में शनि भोजन अवस्था में वर्तमान होकर बैठता है तब वो मनुष्य षडरसों का भोजन करने वाला नेत्रों के बल से रहित बड़ा अज्ञ और अनेक प्रकार मोहजन्य तापों से परि तापित होता है ॥ ३० ॥ और जिसकी कुंडली में शनि नृत्यलिप्सा नाम अवस्था में बैठा हो वो मनुष्य बड़ा धर्मात्मा धन से पूर्ण राजों से पूजा पाने वाला बड़ा धीर तथा रणभूमिमें बड़ा वीर होता है ॥३१॥ और जिसके जन्म समय में कौतुक नाम अवस्था में शनि बैठा हो तब वो पुरुष भूमि भरके धन से परिपूर्ण होता है अत्यन्त सुख संपन्न दिव्य स्त्री जनों के साथ सुख भोगने वाला और अत्युत्तम काव्य कलाओं का जानने वाला होता है ॥३२॥ और जिसकी कुण्डली में शनि निद्रा अवस्था में विराजमान होकर बैठा होता है वो पुरुष धनवान सब समय दिव्य गुणों से युक्त बड़ा पराक्रमी प्रचंड शत्रु जनों का मारने वाला और दिव्य स्त्रियों की रति रीति का जानने वाला होता है ॥ ३३ ॥

अथ राह्वावस्थाफलम्।

गदागमोजन्मनि यस्य राहौ क्लेशाधिकत्वंशयनं प्रयाते। बृषेऽथ युग्मेऽपि च कन्यकायामजे समाजो धनधान्यराशेः ॥३४॥ उपवेशनमिह गतवति राहौ दद्रुगणेन जनः परितप्तः राजसमाजयुतो बहुमानीवित्तसुखेनसदारहितःस्यात् ॥३५॥ नेत्रपाणावगौ नेत्रे भवतो रोगपीडिते। दुष्टव्यालारिचौराणां भयं तस्य धनक्षयः ३६ प्रकाशने शुभासने स्थितिःकृतिःशुभानृणां धनोन्नतिर्गुणोन्नतिःसदाविदामणाविह। धराधिपाधिकारिता यशो लता तता भवेन्नवीननीरदाकृतिर्विदेशतो महोन्नतिः ॥ ३७ ॥ गमने च यदा राहौ बहुसन्तानवान्नरः। पंडितो धनवान् दाता राजपूज्यो नरो भवेत् ॥३८॥ राहावागमनेक्रोधीसदा धीधनवर्जितः। कुटिलः कृपणः कामी नरो भवति सर्वथा ॥ ३९ ॥ सभागते यदा राहौ पंडितः कृपणो नरः। नाना-

गुणपरिक्रान्तो वित्तसौख्यसमन्वितः ॥ ४० ॥
चेद्गावागमं यस्य याते तदा व्याकुलं सर्वदाऽ
राति भीत्या महत् बन्धुवादो जनानां निपातो
भवेद्वित्तहानिः शठत्वं कृशत्वं तथा ॥ ४१ ॥
भोजने भोजनेनालं विकलो मनुजो भवेत् ।
मन्दबुद्धिः क्रिया भीरुः स्त्रीपुत्रसुखवर्जितः ४२
नृत्यलिप्सागते राहो महाव्याधिविवर्द्धनम् ।
नेत्ररोगं रिपोर्भीतिर्धनधर्मक्षयो नृणाम् ४३
कौतुके च यदा राहौ स्थानहीनो नरो भवेत् ।
परदारतो नित्यं परवित्तापहारकः ॥ ४४ ॥
निद्रावस्थागते राहौ गुणग्रामयुतो नरः । का-
न्तसंज्ञानवान धीरो गर्वितो बहुवित्तवान ४५

जिसकी जन्म कुंडली में शयन अवस्था में राहु होता है तब वो रोगोंसे युक्त अधिक क्लेश पानेवाला यदि शयनावस्था गत राहु मेष वृष अथवा मिथुन राशिमें बैठा हो तब वो पुरुष धन धान्य राशि संयुक्त और समाजमें मुख्य होता है ॥ ३४ ॥ जिसका राहु उपवेशन अवस्था में बैठा हो तब

मनुष्य दादके रोगसे पीड़ा पाने वाला राजसमाज में बैठने वाला बड़ा अभिमानी और सदा धनके सुखसे रहित होता है ॥ ३५ ॥ और जिसके नेत्रपाणि अवस्था में राहु होता है वो मनुष्य रोगों से पीड़ित दुष्ट मनुष्य सर्व शत्रु और चोरों से भय पानेवाला और धनका क्षय करने वाला होता है ॥३६॥ और जिस मनुष्य के जन्म समय में राहु मिथुन या कन्याका होकर प्रकाश अवस्थामें होता है तब वो मनुष्य शुभ आसन पर बैठने वाला उत्तम धन की उन्नति पाने वाला राज्याधिकारका पानेवाला यश रूप लाभ से विस्तृत नवीन मेघ के तुल्य श्यामसुन्दर और प्रदेश के निमित्त से महोन्नति पाने वाला होता है ॥३७॥ और जिसकी कुंडली में राहु गमन अवस्था में होता है वो मनुष्य अनेक संतानों से युक्त बड़ा पंडित धनवान, देने वाला और राजों से पूजा पाने वाला होता है ॥ ३८ ॥ और जिसके जन्म समय आगमन अवस्थामें राहु होता है वो मनुष्य सब समय क्रोध युक्त बुद्धि और धन से हीन बडा कुटिल और महाकामी होता है ॥३९॥ और यदि सभा अवस्था में राहु हो तब वो मनुष्य बड़ा पंडित अत्यंत कृपण अनेक गुणोंसे संपन्न और धनके निमित्त से सुख भोगने वाला होता है ॥ ४० ॥ और जिसकी कुंडली में राहु आगम अवस्था में वर्तमान होकर

बैठा हो वो पुरुष सब समय शत्रुजनों के भय से व्याकुल भाई बंधुजनों से विवाद करने वाला भृत्य वर्गों के नाशका करने वाला धनकी हानिसे युक्त बड़ा सेठ और बड़ा दुर्बल होता है ॥ ४१ ॥ जिस पुरुष की कुण्डली में भोजन अवस्था में राहु स्थित हो तब वो पुरुष बड़ा मंदबुद्धि काम करने में डर पाने वाला स्त्री और पुत्र के सुख से रहित और भोजन मात्र से भी अतिशय विकल (रहित) होता है ॥ ४२ ॥ और जिस पुरुष की कुंडलीमें राहु नृत्यलिप्सानाम अवस्था में विद्यमान होता है तब वो पुरुष महाव्याधि वृद्धि से युक्त नेत्रों का रोगी शत्रुभयसे युक्त और धन तथा धर्म से रहित होता है ॥ ४३ ॥ और जिसकी कुंडली में कौतुकनाम अवस्था में राहु होता है तब वो पुरुष परस्त्री गामी दूसरे के धनका हरने वाला और स्थान से भ्रष्ट होता है ॥ ४४ ॥ और जिसकी कुंडली में राहु निद्रा अवस्था में स्थित होता है तब वो पुरुष गुण के समूह से युक्त अति प्रिय संतती वाला बड़ा धीर गर्वीला और अनेक प्रकार धन संयुक्त होता है ॥ ४५ ॥

अथ केत्ववस्थाफलम् ।

मेषे वृषेऽथवा युग्मे कन्यायां शयनं गते ।
केतौ धनसमृद्धिः स्यादन्यभेरोगवर्द्धनम् ।४६।

उपवेशं गते केतौ द्रद्रुरोगविवर्द्धनम् ।
अरिब्रातनृपव्यालचौशङ्का समन्ततः ॥ ४७ ॥
नेत्रपार्णि गते केतौ नेत्ररोगः प्रजायते ।
दुष्टसर्पादिभीतिश्च रिपुराजकुलादपि ॥४८॥
प्रकाशने गते केतौ धनधान्यसमुन्नतिः ।
राजमानं यशोलाभं विदेशे सौख्यमाप्नुयात्४९
गमने तु यदा केतौ पुत्रसम्पत्तिमान्नरः ।
पण्डितोराजमानी च धनेन परिपूरितः ॥५०॥
केतोरागमने दुष्टमतिः श्रीरहितः पुमान् ।
कामीधीधर्महीनश्च जायते क्रोधनः शठः ५१
सभावस्थागते केतौ वाचालो बहुगर्वितः ।
कृपणो लम्पटश्चैव धूर्तविद्याविशारदः॥५२॥
यदागमे भवेत्केतुः केतुः स्यात्पापकर्मणाम् ।
बन्धुपादरतो दुष्टो रिपुरोग निपीडितः ॥५३॥
भोजने तु जनो नित्यं क्षुधया परिपीडितः ।
दरिद्रो रोगसन्तप्तः केतौ भ्रमति मेदिनीम् ५४
नृत्यलिप्सागते केतौ व्याधिनां विकलो भवेत् ।

बुद्बुदाक्षो दुराधर्षो धूर्तोऽनर्थतरो नरः॥५५॥
कौतुकी कौतुके केतौ नटवामारतिप्रियः।
स्थानभ्रष्टो दुराचारो दरिद्रो भ्रमते महीम्।५६।
निद्रावस्थागते केतौ धनधान्यसुखं महत्।
नानागुणविनोदेन कालो गच्छति जन्मिनाम्५७

जिस पुरुष की कुण्डली में मेष, वृष, मिथुन और कन्या इनमें से किसी भवन में शयन अवस्था में वर्तमान होकर केतु बैठाहोवेतब उस मनुष्यकी धन समृद्धि होतीहै यदि उक्त घरोंसे किसी अन्य घरमें केतुके बैठने से रोग-वृद्धि होती है ॥ ४६ ॥ और जिसके जन्म समय में उप-वेशन अवस्था में केतु हो तब उस मनुष्यको बिशेष कर दाद रोगको बढ़ाता है और उस मनुष्य को शत्रु समुदाय से राजा से सर्प से और चोरों की शंकासे युक्त करता है ॥ ४७ ॥ जिसके नेत्रपाणि अवस्था में केतु होता है तब उस पुरुष को नेत्रों का रोग होता है और दुष्टोंसे और सर्पादिकों से और शत्रु कुल से और राजकुल से भी भय होता है ॥ ४८ ॥ यदि केतु प्रकाशन नाम अवस्था में बैठा हो तब उस मनुष्य को धन धान्य की समुन्नति राजसे मान यशका लाभ और परदेश में जानेसे सुख प्राप्त होता

है ॥४९॥ और केतुके गमन अवस्था में बैठने से मनुष्य पुत्र और सम्पत्ति से युक्त बड़ा पंडित राजा से सम्मान पाने वाला और धनसे परिपूर्ण होता है ॥ ५० ॥ और केतुके आगमन अवस्था में बैठने से मनुष्य दुष्टबुद्धि वाला धनसे रहित अत्यन्त कामी धर्म से हीन बड़ा सेठ और अत्यन्त क्रोधी होता है ॥ ५१ ॥ और यदि केतु सभा अवस्था में बैठा हो तब वो मनुष्य कुत्सित बचन बोलने वाला बड़ा गर्वित अति कृपण बड़ा लम्पट (कामी) और धूर्त पुरुषों की विद्या में बड़ा प्रवीण होता है ॥ ५२ ॥ और जब केतु आगम अवस्था में होता है तब पापी पुरुषों में ध्वजाधारी होता है, बन्धु जनों से विवाद करने वाला अत्यन्त दुष्ट शत्रु और रोगों से पीड़ित होता है ॥ ५३ । और जो केतु भोजन अवस्था में बैठा हो तब वो मनुष्य क्षुधा से पीडित अति दरिद्री रोगों के तापसे युक्त होकर भूमि में भ्रमण करता है ॥ ५४ ॥ और जिसकी कुण्डली में नृत्य लिप्सा अवस्था में केतु बैठा हो तब वो मनुष्य व्याधि से खेदसे विकल बबूलेकी तरह कांपते नेत्रवाला दुरार्घर्ष बड़ा धूर्त और अनर्थ काम का करने वाला होता है ॥ ५५ ॥ और जिसकी कुण्डलीमें केतु कौतुक अवस्था में बैठा हो तब वो पुरुष नटोंकी स्त्रियोंसे रमण करने वाला स्थान से

भ्रष्ट होने वाला दुराचार का करने वाला और दरिद्री होकर भूमि में भ्रमण करने वाला होता है ॥ ५६ ॥ और जिसकी कुण्डली में केतु निद्रा अवस्था में होकर बैठा हो तब वो मनुष्य धन धान्यका सुख पाने वाला और अनेक गुणों के विनोद से अपने समय को व्यतीत करने वाला होता है ॥५७॥

इति भावकुतूहले चतुर्वेद वनमालिकृत भाषानुवादे द्वादशोध्यायः ॥१२॥

अथ ग्रहाणांबालाद्यवस्थाफलम्

बालो रसाशैरशमे प्रदिष्टस्ततः कुमारोहियुवाथः बृद्धः। मृतः कपादुत्क्रमतः समर्क्षे बालाद्यवस्थाः कथिता ग्रहाणाम् ॥ ५८ ॥

नव ग्रहों मेंसे चाहे कोई ग्रह हो और चाहै किसी राशि पर हो राशि के छः ६ अंश भोगतक बाल अवस्था मानी जाती है और छः के उपरांत बारह अंशों के भोग तक कुमार अवस्था तदन्तर अठारह अंशों के भोग तक युवा अवस्था तदन्तर चौबीस अंशों के भोगतक बृद्ध अवस्था और तदनन्तर तीस अंशों के भोगतक यानी राशिके समाप्तितक मृतावस्था होती है ये विषम राशि

१।३।५।७।९।११। ओं में क्रम हैं और समराशि २।४।६। ८।१०।१२। ओं में विपरीत क्रम से बाल आदि अवस्था होती है चौबीस अंश से अगाड़ी ३० अंशतक बाल अवस्था तदनन्तर अठारह से अगाड़ी चौबीस अंश तक कुमार अवस्था बारह से अगाड़ी अठारह अंशतक युवा अवस्था छः अंश से अगाड़ी बारह अंश तक वृद्धावस्था और छः अंश तक मृतावस्था होती है ॥ ५८ ॥

अथ बालाद्यवस्थाफलम्

फलं तु किंचिद्धितनोति बालश्चार्द्धं कुमारः प्रय-
तेन पुंसाम् । युवा समग्रं खचरोऽर्थं वृद्धः फलं
च दुष्टं मरणं मृताख्यः ॥५९॥

जब कोई ग्रह शुभकारक या अशुभ कारक मनुष्यको दशा अन्तर्दशा तथा प्रत्यन्तरदशा में आता है तब अपनी बाल अवस्था में होता है, तब तक किंचित फल, कुमार अवस्था में होने से आधा फल, युवा अवस्था में होने से पूर्ण फल, वृद्धावस्था में होने वाला अनिष्ट फल और मृतावस्थावाला ग्रह मरण रूप फल अर्थात् मरा हुआ फल देता है यानी कुछ शुभ या अशुभ फल बिलकुल नहीं देता है ॥ ५९ ॥

अथ दीप्ताद्यवस्थाविचारः ।

उच्चे दीप्तः स्वभेस्वस्थो मित्रभेहर्षितोभवेत् ।
शान्तःशोभनवर्गस्थोऽतिशस्तोदीप्तदीधितिः ६०
लुप्तोस्ते नीचभे दीनःपीडितःपापशत्रुभे ।
एवमष्टौ नभोगानां भावा दीप्तादिभेदतः॥६१॥

जो अपने उचका ग्रह होता है वो ग्रह दीप्त अवस्था वाला कहलाता है, स्वक्षेत्री ग्रह स्वस्थावस्थावाला कहाता है मित्र क्षेत्री ग्रह हर्षित अवस्था वाला कहलाता है शुभ ग्रह के शड्वर्ग वाला ग्रह शान्त अवस्था वाला कहलाता है उद्रित ग्रह (जो अस्त न हो) अतिशस्त अवस्था वाला कहलाता है ॥ ६० ॥ अस्तगत ग्रह को लुप्त अवस्था वाला कहते हैं नीच के ग्रह को दीन अवस्थो वाला कहते है पाप ग्रह की राशि में वा शत्रु की राशि में होने वाले ग्रह को पीड़ित अवस्था वाला कहते हैं इस प्रकार से दीप्तादि भेद से ग्रहों की आठ अवस्था होती है वगैर इन अवस्था भेदों के जाने फल नहीं कहना चाहिये ॥ ६१ ॥

अथ दीप्तग्रहफलम् ।

दीप्ते मदोन्मत्तगजेन्द्रगन्ता सदारिहन्ता वरती-

र्थगन्ता । कान्तो मनस्वी नितरां यशस्वी प्रदी-
प्तवेषो मनुजो महीपः ॥६२॥

जब मनुष्य को दीप्त अवस्था वाले ग्रह की दशा अन्तर्दशा या प्रत्यन्तर्दशा आती है तब वो मनुष्य मत्त हाथियों पर चढ़कर चलने वाला वैरीजनों का नाश करने वाला तीर्थों की यात्रा करने वाला सबको प्रिय बड़ा मनस्वी सर्वत्र विख्यात यश वाला बड़ा तेजस्वी और भूमि का पालन करने वाला होता है परन्तु शुभ योग कारक यदि वो ग्रह होगा तब ये उक्त फल होगा और यदि अशुभ कारक ग्रह होगा तब अत्यन्त शुभ देने वाला होगा और इतना विचार अपनी तरफ से करना चाहिए ॥ ६२ ॥

अथ स्वस्थग्रहफलम् ।

स्वस्थेगुणागारव्रजालयानामुपार्जको वैरिविना
शकर्ता । नरोऽप्युदारो नृपपूजितः स्याद्विशा-
लकीर्तिः कमनीयमूर्ति ॥६३॥

अर्थ—जिस मनुष्य की कुण्डली में स्वस्थ अवस्थामें ग्रह होता है तब वो मनुष्य अनेक गुण वाले ग्रह तथा गो निवास स्थानों का सम्पादक वैरी जनों का विनाश करने-

वाला बड़ा उदार राज द्वार में पूजा पाने वाला जगत् में विख्यात जिसकी कीर्ति और अत्यन्त प्रिय मूर्ति वाला होता है ॥ ६३ ॥

अथ हर्षितग्रहफलम् ।

हर्षिते भवति हर्षितः सदा मित्रपुत्रपरिपूरितो मुदा धर्मकृन्मणिगणेन मण्डितः पण्डितोपर-विपाकविज्जनः ॥६४॥

अर्थ—जिस मनुष्य की कुण्डली में हर्षित अवस्था में ग्रह होता है वो पुरुष सदा हर्ष से रहने वाला मित्र तथा पुत्रों से पूर्ण धर्म करने वाला मणि गणों से भूषित बड़ा पण्डित और अन्य मनुष्यों के कर्मों के फलों का जानने वाला होता है ॥ ६४ ॥

अथ शान्तग्रहफलम् ।

शान्तेऽतिशान्तो युवराजराजो जनो महौजा जनतासमेतः । अनेकविद्यामलगद्यपद्याभ्यासा-नुरक्तः खलु वित्तयुक्तः ॥६५॥

अर्थ—जिस मनुष्य की कुण्डली में शान्त अवस्था में वर्तमान ग्रह होता है तब वो मनुष्य अत्यन्त शान्त

स्वभाव वाला युवराजों का राजा बड़ा पराक्रमी अनेक भृत्य वर्गों से युक्त अनेक विद्या का दाता गद्यपद्यवाणी को कहने में तथा बनाने में अनुराग रखने वाला और अवश्य धन से सम्पन्न होता है ॥ ६५ ॥

अथ शस्तग्रह फलम् ।

शस्ते विशेषाद्विदुषां प्रशस्तः प्रशस्तवेषो गत-रोगसङ्घ । विशालमालालसितोऽमलोक्त्या नरोनराणामधिपप्रधानः ॥६६॥

जिस मनुष्य की कुण्डलीमें शस्त अवस्था में वर्तमान ग्रह होता है वो मनुष्य विशेषकर विद्वानों में प्रशस्त (प्रशंसा पाने वाला) प्रशंसा करने लायक रूप वाला रोग से रहित उत्तमोत्तम माला का धारण करने वाला निर्मल वचन कहने वाला मनुष्यों में प्रधानों में प्रधान होता है ॥ ६६ ॥

अथ लुप्तग्रहफलम् ।

लुप्ते च लुप्तो गुणधर्मभावैः प्रपीडितोरातिकु-लेनमर्त्यः । भवेद्विरक्तो गदजालयुक्तो प्रमाद-शाली खलु पापमाली ॥६७॥

जिसके लुप्त अवस्थामें ग्रह वर्तमान होता है वो मनुष्य गुणधर्म के होने से रहित शत्रुजनों से पीड़ित मन में

विराग रखने वाला अनेक रोगों से युक्तबड़ा प्रमादी और अनेक पापकर्मों का करने वाला होता है ॥ ६७ ॥

अथ दीनग्रह फलम् ।

दीनेतिदीनो मतितोषहीनो जनो जनेशादि-
निपीडितश्च । गुणेन हीनः परदारलीनः परा-
र्थहारी च कुभूमिचारी ॥६८॥

जिसकी कुण्डली में दीन अवस्था में ग्रह वर्तमान होता है तब वो मनुष्य बड़ा दीन बुद्धि और राजा से पीड़ित गुणों से हीन पर स्त्रियों में मग्न पराये धनका हरने वाला और कुत्सित भूमि में विचरने वाला होता है ॥६८॥

अथ पीड़ितग्रहफलम् ।

पीडिते जदनिपीडितः सदा चिन्तया च परया
समन्वितः । व्यग्रितो बहुमदोद्धतः पुमानाधि-
रोग सहितो विशेषतः ॥६९॥

जिसकी कुण्ली में पीड़ित अवस्था में ग्रह होता है तब वो मनुष्य अनेक रोगों से पीड़ित अत्यन्त चिंता से सदायुक्त व्यग्रता से युक्त बड़े पद के होने से उद्धत और मानसी व्यथा से अत्यन्त पीड़ित होता है ॥ ६९ ॥

इति भावकुतूहलजातके चतुर्वेदवनमालकृते भाषानुवादे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

अथ मारक-राजयोग-धनिक-दरिद्र विचाराऽध्याय ॥१४॥

दशादौ शनिमारकविचारः ।

मारकग्रहसम्बन्धात् पापकर्ता शनिस्तदा ।
तिरस्कृत्य ग्रहान्सर्वान्निहन्ता भवति ध्रुवम् ७०

मारक ग्रहों के सम्बन्ध से शनि यदि दूषित होकर प्राप्त हुआ हो तब सब मारक ग्रहों को उलङ्घन करके मारने वाला होता है अर्थात् मारक शनि की दशा से कोई नहीं बचता है ॥ ७० ॥

अथ भावेशग्रहाणांशुभाशुभसंज्ञा ।

त्रिकोणभवनाधिपाः शुभफलास्तु सर्वे ग्रहास्त्रि-वैरिभवभावपाः खलफला निरुक्ता बुधैः । भ-वन्ति यदि केन्द्रपाः शुभखगा न शस्ता नृणाम-तीव शुभदायकाः खलखचारिणो जन्मनि ७१

नवें पाँचवें भवन के स्वामी ग्रह चाहे शुभ ग्रह हों या पाप ग्रह हों वे सब समय शुभ फल के देने वाले होते हैं यानी कभी भी अशुभ फल नहीं देते हैं, इसी प्रकार तीसरे छठे ग्यारहवें घर के स्वामी जो ग्रह होते हैं वे सब समय अशुभ फल देने वाले होते है यानी चाहे शुभ ग्रहों चाहे

अशुभ ग्रहों परन्तु वे कभी भी शुभ फल नहीं देते हैं और केन्द्र १।४।७।१० के स्वामी यदि शुभ ग्रहों तब अशुभ फल के देने वाले और पाप ग्रह यदि केन्द्र पति हों तब सब समय शुभ फल के देने वाले होते हैं ऐसा ज्योतिर्विद् पंडितों ने कहा है ॥ ७१ ॥

अथ राहु तथा केतु भावफलम् ।

यद्यद्भावगतो राहुः केतुश्च जनने नृणाम् ।
यद्यद्भावेशसंयुक्तस्तत्फलं प्रदिशेदलम् ॥७२॥

मनुष्य की कुण्डली में राहु और केतु जिस जिस ग्रह के घर में बैठे हों और जिस जिस ग्रह के साथ बैठे हों तब उन्हीं के समान फल देते हैं अर्थात् यदि शुभदायक के साथ या शुभ कारक के घर में बैठे हो तब शुभ फल और अशुभ कारक के साथ या अशुभ कारक के घर में हों तब राहु केतु भी अशभ फल को देते हैं ॥ ७२ ॥

अथ शनिमारकत्वविचारः ।

मंदश्चेत्पापसंयुक्तो मारकग्रहयोगतः ।
तिरस्कृत्य ग्रहान्सर्वान् निहंन्तापापकृद्यदा ७३

यदि शनि पापग्रह से युक्त हो अथवा किसी मारक पापग्रह से सम्बन्ध करता हो तब सब ग्रहों को तिरस्कार करके वो शनि मारक हो जाता है परन्तु वो आप भी मारक होवे तो ॥ ७३ ॥

अथ मारकविचारे विशेषः ।

अल्पमध्यमपूर्णायुः प्रमाणमिह योगजम् ।
विज्ञाय प्रथमं पुंसां ततो मारकचिन्तना ७४

जिस किसीका मारक देखनाहो तब प्रथम उस मनुष्यकी कुंडली देखकर ये योग देखेकि इस पुरुषकी अल्प आयु है या मध्यायु है अथवा पूर्णायु इस प्रकार आयुक्त योग को विचार कर तदनन्तर मारक का विचार करे ७४

अथायुर्ज्ञानम् ।

चेदङ्गपो यदि रवेररिरेव हीनंपूर्णं सुहृद्यदि समः
सममायुराहुः । लग्नाधिपो हितसमारिपदेऽपि
पूर्णं मध्यं च हीनमिह जातकतत्त्वविज्ञाः ७५

आयु के निर्णय में ऐसा निर्णय किया है कि लग्नेश ग्रह सूर्य का शत्रु हो अब अल्पायु लग्नेश ग्रह सूर्यका सम होवे तो मध्यायु और लग्नेश ग्रह के सूर्य के मित्र होने से पूर्णायु योग होता है इसी प्रकार यदि लग्नेशग्रह मित्रक्षेत्री होकर बैठा हो तब पूर्णायु लग्नेशके और अपने सम ग्रहके घर में बैठने से मध्यायु और लग्नेश के अपने शत्रु क्षेत्री होकर बैठने से पुरुष की अल्पायु होती है ऐसा जातक तत्व के जानने वाले पंडितों ने कहा है ॥ ७५ ॥

अथ मारकस्थानज्ञानम् ।

अष्टमर्क्षं तृतीयं च बुधैरायुरुदाहृतम् ।
द्वितीयं सप्तमं स्थानं मारकस्थानमुच्यते ७६

बुध मनुष्यों ने मारक के विचार में ऐसा निर्णय किया है कि लग्नसे अष्टम घर और लग्नसे तीसरा घर ये दोनों घर आयुस्थान कहलाते हैं इसी प्रकार लग्न से दूसरा और सातवां घर मारक कहलाता है ॥ ७६ ॥

अथ मारकेशदशायां मृत्यु निश्चयः ।

मारकेशदशापाके मारकस्थस्य पापिनः ।
पाके पापयुजां पाके संभवे निधनं दिशेत् ७७
असम्भवे व्ययाधीशदशायां मरणं नृणाम् ।
अभावे व्ययभावेशसम्बन्धिग्रहभुक्तिषु ॥ ७८ ॥
तदभावेष्टमेशस्य दशायां निधनं पुनः ।
दुष्टतारापतेः पाके निर्वाणं कथितं बुधैः ॥७९॥

यातो मारकेश ग्रहकी दशाके पाक में 'या' मारक घर में बैठने वाले पाप ग्रह की दशाके पाक में अथवा मारकेश से पूर्ण सम्बन्ध रखने वाले पापी ग्रहों की दशा के पाकमें अल्पादि आयु के सम्भव होने पर मनुष्य का मारक कहना चाहिये, क्योंकि भलेही मारकादिकों की दशादि हों पर

सम्भव के बिना कभी भी मृत्यु नहीं होती है ॥ ७७ ॥ और यदि बड़ी उमर होजाने पर भी सम्भव न देखने में आवे तब बारहे घर के स्वामी ग्रह की दशा पाक में ही मृत्यु होजाती है और व्ययेशकी भी दशा दूर आने वाली हो और संभव न दीखता हो तब व्ययेश से संबंध रखने वाले ग्रहों की मुक्ति में मारक होजाता है ॥ ७८ ॥ यदि व्ययेश के सम्बन्ध रखने वाले का भी अभाव हो तब केवल अष्टमेशमात्र ग्रह की दशा पाक में मारक होजाताहै पाप ग्रह की इसका भी यदि अभाव हो तब केवल यारोगो-णादिकी ही दशा मात्र में संभव होने पर मनुष्य की मृत्यु होजाती है ॥ ७९ ॥

अथ राजयोगाः ।

नवमभावपतिस्तनयालये सुतपतिर्नवमे यदि जन्मिनः । अतिविचित्रमणिव्रजमण्डितो वसुमतीविभुतां स नरो व्रजेत् ॥ ८० ॥ कर्माधीशः सुतस्थाने सुतेश कर्मगो यदा । त्रिकोणपतिना दृष्टो राजा भवति निश्चितम् ॥८१॥ राज्येशाङ्गपवाहनेशसुत पा धर्मालयस्वामिना संयुक्ता यदि वीक्षिताश्च बलिनो राजा भवे

न्मानवः । पुत्रेशो यदि धर्मेण सहितो लग्नाधिपे नाङ्गगो दृष्टो वा सहितः सुखेऽपि दशमे राजा भवेन्निश्चितम् ॥८२॥ यत्रकुत्रापि केन्द्रेशस्त्रिकोणपतिना युतः । सबलो मनुजो राजा दुर्बलो धनपो भवेत् ॥ ८३ ॥ पुण्यस्थाने गुरुक्षेत्रे दशमेशो भृगोस्सह । पञ्चमस्वामिना दृष्टे राजपुत्रो नराधिपः ॥ ८४ ॥

जिस मनुष्य की कुण्डली में नवें घर का स्वामी ग्रह तो पंचम घर में और पंचम घरका स्वामी ग्रह नवम घरमें बैठा हो तब वो मनुष्य अत्यन्त विचित्र मणिव्रजों से भूषित होकर भूमिका पति होता है ॥ ८० ॥ और जिसकी कुण्डली में राज्ये १० दश ग्रह तो पंचम घर में बैठा हो और पंचमेश यह दशम घर में बैठा हो उसे त्रिकोण पति ग्रह कोई देखता हो तब वो मनुष्य अवश्य ही राजा होता है ॥ ८१ ॥ जिसकी कुंडली में राज्ये १० श लग्नेश चतुर्थेश और पंचमेश ग्रहों में से कोई ग्रह बली होकर नवे घर के स्वामी ग्रह से युक्त हो अथवा दृष्ट हो तब वो मनुष्य राजा होता हैं और यदि पंचम घर का स्वामी नवे घर के स्वामी के साथ लग्न

में बैठा हो उसे लग्नेश देखता हो अथवा लग्नेश उसके पास बैठा हो तब अथवा चौथे दशवे घरमें पंचमेश भाग्येश के साथ बैठा हो तब भी वो मनुष्य अवश्य राजा होता है ॥ ८२ ॥ चाहै किसी घर में बलवान् होकर किसी केन्द्र का पति कोई ग्रह त्रिकोण ९ । ५ के स्वामी गृह को साथ लेकर बैठा होवे तब वो मनुष्य बलवान् होवे तब तो राजा होता है और जो बलहीन मनुष्य होवे तब भी वो मनुष्य धन का पति होता है ॥ ८३ ॥ और जो नवे घर में बृहस्पति के घर ९ । १२ में शुक्र सहित दशम घर का स्वामी गृह बैठा हो उसे पंचम घर का स्वामी देखता होवे तब वो राजकुमार होकर राजा होता हैं ॥ ८४ ॥

अथ धनिकयोगाः ।

पञ्चमे निजभे शुक्रे लाभे रविसुते यदा ।
भोक्ता मणिसुवर्णानामधिपो जायते नृणाम् ८५
कर्कटे तु कलानाथे पंचमे लाभगे शनौ ।
नानाधनसमृद्धिः स्याद्धर्मवृद्धिश्च भूपता ॥८६
पंचमे तु मृगे कुम्भे समन्दे यस्य जन्मनि ।
बुधे लाभालये तस्य सर्वतो द्रविणोन्नतिः ।८७।

पंचमे तु रवौ सिंहे लाभे देवगुरौ सदा ।
वाहनस्वर्णरत्नानामधिपो जायते क्षणात् ८८
पंचमे तु गुरुक्षेत्रे सगुरौ यदि जन्मनि ।
लाभगाविन्दुभूपुत्रौ पृथ्वीपतिसमोनरः ॥८९॥
रविक्षेत्रे गते लग्ने रविणा संयुते सति ।
गुरुभौमयुतेवापि धनाधिक्यं दिने दिने ।९०।
कर्कभे जन्म लग्ने तु सचन्द्रे यदि जन्मनि ।
संयुते जीवभौमाभ्यां स सद्यो वित्तपो भवेत् ९१
कुजक्षेत्रगते लग्ने सभौमे यस्य जन्मनि ।
ज्ञशुक्रमन्दसंयुक्ते सधनेशसमो नरः ॥९२॥
गुरुभेगुरुसंयुक्ते जन्मलग्नगते सति ।
चन्द्राङ्गारयुतो यस्य तस्य लक्ष्मीरचंचला ।९३।
कन्यामिथुनयोर्लग्ने सबुधे यस्य जन्मनि ।
संयुते शुक्रमन्दाभ्यां वृषे वा धनिको भवेत् ९४
शुक्रराशिगते लग्ने ससिते यदि जन्मनि ।
चन्द्रजादित्यजाभ्यां तु युते दृष्टे धनाधिपः ९५

जिसकी कुंडली में पञ्चम घर में निज क्षेत्र २।७का होकर शुक्र बैठा हो या निज क्षेत्री १०। ११ शनि होकर ग्यारहवें घर में बैठा हो तब वो मनुष्य मणिसुवर्णों का भोक्ता और मनुष्यों का राजा होता है ॥ ८५ ॥ और जिसकी कुण्डली में कर्करशि का होकर चन्द्रमा पंचम घर में और ग्यारहवें घर में शनि हो तब वो मनुष्य को धन की समृद्धि और धर्म की वृद्धि और राजता अर्थात् राजपना प्राप्त होता है ॥ ८६ ॥ और जिस मनुष्य के पंचम घर में मकर का या कुम्भ का होकर शनि बैठा हो और लाभ स्थान में बुध बैठा हो तब उस मनुष्य को धन के निमित्त से पूर्ण उन्नति मिलती है ॥ ८७ ॥ और जिसकी कुंडली में पंचम घर में सिंह का होकर सूर्य बैठा हो और लाभ में ११ बृहस्पति बैठा हो तब वो मनुष्य वाहन (सवारी) सुवर्ण और रत्नों का स्वामी होता है ॥ ८८ ॥ और जिसकी कुंडली में पचम घर में मीन का या धन का होकर गुरु बैठा हो और चन्द्रमा और मंगल ग्यारहवें घरमें बैठा हो तब वो मनुष्य भूमि पतिके समान होता है ॥ ८९ ॥ और जिस मनुष्य के लग्न में सिंह का होकर सूर्य बैठा हो अथवा बृहस्पति और मङ्गल को साथ लेकर सूर्य लग्न में बैठा हो तब वो मनुष्य को प्रतिदिनधन का आधिक्य प्राप्त होता है ॥९०॥और जिसके

जन्म समय में जन्म लग्न कर्क हो उसमें चन्द्रमा बैठा हो मङ्गल और बृहस्पति साथ बैठे हों वो मनुष्य शीघ्र ही धनवान् होता है ॥ ९१ ॥ मेष अथवा वृश्चिक लग्न हो मङ्गल उस में बैठा हो बुध शुक्र शनि में से कोई ग्रह उसके साथ हो तब वो मनुष्य कुबेर के तुल्य धनवान् होता है ॥ ९२ ॥ और धन या मीन तो लग्न होवे उसमें चन्द्रमा या मङ्गल सहित बृहस्पति बैठा हो तब उस मनुष्य के घर अचला होकर लक्ष्मी निवास करती है ॥ ९३ ॥ और जिसकी कुण्डली में कन्या या मिथुन लग्न हो उसमें शुक्र अथवा शनि सहित बुध बैठा हो अथवा लग्न वृष होवे उसमें बुध शनि सहित शुक्र बैठा होवे तबवो मनुष्य कुबेरके समान धनवान होता है ॥ ९४ ॥ और वृष या तुला लग्न हो सूर्य बुध सहित शुक्र उसमें बैठाहो तबभी वह पुरुष कुबेर के समान धनवान् होता है ॥ ९५ ॥

अथ दरिद्रयोगः ।

त्रिकोणपतिसम्बन्धी यो यो वित्तप्रदो ग्रहः ।
सषडष्टव्ययाधीशैर्युतो धनविनाशकः ॥९६॥
रिपुभावपती लग्ने लग्नेशे रिपुभावगे ।
मारकस्वामिना दृष्टे युते वा निर्धनोभवेत् ९७

चन्द्रादित्यौ यदा लग्ने वाङ्गपे निधनालये।
मारकेण युते दृष्टे नरो भवति निर्धनः ९८
यदाङ्गनाथस्त्रिकभावनाथैर्युतेक्षितः पापयुतो
ऽथवा स्यात् पुत्रेश्वरेणापि युते विलग्ने शुभै-
रदृष्टे च भवेद्दणी सः ॥ ९९ ॥ अस्तारिनी
चत्रिकभावगे वा लग्नेश्वरे मारकनाथयुक्ते।
भाग्याधिपेवाथ शुभैरदृष्टे भवेद्दणीशो मनुजे-
श्वरोऽपि ॥ १०० ॥

नवम पंचम के स्वामी से सम्बन्ध करने वाला जो कोई धन के योग करने वाला ग्रह हो यदि छठे, आठवें, बारहवें घर के स्वामी के साथ बैठा हो तब दरिद्र का योग करते हैं ॥ ९६ ॥ और जिसकी कुण्डली में छठे घर का स्वामी ग्रह तो लग्न में बैठा हो और लग्न का स्वामी छठे घर में बैठा हो और किसी मारक ग्रह से दृष्ट या युक्त तब भी वो पुरुष अवश्य निर्धन होता है ॥ ९७ ॥ और जिसकी लग्न में सूर्य, चन्द्रमा बैठे हों अथवा लग्नेश अष्टम घर में बैठा हो उसे कोई मारक ग्रह देखता हो अथवा साथ बैठा हो तब भी वो पुरुष निर्धन होता है ॥ ९८ ॥ जिसका लग्नेश ग्रह छठे, आठवें, बारहवें घर के स्वामी

ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो अथवा पापग्रह के साथ हो अथवा पंचमेश से युक्त होकर लग्न में बैठा हो और शुभ ग्रह कोई उसे देखता न हो तब वो मनुष्य ऋणग्रस्त होता है ॥ ९९ ॥ और जिसकी कुण्डली में लग्न का स्वामी ग्रह अस्तगत हो या शत्रुक्षेत्री हो अथवा अपनी नीच राशि का बैठा हो अथवा छठे, आठवें, बारहवें घर में से किसी घर में बैठा हो और मारक ग्रह उसके साथ बैठा हो अथवा भाग्येश ग्रह उक्त घरों में से कहीं बैठा हो शुभ ग्रह कोईउसे देखता न हो तब वो मनुष्य यदि राजाभी हो तब भी ऋणी होता है ॥ १०० ॥

इति भावकुतूहल जातके चतुर्वेदवनमालिकृते
भाषानुवादे चतुर्दशोध्यायः ॥ १४ ॥

अथ द्वादशभावाध्यायः १५

तत्रादौ लग्नविचारः ।

अष्टारिव्ययगौ यस्य लग्नस्वामी खलैर्युतः ।
सुखं निहन्ति तस्याशु सर्वभावेष्वयम् विधिः१

जिसका लग्नेश ग्रह पापग्रहों से युक्त हेकर यदि लग्न से छठे, आठवें बारहवें, घर में बैठा होवे तब उस

पुरुष को लग्न (शरीर) के सुख को नाश करता है अर्थात् जिस पुरुष की कुण्डली में ये योग होता है उस पुरुष के शरीर में सदा दुःख रहेगा यानी उसको भी शरीर का सुख नहीं मिलेगा इसी तरह बारहों भावों में ये ही विधि समझलेना अर्थात् बारहों भावों में से किसी भाव का स्वामी गृह पाप गृह के साथ अपने भाव से छठे आठवें बारहवें घर में से किसी भाव में बैठा होगा तब उस पुरुष को उसी भाव का सुख नहीं प्राप्त होगा उदाहरण देखो—नवे घर को भाग्य कहते हैं उस नवे घर में जो लग्न है उस लग्नका जो स्वामी गृह है वो भाग्येश कहावेगा यदि वो किसी पापगृह के साथ नवम घर से छठे, आठवें, बारहवें घर में बैठा हो यानी जन्म लग्न से २।४।८। घर में बैठा होगा तब उस पुरुष के सब समय भाग्य को नुकसान पहुँचेगा इसी प्रकार हरएक भावोंके फल समझने।

लग्नपश्चन्द्रराशीशो नीचस्तु रिपुराशिगः ।
विनास्वर्क्षं त्रिकस्थश्चेद्बलहीनो ग्रहो भवेत् २
दुष्टस्थानगतो यस्य चन्द्रलग्नेश्वरो यदि ।
कार्श्यगदभयम् नित्यं वितनोति रिपूदयम् ३

निजोच्चे निजभे वर्गे स्वकीये लग्नपे यदि ।
दिर्घायुः सुखसन्तप्तो बली भोगी प्रजायते॥४॥

लग्न का स्वामी ग्रह और चन्द्रराशि का स्वामी यानी चन्द्राधिष्ठित राशि का स्वामी ग्रह इनमें से कोई अपने नीच का हो या अपने शत्रु की राशि का होकर बैठा हो अथवा अपनी राशि को छोड़कर अन्य किसी ग्रह की राशि का होकर छटे, आठवें, बारहवें घर में बैठा हो तब वो गृह बलहीन कहलाता है॥२॥ जिस मनुष्य का राशीश गृह दुष्टस्थान में बैठा हो अर्थात् अपने नीच का या अपने शत्रु की राशिको अथवा छटे, बारहवें, आठवें घर में बैठा हो तब उस मनुष्य के शरीर में दुर्बलता रोग का भय और शत्रु की वृद्धि होती है॥ ३ ॥ और जिसकी कुण्डली में लग्नेश गृह अपने उच्च का या अपने क्षेत्रका या अपने षडवर्ग का होकर बैठा होता है तब वो मनुष्य दीर्घायु वाला सुख भोगने वाला बड़ा बलवान् और अनेक भोगों का भोगने वाला होता है ॥४॥

अथ धनभावविचारः

धनेशः शुक्रसंयुक्तोऽथवा शुक्रात्त्रिके भवेत् ।
सम्बन्धी लग्ननाथेन नेत्रयोः पीडनं भवेत्॥५॥

चंद्रादित्यौ धने स्यातां निशान्धो मनुजो भवेत्।
अर्कलग्नपकोशेशाः सुखाधिपतिना युताः॥ ६॥
तातादीनां प्रकुर्वंति मन्दतां नेत्रयोरपि।
उच्चगो निजगेहस्थो ग्रहो नैवात्रदोषकृत्॥ ७॥
गुरुवाग्भवनाधीशौ त्रिकस्थागतौ यदा।
मूकतां कुरुतोप्येवं पितृमातृगृहेश्वरः॥ ८॥
ताभ्यां युतस्त्रिकस्थाने तेषां मूकत्वमादिशेत्।
बलाबलविवेकेन जातकज्ञैर्विशेषतः॥ ९॥
धनाधिपो माननवायभावे बली यदा तिष्ठति जन्मकाले। रमा विहारालयवासिनी वा निजोच्चमित्रालयगो जनानाम्॥ १०॥

जिस मनुष्यका लग्नसे दूसरे घरका स्वामी गृह शुक्र को साथ लेकर लग्नसे छठे आठवें बारहे घरमें बैठा हो अथवा शुक्राधिष्ठित राशिसे छठे आठवें बारवें घरमें बैठा हो और वो द्वितीयेश लग्ननाथसे संबंध करता होवे तब उस मनुष्यको दोनों नेत्रों में पीड़ा होती है॥ ५॥ और जिस मनुष्यके लग्नसे दूसरे घरमें चन्द्रमा और सूर्य दोनों साथ बैठे हों तब उस मनुष्यको निशांधता (रतोंधकारोग)

होता है इसीसे अर्क (सूर्य) लग्नेश और द्वितीयेश ये तीनों ग्रह चतुर्थ घरके स्वामीसे युक्त हों तब उस मनुष्यके पिता आदिके नेत्रोंके तेजको मन्द करते हैं परन्तु यदि उच्च का या स्वक्षेत्री होवे तब उक्त दोषका उत्पन्न करनेवाला नहीं होता है ॥ ६ ॥ ७ ॥ जिस मनुष्यकी कुण्डलीमें बृहस्पति तथा पंचमेश ये दोनों ग्रह लग्नसे छठें बारहे या अष्टम स्थान में बैठे हों तब उस मनुष्यको मूकता (गूंगा) करते हैं इसी तरह पिता माताके घरके स्वामियों का भी ये ही फल जानना अर्थात् दशमेशके साथ लग्नेश त्रिकमें बैठा हो तब पिताको और चतुर्थेशको साथ लेकर लग्नेश त्रिक ६ । ८ । १२ में बैठा हो तब उसकी माताको रतोंधकारोग कहना चाहिये इसी तरह भ्रात्रादि स्थानों के स्वामीका फल जानना परन्तु इसमें जातक शास्त्रके जानने वालों को बलाबलका विचार करना चाहिये ॥ ८ ॥ ९ ॥ और जिसका द्वितीयेश ग्रह बली होकर दशम या नवम या एकादश घर में बैठा हो तब उस मनुष्यके घरमें लक्ष्मी विहार करनेवाली होतीहै अथवा धनेश अपने उच्च का होकर या मित्र क्षेत्री होकर बैठा हो तब भी पूर्वोक्त फलको ही देता है ॥ १० ॥

अथ तृतीयभावविचारः

सहजे सहजाधीशे षडादित्रयगेऽपि वा। सहजेपि विशेषेण भ्रातुः सौख्यं न जायते॥११॥ सहोत्थभावेशकुजौ सपापौ पापालये वा भवतो जनस्य। उत्पाद्य सद्यो निहतः सहोत्थानितीरितं जातकतत्त्वविज्ञैः॥ १२ ॥ स्त्रीखेटः सहजाधीशः शुक्रो वाऽथ निशाकरः। तत्रगो भगनी दत्ते भ्रातरं पुरुषग्रहः॥ १३ ॥

जिसकी कुण्डलीमें तृतीय भवनका स्वामी तीसरे घर में बैठा हो अथवा छटे सातवे आठवें घरमें बैठा हो तब उस मनुष्यको सहोदर भाईका सुख नहीं होता है॥ ११॥ और जिसका तृतीय घरका स्वामी गृह तथा मंगल दोनों गृह पापगृह सहित हों अथवा पापी के घर में बैठे हों तब पुरुष के भाई जन्म लेके मर जाते हैं ऐसा जातक तत्व के जानने वाले कहते हैं॥ १२॥ और जिसकी कुण्डली में तीसरे घर का स्वामी स्त्री गृह हो अथवा शुक्र हो या चन्द्रमा हो वो कोई तीसरे घरमें बैठा हो तब उसके भगिनी बहुत होती हैं और यदि पुरुष गृह तीसरे घर में बैठा होवे तब उस पुरुष के भाई बहुत होते हैं॥१३॥

अथ चतुर्थभावविचार

सुखपतिः सुखगस्तनुनाथयुक् जनयति प्रवरालयमङ्गिनाम् । त्रिकगतो विपरीतमिहादिभिः सुखजनुःपतिरेव तथा बुधैः ॥१४॥ सुखाधीशे जीवे निवहचिन्ता भृगुसुते । विभूषायोषांगं प्रवरतुरगाणामपि बुधे । अगौ मन्दे नीचोद्भवसुखमते रेवदिनपे पितुश्चन्द्रे मातुःक्षितिनिकरचिन्ता क्षितिःसुते ॥ १५॥ त्रिकोणे वाहनाधीशे केन्द्रे च बलसंयुते । निजोच्चादिपदे नूनं वाहनं नूतनं भवेत् ॥ १६ ॥

जिसका चौथे घर का स्वामी गृह चौथे घर में ही बैठा हो लग्नेश गृह उसके साथ हो तब उस मनुष्यको उत्तम मन्दिर की प्राप्ति होती है यदि चतुर्थेश छठे आठवें घरमें लग्नेश के साथ बैठा हो तब विपरीत फल करता है यानी उस मनुष्य के विद्यमान मन्दिर भी नष्ट होते हैं ऐसा बुद्धिमान मनुष्यों ने फल कहा है॥१४॥ जिसका चौथे घर का स्वामी गृह बृहस्पति हो तब उस मनुष्य को सुख की चिंता रहती है यदि शुक्र चौथे घर का स्वामी हो तब पुरुष को भूषण पत्नी और अंगकी चिंता रहती है यदि बुध होवे तब उत्तम घोड़ा आदि

सवारी की चिंता रहती है राहु या शनि चौथे घरका स्वामी हो तब नीच जनके द्वारा सुखकी चिंता होती है सूर्य चतुर्थेश हो तब पिता की चिन्ता होती है चन्द्रमा के सुखेश होने से माता की चिंता होती है और मंगल के सुखेश होने से भूमि के निमित्त पूर्णचिंता होती है॥१५॥ जिसके जन्म समय में चौथे घर का स्वामी ग्रह त्रिकोण में ५।९ अथवा केन्द्र १।४।७।१० में बैठा हो अथवा अपने उच्चादि स्थान गत बलवान् होकर बैठा हो तब उसको अवश्य वाहन की (सवारी की) प्राप्ति होती है ॥१६॥

अथ पञ्चमभावविचारः।

लग्नाधीशे कुजक्षेत्रे पुत्रभावपतावरौ।
म्रियते प्रथमापत्यं ततोऽपि न सुतोद्भमः॥१७॥
षडादिथयगे नीचे पुत्रेशे पापसंयुते।
काकवन्ध्यापतिस्तत्र केतुचन्द्रसुतो यदा॥१८॥
तदीशोनीचगो यत्र पुत्रभावं न पश्यति।
तत्रैव बुधमन्दौ वा काकवन्ध्यापतिर्भवेत्॥१९॥
धर्माधीशोऽङ्गगो नीचे सुतेशो यदि जन्मनि।
केतुज्ञौ पंचमे स्यातां पुत्रं कष्टाद्विनिर्दिशेत् २०
पंचमाधिपतिः केन्द्रे त्रिकोणे वा शुभैर्युतः।

तदा पुत्रसुखं सद्यो विलोमेनविलम्बतः॥२१॥
सन्तानभवनाधीशो जन्मलग्नाधिपस्तथा।
नरराशौ तदा पुत्रः स्त्रीराशौ कन्यकाभवेत्२२

जिस मनुष्य की कुण्डली में लग्नेश ग्रह मंगलके घर १।८ में हो और पंचम घर का स्वामी छठे घर में बैठा हो तब उस मनुष्य का प्रथम पुत्र होकर मर जाता है तदनन्तर उसके पुत्र नहीं होता॥१७॥ और जिसका पंचमेश ग्रह नीच का होकर छठे सातवें या आठवें घरमें बैठा हो और वो किसी पापग्रह के साथ हो तब वो पुरुष वंध्या स्त्री का पति होता है अथवा केतु के साथ बुध यदि छठे आठवें सातवें घर में बैठा हो तब भी वो पुरुष वन्ध्या का पति होता है॥१८॥ और जिसका पंचम घर का स्वामी ग्रह नीच का होकर बैठा हो और पुत्र भवन ५ को न देखता हो अथवा बुध और शनि दोनों पञ्चम घर में बैठे हो तब वो काकवन्ध्या (एक सन्तति उत्पन्न करने वाली) स्त्री का पति होता है॥१९॥ और जिसकी कुंडली में नवम घरका स्वामी ग्रह तो लग्न में बैठा हो और पञ्चम घर का स्वामी नीच का हो और केतु और बुध दोनों पञ्चम घरमें बैठे हों इस योग वाले पुरुष के सन्तति का होना ही दुर्घट होता है॥२०॥ और जिसकी कुण्डली में पंचमेश केन्द्र १।४।७।

१० में अथवा त्रिकोण में शुभ ग्रह को साथ लेकर बैठाहो तब उसको शीघ्र ही पुत्र सुख को देते हैं और विलोम होने से विलोम फल होता है अर्थात् केन्द्र में कोण में न हो तब देर से सन्तति का सुख होता है॥२१॥ और जिसकी कुंडली में पञ्चम घरका स्वामी ग्रह और जन्म लग्नका स्वामी ग्रह यदि पुंराशि के होकर बैठे हों तब उस पुरुष के पुत्र संतति होती है और जो उक्त दोनों ग्रह स्त्री राशि के होकर बैठे हो तब कन्या सन्तति होती है॥२२॥

अथ शत्रुभावविचारः।

रोगेशो लग्नगो यस्य निधनस्थोऽपि जन्मनि।
व्रणोदयस्तु सर्वांगे सपापो न व्रणं दिशेत् २३
एवं तातादिभावेशास्तत्तत्कारकसंयुताः।
व्रणाधिपयुताश्चापि षडादित्रयभावगाः॥२४॥
तेषामपिव्रणं वाच्यं जातकज्ञैः सुकोविदैः।
कारकस्य दशाकाले व्रणमागन्तुकं दिशेत् २५
शिरोदेशे भानुर्मुखपरिसरे शीतगुरलं धरासूनुः
कण्ठे जनयति बुधो नाभिनिकटे। गुरुर्नासा-
मध्ये पदनयनयोरेव भृगुजः शनी राहुःकेतुर्व्र-

णमुदरभागे जनिमताम् ॥२६॥ लग्नेशो यदि भौमभे बुधयुतो रोगं सुखे जन्मिनां रोगांगाधिपती यदा कुजबुधौ चन्द्रेण वा राहुणा। मन्देनापि युतौ प्रयच्छत इति प्रायोऽङ्गगो रात्रिपो युक्तो वा तमसा सितं च शनिना कुष्ठं तदा श्यामलम् ॥२७॥

जिसकी कुंडली में छठे घर का स्वामी ग्रह लग्न में अथवा अष्टम घर में बैठा हो तब उस मनुष्य के सर्वांगों में घावों का चिन्ह होता है और जो वो ही लग्नेश पापग्रहके साथ हो तब भले ही छठे आठवें घर में बैठा हो पन उस पुरुष के शरीर में घावों का चिन्ह नहीं होता है ॥२३॥ इसी प्रकार पिता माता भाई आदि भावों के स्वामी ग्रह उन्हीं२ कारकों से युक्त हों तथा छठे करके स्वामी से भी युक्त होकर छठे सातवें आठवें घरमें से किसी घरमें बैठे हो तब जातक शास्त्रके जानने वाले पंडितोंको उस पुरुषके माता पिता भ्राता आदि के शरीरमें भी घावों का चिन्ह कहना चाहिये यदि मातृ घरका स्वामी षष्ठेशके साथ छठे आठवें सातवें घरमें बैठाहो तब उस पुरुषकी माताके शरीरमें घावों का निसान बताना चाहिये इसी प्रकार पिता भ्रातादिका भी समझ लेना परंतु कारक ग्रहोंके दशाके समयमें होने वाले

व्रणोंके निसानोंको कहैं ।४५। घावके योग करनेवाला यदि सूर्यहो तब उस पुरुषके शिरमें चंद्रमा घावके योग का करने वालाहो तब मुखपर मंगल घावोंके योगको करता होवे तब कंठमें बुध घाव योग करनेवाला होवे तब नाभिके समीप यदि बृहस्पति घावोंके योगको करता होवे तब नासिका के समीपमें शुक्रउक्त योग करनेवाला हो तब पाँवों में अथवा नेत्रोंमें और जो शनि या राहु केतुमें से कोई घावोंके योग का करनेवाला हो तब उस पुरुषके उदरमें कोई घावका चिन्ह होताहै ॥३६॥ जिसकी कुंडलीमें लग्नका स्वामी ग्रह बुधके साथ यदि मंगलके घर १।८ में बैठा होवे तब उस पुरुषके मुखमें रोग होता है और छठे घरके तथा लग्नके स्वामी यदि मङ्गल तथा बुध हों और राहु या शनि अथवा मङ्गल से युक्त हों तब उसके शरीर में कुष्ट रोग होता है इसमें भी ये निर्णयहै कि जो राहुयुक्त चन्द्रमा लग्नमें हो तब सफेद कोढ़ और शनियुक्त चन्द्रमा लग्नमें होवे तब उस पुरुषके शरीरमें काले रंगका कोढ़ होता है ॥ २७ ॥

अथ सप्तमभावविचारः ।

विना स्वर्क्षं कलत्रेशश्चिकस्थानगतो यदि ।
रोगिणी तरुणीं दत्ते तथा तुङ्गपदं बिना॥२८॥
जायास्थानगते शुक्रे कामी भवति मानवः ।

पापभे पापसंयुक्ते कवौ नारीसुखोज्झितः॥२९॥

जिसकी कुण्डली में सप्तम घरका स्वामी ग्रह यदि स्वक्षेत्री तथा निजोच्चके बिना छठे आठवें बारहवें घरमें बैठा हो तब उस मनुष्यको रोगिणी भार्या प्राप्त होती है ॥२८॥ और जिस मनुष्यके लग्नसे सप्तम घरमें शुक्र बैठाहो तब वो पुरुष कामी होता है और जो पापग्रहसे युक्त होकर शुक्र पापग्रह की ही राशिमें बैठा हो तब वो मनुष्य स्त्रीके सुख से रहित होता है ॥ २९ ॥

चतुर्थेमहिलाधीशे लग्ने लग्नाधिपे यदा ।
कलत्रे वा कुटुंबे वा व्यभिचारी नरो भवेत्३०
यावन्तो निधने खेटा निजस्वामिसमीक्षिताः ।
तावन्तोऽपि विवाहाः स्युः प्राणिनां कथिता बुधै
जायाधीशे निजक्षेत्रे निजोच्चे कोणकण्टके ।
शुभग्रहैर्युते दृष्टे विवाहः सत्वरं भवेत् ॥३२॥

जिसके सप्तमेश चतुर्थ घर में बैठा हो और लग्नेश लग्नमें या सप्तम घरमें अथवा दूसरे घरमें बैठा हो तब वो पुरुष व्यभिचारी परस्त्री गामी होता है ॥३०॥ जितनी संख्याके ग्रह अष्टम घरमें बैठे हों उन्हें अष्टमेश देखता हो तब उस पुरुषके उतनी संख्याकेही विवाह होते हैं ॥३१॥ और सप्तम घरका स्वामी अपने घरमें बैठाहो अथवा अपने

उच्चका होकर नवे पाँचवे घर में अथवा केंद्र में १।४।७।१० बैठा हो और शुभ ग्रह उसे देखता हो या शुभग्रह साथ बैठा हो तब उस पुरुष का शीघ्र ही विवाह हो जाता है ॥३२॥

अथाष्टमभावविचारः ।

अष्टमाधिपतिः पापैर्युतो लग्नेश्वरोऽपि चेत् । करोत्यल्पायुषं जातं शुभेक्षणविवर्जितः ॥३३॥ तमःशनिभ्यां निधनाधिनाथः पापैर्युतो हीनबलोऽस्तगो वा । अल्पायुषं जातकमेव सद्यः करोति नैवोच्चनिजर्क्षगश्चेत् ॥ ३४ ॥ अष्टमस्थे रवौ वह्नेश्चन्द्रे तु जलयोगतः । करवालात्कुजे ज्ञेयं मरणं ज्वरतो बुधे ॥३५॥ गुरौ त्रिदोषतः शुक्रेक्षुधया तृषया शनौ । चरस्थिरद्विस्वभावैः परदेशे गृहे पथि ॥३६॥ केन्द्रे कोणेऽष्टमाधीशे तुंगादिपदगे तदा । दीर्घायुरुदितं पूर्वैर्व्यत्यये हीनमंगिनाम् ॥३७॥

जिसका अष्टम भवनाधीश तथा लग्न का स्वामी ग्रह पापग्रहके साथ चाहै किसी घरमें बैठा हो उन्हें कोई शुभग्रह देखता न हो तब उस मनुष्य की अल्पायु होती है ॥३३॥

जिस मनुष्यका अष्टमेश ग्रह शनि से राहुसे या और किसी पापग्रहसे युक्त हो या हीनबल हो अथवा अस्तगत हो पन अपने उच्चका नहो और स्वक्षेत्रीभी नहो तब उस पुरुष को अल्पायु करता है ॥ ३४ ॥ यदि उक्त लक्षण युक्त सूर्य अष्टम घरमें बैठाहो तब उस मनुष्यकी अग्निके जलनेसे चंद्रमाउक्त लक्षणयुक्त अष्टम घरमें बैठाहो तब जलके योगसे उक्त लक्षण मंगल अष्टम घर में बैठा हो तब खड्ग से और उक्त लक्षण बुध अष्टम घरमें बैठा हो तब उस मनुष्य की ज्वरसे मृत्यु होती है ॥३५॥ उक्त लक्षण बृहस्पति अष्टम घरमें बैठा हो तब त्रिदोषसे शुक्रके होने से भूखसे और उक्तलक्षण शनिके अष्टम घरमें बैठनेसे प्याससे मृत्यु होती है और उक्त लक्षण ग्रह चर राशि का होकर अष्टम घर में बैठा हो तब परदेशमें और उक्त लक्षण ग्रह स्थिर राशिका होकर अष्टम घरमें बैठा हो तब घरमें और उक्त लक्षण ग्रह दुःख भाव राशिका होकर अष्टम घरमें बैठाहो तब उस मनुष्यकी मार्गमें मृत्यु होती है ॥३६॥ जिसकी कुंडलीमें अष्टम घरका स्वामीग्रह केंद्रमें यानी लग्न चतुर्थ सप्तम और दशम घर में अथवा नवम पंचम घरमें अपने उच्च का या स्वक्षेत्री या मित्र क्षेत्री होकर बैठा हो तब वो पुरुष दीर्घायु होता है और यदि अष्टम घर का स्वामी केंद्र कोण को छोड़कर किसी अन्य स्थान में नीचका होकर या शत्रुक्षेत्री आदि होकर बैठा हो तब उस मनुष्यको अल्पायु करता है ॥३७॥

अथ नवमभावनिर्णयः ।

लग्नादिन्दोर्नवमभवनं भाग्यमार्य्यैःप्रदिष्टंभाग्यं तस्मात्प्रथममसुतः संविचिन्त्यं प्रयत्नात् । युक्तं दृष्टं जननसमये स्वामिना सौम्यखेटैर्जन्तोर्भाग्यं प्रसरति विधोरेव शौक्ली कलेव ॥ ३८ ॥ सहोत्थपुत्रांगगतो ग्रहश्चेद्भाग्यं प्रपश्यद्यदि वा सवीर्यः । हिरण्यमाली खलु भाग्यशाली प्रसूतिकाले यदि यस्य जन्तोः ॥ ३९ ॥ निजोच्चगे पुण्यगृहे नभोगो बली यदा तिष्ठति जन्मकाले । स पुण्यशाली नवरत्नमाली धराधिपो राजकुलप्रसूतः ॥ ४० ॥ जीवज्ञशुक्रा नवमे बलिष्ठा सुतेशदृष्टा यदि जन्मकाले । सुपुण्यकर्ता नरपालवर्य्यः नृपालजातो नरपालवर्य्यः ॥४१॥ भाग्यभावाधिपो नीचे रविलग्नकरे सति । अरिगेहगतो वापि भाग्यहीनो नरो भवेत् ॥ ४२ ॥

लग्नसे तथा चंद्राधिष्ठित राशि से नवम घर को भाग्य स्थान कहते हैं इससे विद्वानों को उचित है कि प्रथम मन से भाग्य का ही विचार करना चाहिए इससे

जिसके जन्म समय में भाग्य स्थानको भाग्येश अथवा शुभ ग्रह देखते हों अथवा बैठे हों तब उस मनुष्य का भाग्य शुक्लपक्ष में चन्द्रमा की कला की तरह नित्य बढ़ता है ३८ तीसरे घर में या पञ्चम घर में या लग्न में बैठा हुआ ग्रह यदि बलवान् कोई ग्रह भाग्य ९ स्थान को देखता हो तब वो मनुष्य सुवर्ण मालों का धारण करने वाला बड़ा भाग्यशाली होता है ॥ ३९ ॥ जिसकी कुण्डली में अपने उच्च का होकर बली ग्रह नवम घर में बैठा हो तब भी वो मनुष्य पुण्य कर्मोंका करने वाला नवीन रत्नों की मालाका पहरने वाला भूमिपति और राजकुल का जन्म लेने वाला होता है ॥ ४० ॥ और जिसकी कुण्डली में बृहस्पति बुध शुक्र में से कोई ग्रह बली होकर नवम घर में बैठा हो उसे पञ्चम घर का पति देखता हो तब वो मनुष्य पुण्यकर्म करने वाला राजाका मन्त्री या राजाके घरमें जन्म लेने वाला या राजमण्डल में मुख्य राजा होता है ॥ ४१ ॥ और जिसकी कुण्डली में भाग्य ९ घरका स्वामी ग्रह नीचका होकर सूर्य की किरणों में अस्त होकर बैठा हो अथवा छठे घर में बैठा हो तब भी वो मनुष्य भाग्यहीन होता है ॥ ४२ ॥

अथ दशमभावविचारः ।

कर्मभावाधियो नीचे षडादित्रयगोऽपि चेत् ।
करोति कर्मवैकल्यं स्वोच्चस्वर्क्षपदं विना ॥ ४३ ॥

कर्माधिपे केन्द्रनवात्मजर्क्षे बुधेज्यदृष्टे सबले नराणाम् ॥ तुरङ्गमातङ्गनवाम्बराणि भवन्ति नानाधनसंयुतानि॥४४॥ कर्मठः केन्द्रकोणस्थो ज्योतिष्टोमादियज्ञकृत्। कूपायतनकर्ता च वेवेता तिथिपूजकः ॥४५॥ लग्नादिन्दोर्दशमभवने जन्मकाले नराणामादित्याद्यैः क्रमत उदिता जीविका खेचरेन्द्रैः। तातान्मातुर्निजरिपुकुलान्मित्रपत्नात्सहोत्थात्पत्न्याः पुत्रादपि बुधवरैर्जातकज्ञैर्विशेषात् ॥४६॥ रविशीतकरांगकर्मगानां पतिभृत्याभिहिता नरस्य वृत्तिः कनकोर्णतृणौषधैर्दिनेशे कृषिदाराम्बुसमाश्रयाच्च चन्द्रे।४७। अथ साहसवह्निधातुशास्त्रैः क्षितिजे काव्यकलाकलापतोज्ञे लवणाद्विजकांचनेभदेवैर्मणिगोरौप्यचयैः क्रमाच्च गुर्वोः ॥४८॥ रविजे श्रमभारनीचतः स्यादिह कर्मेशभवांशनाथवृत्तिः क्षितवैरिनिजर्क्षतुङ्गसंस्थैर्हितवैरिस्ववशाद्धनासिरुच्चैः।

और जिसकी कुण्डली में दशम भवन का स्वामीग्रह नीच का होकर बैठा हो अथवा छठे सातवें आठवें घरमें

बैठा हो तब उस पुरुष के कर्ममें विकलता करता है पन वो ग्रह अपने उच्च का न हो और अपने क्षेत्र का भी न हो ॥४३॥ और जिस मनुष्यका दशम घरका स्वामी ग्रह केन्द्र में यात्री लग्न सप्तम चतुर्थ दशम घरमें अथवा नवम पंचम घर में बली होकर बैठा हो तब उस मनुष्य के हाथी घोड़े नवीन वस्त्र आदि अनेक प्रकार के धन होते हैं ॥ ४४ ॥ और जिस मनुष्यके दशम घरका स्वामी नवम पञ्चम लग्न चतुर्थ दशम सप्तम घरोंमें किसी घरमें बैठा हो तब वो मनुष्य बड़ा कर्मठ ज्योतिष्टोमादि यज्ञों का करने वाला कुए मन्दिर का बनाने वाला और देवता अतिथि की पूजा करने वाला होता है ॥४५॥ जिसकी कुण्डली में लग्न से अथवा चन्दमासे दशम घरमें सूर्यादि ग्रह बैठे हों तब उनका क्रम से इस प्रकार फल जानना सूर्य दशम घरमें बैठा हो तब पितासे चन्द्रमा होवे तो माता से मङ्गल बैठा होवे तब अपने शत्रु कुल से बुध दशम घरमें हो तब मित्रसे बृहस्पति दशम घर में बैठा हो तब भाईसे शुक्र बैठा हो तब उस पुरुष को बुधवर ज्योतिर्विदों ने कहा है कि पुत्र से जीविका प्राप्ति होती है ॥ ४६ ॥ जिस मनुष्य की कुण्डली में सूर्य और चन्द्रमा में से कोई लग्नेश दशम स्थान में बैठा हो तब उस मनुष्यकी पति वृत्ति से जीविका होती है अर्थात् उस गृह के पति की वृत्तिसे जीवका होती है उसी

बातको कहते हैं यदि सूर्य लग्नसे दशम घरमें होवे तब उस मनुष्य की सुवर्ण ऊन तृण और औषधि आदि से जीविका होतीहै और जो चन्द्रमा लग्नसे दशम घरमें होवे तब खेती स्त्री और जलके संबन्धसे जीविका होतीहै॥४७॥और जिसकी कुण्डली में यदि मंगलजी लग्न से दशम घरमें बैठा हो तब उस मनुष्यको साहसमे वन्हि (अग्नि) से या किसी धातुसे अथवा शस्त्रसे जीविका होती है और लग्न से दशम यदि बुध होवे तब काव्यकलाओंके समुदायसे और जिसके लग्न से दशम बृहस्पति वर्तमान होता है तब उस मनुष्य को लवणके व्यापारसे ब्राह्मणसे सुवर्ण हाथी और देव पूजनादि करनेसे जीविका होती है और जो शुक्र लग्नसे दशम घरमें बैठाहो तब उस पुरुषकी मणि गऊ चाँदी आदि के व्यापारमे जीविका होती है ॥४८॥ और यदि शनि लग्नसे दशम बैठा हो तब परिश्रम करनेसे बोझ उठानेसे अथवा किसी नीच जाति या नीचकर्म करनेसे जीविका प्राप्त होती और दशम तथा एकादश घरका स्वामी जिस गृहके नवांशमें बैठा हो तब उस मनुष्यको उसी नवांशेष से जीविका प्राप्त होती है और जिसका दशमेश मित्रराशि में हो तब मित्रसे यदि शत्रु क्षेत्री होवे तब शत्रु से अपने क्षेत्रमें दशम स्वामी होवे तब अपने बल से और उच्चका होकर दशम भाव का स्वामीहो तब किसी उत्तम ज्ञातिसे जीविका प्राप्ति होतीहै॥४९॥

अथ लाभभावविचारः।

लाभेशो यदिकेन्द्रस्थो लाभाधिक्यं प्रजायते।
षडादित्रयगे नीचे लाभबाधा नृणां सदा ५०
आदित्येन युतेदृष्टे नृपकुलाल्लाभालये चौरतो
लाभो नित्यमथेंदुना गजजलप्रद्भूतधामाजनैः।
भूपुत्रेणविचित्रयानमणिभूस्वर्णप्रवालादिभिर्ज-
न्तोश्चन्द्रसुतेनशिल्पलिखनव्यापारयोगैरलम् ५१
जीवेनापि नरेशयज्ञगजभूज्ञानक्रियाभिः सिते
नालंवारवधूगमागमगुणैराख्यानमुक्ताफलैः।
मंदेनापि गजब्रजव्यसनभूनीलेन्द्रलोहब्रजैरित्थं
तंत्रबहुग्रहैरभिहितो नानार्थलाभो बुधैः।५२।

जिसकी कुण्डली में लाभेश ११ ग्रह केन्द्र १।४।७।१० में बैठा हो तब उसको लाभ आधिक्य होता है यदि ग्यारहवें घरका स्वामी ग्रह छटे सातवे आठवें घरमें से किसी घरमें नीचका होकर बैठा हो तब मनुष्य को लाभ में बाधा होती है ॥५०॥ और जो लाभ स्थान सूर्य से युक्त अथवा दृष्ट हो तब उस पुरुष को राजकुल से तथा चोर से लाभ होता है जो चन्द्रमा लाभ में बैठाहो अथवा लाभ भवनको देखता हो तब हाथी के निमित्त से जलसे या किसी उत्तम

स्त्री के निमित्त से लाभ हो यदि मङ्गल लाभ ११ में स्थिति हो या लाभ को देखता हो तब विचित्र सवारियों के निमित्त से या मणि भूमि सुवर्ण तथा मूंगा आदि वस्तु के व्यापार से और जो बुध ग्यारहवें घर में बैठा हो या देखता हो तब उस मनुष्य को किसी कारीगरी के काम से या लिखने से या अन्य अनेक व्यापार से लाभ होता है ॥ ५१ ॥ बृहस्पति से दृष्ट अथवा युक्त ग्यारहवां भाव हो तब वो मनुष्य को राज्य यज्ञ हाथी भूमि और ज्ञान क्रिया से लाभ होता है यदि लाभ में शुक्र बैठा हो या लाभ को देखता हो तब वेश्या से पर देश के आने जाने से या गुण के व्याख्यान से और मुक्ता फल से लाभ होता है और जो लाभ ११ घर में शनि बैठा हो या देखता हो तब उस मनुष्य को हस्ति समूह से किसी व्यसन से भूमि इन्द्रनील मणि और लोह से लाभ होता है इस प्रकार बुद्धिमान मनुष्यों ने अनेक ग्रहों से मनुष्यों के लिये नानार्थ लाभ प्राप्ति कही है ॥ १२ ॥

अथ व्यय भाव विचार ।

शुभग्रहाः प्रयच्छंति व्ययस्था विपुलं धनं ।
विपरीतं खला जंतोर्जन्मकाले विशेषतः ॥५३
क्षीणेन्दुरन्त्यगो यस्य रविणा सहितो यदि ।

तस्य वित्तं हरेन्द्राजा कुजेनाऽपि युतेक्षितः५४

जिस मनुष्य की कुण्डली में लग्नसे बारहवें घरमें शुभ ग्रह बैठे हों तब उस मनुष्यको विपुल धन प्राप्त होता है इसी तरह यदि बारहवें घरमें पापग्रह बैठे हों तब कहेसे विपरीत फल देते हैं अर्थात् धनका नाश करते हैं ॥ ५३ ॥ जिसके लग्नसे बारहवें घरमें क्षीण चन्द्रमा सूर्य सहित बैठा हो तब उस पुरुष के धन को राजा हर लेता है और जो मङ्गल सहित या मङ्गलसे दृष्टि चन्द्रमा बारहवें घरमें बैठा हो तब भी धन का नाश करता है ॥ ५४ ॥

इति भावकुतूहलजातके चतुर्वेद वनमालिकृत
भाषानुवादे पञ्चदशो ध्यायः ॥१५॥

अथ दशानयनाध्यायः ॥ १६ ॥

अथ महादशावर्षसंख्या ।

रसा आशाःशैला वसुविधुमिता भूपतिमिताः
नवेला शैलेला नगपरिमिता विंशतिमिताः ।
रवार्विदावारे तमसि च गुरौ भानुतनये बुधेकेतौ
शुक्रे क्रमत उदिताः पाकशरदः ॥५५॥

अब सब ग्रहों की विंशोत्तरी महादशा के वर्षों की संख्या निरूपण करते हैं ६ दश १० सात ७ अठारह १८ सोलह १६ उन्नीस १९ सत्रह १७ सात ७ और २० २० क्रम से इस संख्या के प्रमाण से आ चं भौ रा जी श बु के शु ग्रहों की महादशा होती हैं जैसे सूर्य की ६ वर्ष की चन्द्रमा की दश वर्ष की मङ्गल की सात वर्ष की राहु की अठारह वर्ष की बृहस्पति की सोलह वर्ष की शनि की उन्नीस वर्ष की बुध की सत्रह वर्ष की १७ केतु की सात वर्ष की और शुक्र की पूर्ण बीस वर्ष की महादशा होती है ॥ ५५ ॥

अथ दशागणनाक्रमः ।

कृत्तिकादिस्त्रिरावृत्या दशा विंशोत्तरी मता ।
अष्टोत्तरी न संग्राह्या मारकार्थं विचक्षणैः ५६

कृत्तकादि नक्षत्रों की अभिजित् रहित गणना करे नौ के भाग देने से तीन आवृत्ति में विंशोत्तरी दशा होती है कृत्तिका नक्षत्र में जन्म लेने वाले की सूर्य की, रोहिणी में जन्म वाले की चन्द्रमा की, मृगशिर में जन्म वाले की मङ्गल की, आर्द्रा में जन्म वाले की राहु की, पुनर्वसु में जन्म वाले की बृहस्पति की, पुष्य में जन्म वाले की शनि की, श्लेषामें जन्म वालेकी बुधकी मघामें जन्म लेने वालेकी केतु की और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लेने वाले पुरुष

को शुक्र की दशा होती है इसी तरह से उत्तरा फाल्गुनी के क्रम से फिर उत्तराषाढ़ से क्रम तीन आवृति करने से सब दशा निकालनी, दशा दो होती हैं विंशोत्तरी और अष्टोत्तरी परन्तु मारक कारक के विचार में। अष्टोत्तरी दशा बुद्धिमानों ने नहीं ग्रहण की है इस से मारक कारक कहने को विंशोत्तरी को ही प्रधान रक्खा है ॥ ५६ ॥

अथ दशाभुक्तभोग्यक्रमः।

गतर्क्षनाड़ीनिहता दशाब्दैर्भभोगनाड्या विहता फलं यत्। वर्षादिकंभुक्तमिह प्रवीणैर्भोग्यं दशाब्दान्तरितं निरुक्तम् ॥ ५७ ॥

प्रथम ही तो जन्म नक्षत्र का भुक्त भोग निकलना कि किस देव दत्त का किस नक्षत्र को जन्म है जिस नक्षत्र का जन्म हो उसी नक्षत्र का विचार करना कि जन्म समकाल में उसी नक्षत्र की कितनी घड़ी पल भोगचुकी है और उसी नक्षत्र का समग्र भोग कितनी घड़ी का है जो जन्म काल से पूर्व घड़ी बीत गई है उसको भुक्त कहते हैं और जो समग्र नक्षत्र का भोग है उसे भभोग कहते हैं ये भुक्त है और भभोग तिथि पत्र से निश्चय करना, तदनन्तर जो घड़ी भुक्त हों उस अङ्क को ग्रह की दशा संख्या वर्षाङ्क से गुणा करना तब जो अङ्क सिद्ध हो उस अङ्क में भभोग का समग्र का भाग देना इसका

जो लब्धांक आवे उस लब्धांक को वर्ष जानना जो शेषांक रहे उसे बारह से गुणा करना तब जो अंक सिद्ध होवे उसमें फिर भभोग का भाग देना उसका जो लब्धांक आवे उसे मास समझना तदनन्तर शेषांकको तीससे गुणा करना तब जो अंक सिद्ध हो उसे दिन समझना तदनन्तर शेषांक को साठ से गुणा करना तब जो अंक सिद्ध हो उसमें फिर भभोग का भाग देना उसके लब्धांक को घड़ी समझना उसके शेषांक को फिर साठ से गुणा करना तब जो अंक हो उसमेंफिर भी भभोगका ही भाग देना उसके लब्धांकको पल समझना तदनन्तर शेषांक को फिर साठ से गुणा करके भभोग का ही भाग देकर लब्धांक को विपल समझना इस प्रकार जो वर्ष मास दिन घड़ी पल और विपल के अंक आए हों उन्हें भुक्त वर्षादि जानने उसी सिद्धांक वर्षादि अंक को समग्र दशांकमें घटा देना घटानेके पश्चात् जो अंक समग्र दशांक में शेष रहा है उस अंक को उसी ग्रह की भोग्य दशा जाननी इस प्रकार से ये विदित होता है कि इस देवदत्त का अमुक ग्रह की दशा का जन्म है तिसमें इतने वर्ष मास घड़ी पल इसके पूर्व जन्म में बीत गये हैं और इतनी संख्या परिमित वर्ष मासादि इस जन्म में भोग्य है ये दशाओं के भुक्त भोग्य निकालने की रीति

है उदाहरण इसका ये है, जैसे किसी पुरुष का रोहिणी नक्षत्र की अठारह १८ घड़ी इष्ट का जन्म है इसका चंद्रमा की दशाका जन्म हुआ तब हमें देखना पड़ाकि इस१८ इष्ट पर चन्द्रमा की दशा का इसको कितना भुक्त है और कितना भोग्य है तब हमने इस १८ अठारह इष्टांक को चन्द्रमाही की दशा वर्ष संख्या१० से गुणा किया तब एकसै अस्सी१८०का अंक सिद्ध हुआ इस सिद्धांकको भभोग६०का भाग दिया छती अठारह जानेसे केवल शेष०रहा लब्धांक तीन आए ये तीन वर्ष३ चन्द्रदशाके पूरे पूरे भुक्त हुए यानी इस समय जन्म लेनेवाले पुरुष के चन्द्र दशा वर्षों १० में से तीन वर्ष भुक्त और पूरे साथ वर्ष भोग्य रहे अब अगाड़ी शेष में शून्य रहा है इससे फिर कुछ क्रिया नहीं हुई यदि भोग देने पर कोई अंक रहता तब उसे गुणन करके भुक्त महीना दिन आदि निकालने पड़ते इसी के दिखाने को दूसरा उदाहरण दिखाते हैं जैसे किसी का कृत्तिका नक्षत्रकी सत्रह १७ घड़ी भुक्त इष्टको जन्म है तब इस मनुष्य को सूर्य की दशा का जन्म सिद्ध हुआ तब इस भुक्त १७ को सूर्य दशाकी वर्ष संख्या छः६ से गुणाकिया तब १०२ अंक सिद्ध हुआ इसमें भभोग ६० का भाग दिया तब ४२ शेष रहे लब्धि में १ आया इस अंक को

वर्ष समझे तदनन्तर शेषांक ४२ को बारह १२ से गुणा किया तब ५०४ सिद्ध हुआ इसमें फिर भभोग ६० का भाग दिया तब आठ लंग अड़तालीस घटने से लब्धांक ८ आये शेष चौबीस २४ रहे ये आठ मास समझे जांयेंगे तदनन्तर शेषांक २४ को फिर तीस से गुणा किया तब ७२० सिद्ध हुआ इसमें भभोग ६० का फिर भाग दिया तब लब्ध अंक बारह१२ आये यह बारह दिन गिने जांयगे आगे शून्य शेष रहा यदि कुछ अंक शेष रहता तो उसे साठ गुणाकर भभोगका भाग देकर घटयादि निकलती पन यहाँ अंक शेष नहीं रहा जो अगाड़ी क्रिया हो तब ये निष्कर्ष हुआ कि १ वर्ष ८ मास १२ दिन सूर्य दशा के भुक्त गए अगाड़ी इस जन्म में ४ वर्ष ३ महीना १ दिन भोग्य रहे इसीतरह सब ग्रहोंकी दशाओंका भुक्तभोग्य निकालना ५७

अथान्तर्दशाक्रम

दशा दशाहता कार्य्या विहृता परतायुषा।
अन्तर्दशाक्रमादेवं विदिशाप्यनुपाततः ॥५८॥

जिस ग्रहकी दशामें जिस ग्रहकी अन्तर्दशा निकालनी हो तब उसी ग्रहकी दशा के वर्षांकसे गुणा करके जो अंक सिद्ध हो उसमें १२०एकसौ बीशका भाग देवे लब्धांक को वर्ष समझे शेषांक को बारह १२ से गुणा करें तब जो अंक सिद्ध हो उसमें फिर १२० का भाग देवे इसके लब्धांकका

मास समझै तदनन्दर इसके शेषांक को तीससे गुणा करै तब अङ्क सिद्ध हो उसमें फिर परमायु का १२० से भागदे इसके लब्धांक को दिन संख्या समझै तदनन्तर शेषांक को साठ ६० से गुणा कर परमायु का भाग देकर लब्धांक को दिन समझै उसके शेषको साठ से ६० गुणा कर परमायु के भाग देने से घड़ी और उसके शेषांक को साठसे गुणाका परमायु १२० के भाग देने से पल फिर इसी क्रिया करने से विपल निकलते हैं उदाहरण-जैसे सूर्य की दशा ६ छः वर्ष की है इसमें जब सूर्यादिकों की अन्तर्दशा निकालनी हों तब ये क्रिया करै यदि हमें सूर्य की ही दशांक ६ से गुणा किया तब ३६ अङ्क सिद्ध हुआ इसमें परमायु १२० भाग दिया तब भाग भावे शून्य आया शेषांक ३६ को बारह से गुणा किया तब ४३२ हुए उसमें परमायुका १२० भाग दिया तब लब्धांक ३ तीन आये शेष ७२ रहै इसको ३० तीस से गुणा किया तब २१६० सिद्ध हुए इसमें परमायु के भाग देने से अठारह १८ लब्ध आये फिर अगाड़ी शेष शून्य रहा तब ये निष्कर्ष हुआ कि शून्य ० वर्ष तीन ३ मास और अठारह १८ दिन का सूर्यमें सूर्यका अन्तर आया इसी तरह जब सूर्यमें चन्द्रमा का अन्तर निकालना हुआ तब सूर्यदशा वर्ष ६ को चन्द्रदशा वर्षों १०से गुणा किया तब ६० अङ्क सिद्ध हुआ

तब उसमें परमायु का भाग दिया तो भाग नहीं लगा तब भागाभावे शून्य ० आया शेषांक को ६० बारह से १२ गुणा किया तब ७२० हुए इसमें परमायुका १२० भाग दिया तब छः ६ अङ्क लब्ध हुआ अगाडी शून्य रहा तब ये निष्कर्ष हुआ कि शून्य ० वर्ष छः ६ मास सूर्य में चन्द्रमा का अन्तर हुआ इसी प्रकार सर्वत्र करना इसी प्रक्रिया से प्रत्यंतर निकाल लेना चाहिए ॥५८॥

अथ दशाफलम् ।

तत्रादौ सूर्यदशाफलम् ।

उद्वेगिता हृदि तता परितो लतावद्दायाद्ववाद उत वित्तवियोगयोगः । चिन्ताभयं नरपतेरपि पाककाले रोगागमो भवति भानुदशाप्रवेशे५९

जब मनुष्य को सूर्य की दशा आती है तब लताके पत्ते की तरह मन में उद्वेग भाई बन्दों से विवाद धन से वियोग मन में चिंता राज्य से भय और रोगों का आगम होता है ॥ ५९ ॥

अथ चन्द्रदशाफलम् ।

सदा पाके राकेशितुरधिकृतिर्भूपतिकृता सतां सङ्गोरंगोत्सवसवकृतिप्रीतिरतुला । अलङ्कारा-

गारी रिपुकुलमलंगारजसुखं कलावत्या रत्या गमइभरथारामरमणम् ॥६०॥

जब चन्द्रमा की दशा होती है तब पुरुष को राज्य से अधिकार की प्राप्ति सत्पुरुषों से समागम रंगोत्सव करने में अतुल प्रीति घर में अलंकारों (भूषण) की प्राप्ति शत्रुकुल को बन्दी करना दिव्य कलावली नव यौवना स्त्रियों से रमण और हाथी घोड़ों की सवारी बागबगीचों का रमण प्राप्त होता है ॥६०॥

अथ भौमदशाफलम् ।

अनलगरलभीतिःशस्त्रघातो नराणामरिगणनृपचौरव्यालशङ्काकुलत्वम् । क्षितिसुतपरिपाके कामिनीपुत्रकष्टं भवति वमनमाधिर्व्याधिरर्थक्षतिश्च ॥६१॥

जब मङ्गलकी दशा होती है तब उस पुरुष को राज्य से अनल (अग्नि) से तथा विष से भय शस्त्र से चोट शत्रु राजा चोर और सर्प से शंका स्त्री तथा पुत्र के निमित्त से कष्ट वमन (उलटी) करने का रोग आधि-व्याधि और धन का कष्ट होता है ॥६१॥

अथ राहुदशाफलम् ।

राकेशारातिपाके नृपकुलवशतो द्रव्यवाशो न-

राणां बिभानस्यातीव रोगागमनमपि नृणां तातकष्टं शेषात्। कान्तापत्त्या कुलत्त्वं हितजन-खलताऽरातिरायाति सद्म व्यामोहागारमन्तः परित उत तता तुंगतातङ्कतावा ॥६२॥

जग राहुकी दशा होती है तब उस मनुष्य को राज-कुलके द्वारा धनका नाश अतीव रोगोंकी प्राप्ति पिता को कष्ट स्त्रीकी तथा पुत्रकी चिन्ता मित्रों से दुष्टता शत्रुकी घर पर चढ़ाई अनेक प्रकार अन्तःकरण में व्यामोह और अनेक प्रकार के क्लेश प्राप्त होते हैं ॥६२॥

अथ गुरुदशाफलम्।

गुर्वी गुर्वी समायात्यवनिपतिकुलान्नायकत्वं जनानां कान्तादन्तावलाग्रागम इह कमला-लंकृता वासशाला। मैत्री सद्भिर्महद्भिर्गुरुजन-गरिमा कालिमारातिकास्ये हृद्य विद्याऽनवद्या भवति च वचसामीशितुः पाककाले ॥६३॥

जब मनुष्यको बृहस्पति की दशा आती है तब मनुष्य को राजकुल द्वारा अतिमहत्व उत्तम स्त्री और दिव्य हाथियों की प्राप्ति लक्ष्मी से परिपूर्णवाश शाला की प्राप्ति सज्जनों से मित्रता गुरुजनों में गुरुभाव शत्रुजनों के

सुखमें कलोचीं उत्तम मनोहर विद्याकी प्राप्ति होती है ॥६३॥

अथ शनिदशाफलम् ।

मिथ्यावादेव तापोऽरिनरजनकृतातङ्कता रङ्कता वा कृत्या गुप्ता प्रतप्ता मतिरपि कुजनैरर्थनाशो जनानाम् । कान्तापत्यादिरोगो जनककनकगोवाजिदन्तावलानां विच्छेदो मित्रभेदो दिनपसुतदशायामनर्थो विशेषात् ॥६४॥

जब मनुष्यको शनि की दशा आती है तब मिथ्या कलंकसे ताप शत्रुजनों के निमित्त से खेद दरिद्रता किसी शत्रुकृत गुप्त कृत्या से ताप दुष्टजनों से धनका नाश स्त्री तथा पुत्रादिकोंके शरीरमें रोग पिता, धन, गऊ, घोड़ा तथा हाथियों में वियोग मित्रोंसे भेद और अनेक अनर्थ प्राप्त होते हैं ॥६४॥

अथ बुधदशाफलम् ।

दिव्याहारविहारयानजनतापत्यार्थमानाम्बर श्रेणीग्रामनवालयेन्दुवदनालाभं विशेषादिह । सद्भिः सङ्गमनङ्गममङ्गमतुलं प्रोत्तुंगमातंगजं सौख्यं सन्ततनुते दशासुत यशो बृद्धि च सिद्धिं विदः ॥६५॥

जब पुरुष को बुध की दशा होती है दिव्य भोजन विहार सवारी जन समूह पुत्र धन मान वस्त्र ग्राम नवीन भवन और उत्तम स्त्री का लाभ सज्जनोंसे समागम शरीरमें कामदेव का उदय हाथी की सवारी का सुख पुत्रकी यशकी वृद्धि और सब कामों की सिद्धि होती है ॥६५॥

अथ केतुदशाफलम् ।

मनस्तापं तापं निजजनविवादं खलकृतं सदा चन्द्रारातेरुदरभवरोगं वितनुते । दशा पुंसा-मरादनुगतिमपायं निजमतेः कृशत्वं वित्ताना-भवनिपतिकोपेन परितः ॥६६॥

जब इस मनुष्य को केतुकी दशा आती है तब मनको ताप अपने जनों से विवाद सदा शरीर में रोग अपनी बुद्धि का नाश दुर्बलपन और राज्य कोपसे धनका नाश होता है६६

अथ शुक्रदशाफलम् ।

तुल्यत्त्वं धरणीधवेन महता मित्राज्जयो जन्मनां मारोल्लासविकास एव कमला लावण्ययुक्तं गृहम् । दिव्याशमसुधाम सामबहुला व्याख्या-नगानध्वनिः प्रज्ञा सौख्यमतीव पाकसमये शाला विशाला कवेः ॥६७॥

जब मनुष्य को शुक्र की दशा आती है तब राजा की

समता मित्रके निमित्तसे जय कामदेवकी देहमें वृद्धि लक्ष्मी का प्रकाश घर में आनन्द दिव्य बाग घर और साम का आधिक्य अनेक व्याख्यान ज्ञान विद्या बुद्धिके हेतुसे पूर्ण सुख और अति विशाल शालाओंकी प्राप्ति होती है ॥६७॥

अथोच्चगतग्रहदशाफलम् ।

निजोच्चगामिनो यदा तदा तता यशोलता नवाम्बरादिभूषणैः सुखं वराङ्गनागमः । उपेन्द्र तुल्यतागजेन्द्रवाजिराजिकारथो बृषाश्च वैरिणः कृशा वशा दशा यदा भवेत् ॥६८॥

जब इस पुरुष को अपने उच्च राशिगत ग्रह की दशा वर्तमान होती है तब मनुष्य की यशोलता की वृद्धि नवीन वस्त्र आभूषणादिकों को सुख उत्तम नवयुवतियों के साथ समागम हाथी अश्वों की सवारी गोवृष आदिका आधिक्य वैरियों की कृशता और गुणों में विष्णुभगवान् की तुल्यता प्राप्त होती है ॥ ६८ ॥

अथ स्वराशिगतग्रहदशाफलम् ।

दशा निजागारगतस्य यस्य नवाम्बरागारविहारसौख्यम् । नवीनयोषा बहुभूमिभूषा यशोविशेषादरिवर्गहानि ॥ ६९ ॥

जब मनुष्य को स्वक्षेत्री ग्रह की दशा होती है तब

उस पुरुष को नवीन वस्त्र आभूषण और महल मन्दिरोंका सुख मिलता है नवीन स्त्री और बहुत भूमि भूषण और यशो विशेष से शत्रुसमूहों का नाश होता है ॥ ६९ ॥

अथ मित्रक्षेत्रमतग्रहदशाफलम् ।

कलत्रपुत्रैरपि मित्रपुत्रैरतीव सौख्यं हितराशिगस्य । दशाविपाके वसनं नृपालाद्विशेषतो मानविवर्द्धनं स्यात् ॥ ७० ॥

जब मित्रक्षेत्री ग्रहकी दशा वर्तमान होती है तब उस पुरुष को स्त्री पुत्र मित्र और मित्र पुत्रों के द्वारा सुख राज्य से शाल दुशाले शेला आदि वस्त्र और विशेषकर मान की वृद्धि होती है ॥ ७० ॥

अथ शत्रुस्थितग्रहदशाफलम् ।

मनोजवेगो रिपुवर्गभीतिः कृशत्वमर्थक्षतिरास्रबाधा । दशा यदारातिग्रहस्थितस्य तदा नरस्य प्रकृतिश्चला स्यात् ॥ ७१ ॥

जब पुरुष को शत्रु क्षेत्री ग्रह की दशा आती है तब कामदेव का वेग (आधिक्य) शत्रु वर्ग से भय शरीरमें कृशता धनका नाश आमदका नाश और प्रकृतिमें चंचलता होती है ॥ ७१ ॥

अथ रोगेशदशाफलम् ।

रोगाधीशदशाबला जनकलिं रोगागमं जन्मि-

नामाधिव्याधिमरिव्रणगणातङ्कं कलङ्के खलात्। मानध्वंसमतिक्षयं कलयति ज्ञानार्थ-नाशं तथा चित्तव्याकुलता च पापवशतो धातुक्षयं प्रायशः ॥ ७२ ॥

जब पुरुष को रोगेश ग्रह (लग्न से छठे घर का स्वामी) की दशा आती है तब अबलाजनोंके साथ रोगोंकी उत्पत्ति अनेकाधि व्याधि शत्रुगणों के द्वारा खेद कलंक और दुष्ट पुरुषों के द्वारसे मानका नाश और बुद्धिका नाश ज्ञान रूप धन का नाश पापके निमित्तसे चित्तमें व्याकुलता और अतिशयकर धातुक्षयका रोग आदि अनेक दुःख प्राप्त होतेहैं

अथाष्टमेशदशाफलम्।

निधनभावपतेरवनीपतेरतिभयं गदजालभयं दशा। कलयति स्वजनस्य विनाशनं निध-नता मपि वा भविनामिह ॥ ७३ ॥

जब मनुष्यकी अष्टमेश ग्रहकी दशा वर्तमान होती है तब राज्य के द्वार से भय रोगों से भय स्वजनों का विनाश होता है और यदि उस पुरुष की मृत्यु हो जावे तब भी कुछ आश्चर्य नहीं है ॥ ७३ ॥

अथ व्ययेशदशाफलम्।

वित्तक्षतिरवनीशादाधिर्व्ययेशपरिपाके।

कष्टं मृत्युसमानं भवति कुयानं कुसङ्गसंयोगः७४

जब व्ययेश ग्रह की दशा वर्तमान होती है तब राज्यसे धनका नाश अनेकादि व्याधि मृत्युके समान कष्ट कुत्सित गमन और दुष्टजनोंसे संयोग प्राप्त होते हैं ॥ ७४ ॥

अथ सप्तमेशदशाफलम् ।

जायापतिपरिपाके रोगज्वाला हृदि स्थिता भवति । रिपुजनजनिता बाधा वित्तविनाशो नरेश भीतिश्च ॥ ७५ ॥

जिस मनुष्य को नव सप्तमेश ग्रह की दशा होती है तब रोग जन्यज्वालाकी उत्पत्ति शत्रुजनजन्य बाधा धनका नाश और राज्य से भय मनुष्य को प्राप्त होते हैं ॥७५॥

अथास्तंगतग्रहदशाफलम् ।

दशाधीशे वास्तं गतवति विरोधो बलवता सदा रोगागारं हृदयकुहरे वाऽथ जठरे । अरेराधिव्याधिव्यसनसुत मानक्षतिरथो विरामो वित्तानामवनिपति कोपेन भविनाम् ॥ ७६ ॥

जब मनुष्य को अस्त हुए ग्रह की दशा होती है तब उस मनुष्य को बलवान् से विरोध शरीरमें छाती में व पेट में अनेक रोग शत्रु के निमित्त से मानसी व्यथा अनेक

प्रकार व्याधि दुर्व्यसन में प्रवृत्ति मान का नाश और राजा के कोप से धन का नाश होता है ॥७६॥

अथ चन्द्रबलाऽनुसारेण दशाफलम् ।

दशाप्रवेशे सबलःशशांको दशाफलं शस्तमतीव जन्तोः । अतोऽन्यथा चेद्विपरीतमार्य्यैरुदीरितं चन्द्रबलाऽनुमानात् ॥ ७७ ॥

चाहे किसी शुभाशुभ ग्रह की दशा हो उस दशा के प्रवेश समय में यदि चन्द्रमा बलवान् हो तब मनुष्य को उस दशा का अत्युत्तम फल और चन्द्रमा यदि निर्बल हो और उस समय दशा प्रवेश हो तब उक्त फल से विपरीत फल होता है ऐसा आर्य मनुष्यों ने कहा है ॥ ७७ ॥

अथ बलाऽनुसारेणदशाफलम् ।

बलवन्तो दशाधीशा दिशन्ति सकलं फलम् । निर्बला नैव कुर्वन्ति मध्यं मध्यबला तृणाम्७८

बली ग्रहों की जब दशा आती है तब सम्पूर्ण उत्तम फल देते हैं निर्बल ग्रहकी दशा में ग्रह फल नहीं देते हैं और मध्य बली ग्रह अपनी दशामें मध्यफल देतेहैं ॥७८॥

लग्नादिद्वादशभावेशदशाफलम् संक्षेपतः ।

लग्नेशस्य दशाफलं बहुधनं वित्तेशितुः पंचतां कष्टं वेति सहोदरालयपतेः पापं फलं प्रायशः ।

तूर्यस्वामिन आलयं किल सुताधीशस्य विद्या-
सुखं रोगागारपते नरातिजभयं जायापतेः शो
कताम् ॥७६॥ मृत्युं मृत्युपतेः करोति नियतं
धर्मेशितुः सुक्रियां चित्तं राज्यपतेर्नृपाश्रयमथो
लाभं हि लाभेशितुः। रोगं द्रव्यविनाशनं च
बहुधा कष्टं व्ययेशस्य वै पूर्वैरंगभृतामुदीरित-
मिदं तन्वादिभावेशजम् ॥ ५८ ॥

अर्थ—लग्नेश की दशा में बहु धन की प्राप्ति, द्वितीयेश की दशामें मृत्यु अथवा कष्ट, तृतीयेश की दशामें प्रायशः अनिष्ट फल, चतुर्थेशकी दशामें भवन की (घरकी) पंचमेश की दशा में विद्या का सुख, षष्ठेश की दशा में शत्रु से भय, सप्तमेशकी दशामें शोक, अष्टमेश की दशा में मृत्यु, नवम घर के स्वामी की दशा में शुभ धर्म कर्म, दशम घरके स्वामीकी दशामें राजाके द्वारा धन, लाभेशकी दशामें लाभ और व्ययेशकी दशामें पुरुषको रोगोत्पत्ति द्रव्य का नाश और अनेक कष्ट प्राप्त होते हैं, इस प्रकारसे पूर्वाचार्यों ने तन्वादि भावों के फल कहे हैं ॥७६॥८०॥

अथ भावेशबलादशाफलम्।

भावाधिपो बलयुतो निजगेहगामी तुङ्गत्रिको-
णशुभवर्गगतोऽपि पूर्णम्। जन्तोः फलं किल

करोति यदारिनीचस्थानस्थितोऽशुभफलं विबलो बिशेषात् ॥८१॥

अर्थ—जिस भाव का स्वामी जो ग्रह है वो यदि बली हो और अपने घर में बैठा होवे अथवा त्रिकोण में हो या शुभ ग्रह के षड्वर्ग में बैठा है अथवा अपने उच्चका हो तब पूर्ण फल को देता है यदि शत्रुक्षेत्री या नीच का बैठा हो तब वो ग्रह अशुभ फल देता है और यदि बिबल हो तब विशेषकर अशुभ फल देता है ॥८१॥

तत्रादौ गर्वितादिसंज्ञा ।

कोणे वा गृहे गतो निगदितःखेटस्तदा गर्वितो मित्रर्क्षे गुरुसंयुतोऽपि मुदितो मित्रेणयुक्तेक्षितः। पुत्रस्थानमगोऽशुभौमरविजार्कैःसंयुतो लज्जितः पापारिग्रहवीक्षितोहि रविणा संक्षोभितः कीर्तितः ॥८२॥ यो मन्दारियुतेक्षितोऽरिभगतः खेटः क्षुधापीडितो यः पापारियुतेक्षितो न च शुभैर्दृष्टस्तृषार्तोबुधैः। गर्वाढ्य मुदितोऽथ लज्जित इति प्रक्षोभितः कीर्तितो विद्भिःसक्षुधितस्तृषार्त इह षड्भावा ग्रहाणाममी ॥८३॥

जो ग्रह नवम पंचम घर में अथवा अपने उच्च में बैठा

हो वो ग्रह गर्वित होता है, जो अपने मित्र की राशि में बैठा हो अथवा बृहस्पति युक्त हो या मित्र के संग हो या मित्र जिसे देखता हो और पंचम घर में स्थित हो तब उसको हर्षित कहते हैं और जो राहु, मंगल, शनि और सूर्य से संयुक्त होता है वो ग्रह लज्जित होता है और जो पापीग्रह से या शत्रुसे या सूर्य से दृष्ट ग्रह होता है वो ग्रह संक्षोभित कहाता है ॥ ८२ ॥ और जो ग्रह शनि से युक्त या ईक्षित होता है या शत्रुके घरमें बैठा हो उसे क्षुधित ग्रह कहते हैं और पापग्रह से या शत्रुसे युक्त या दृष्ट हो शुभग्रह उसे देखता न हो और चतुर्थ घर में बैठा हो वो ग्रह तृषित कहाता है इस प्रकार ऋषिओं ने गर्विता हर्षित लज्जित संक्षोभित क्षुधित और हर्षित ये छः भेद कहे हैं ॥८३॥

अथ गर्वितादिफलम्ः ।

क्षुधितः क्षोभितो वापि यत्र तिष्ठति तं बलात् ।
विनाशयति पुष्णाति मुदितो गर्वितो ग्रहः ८४
कर्मभावगतो यस्य लज्जितस्तृषितोऽथवा ।
क्षोभितः क्षुधितो वापि स दरिद्रो नरो भवेत् ८५
लज्जितः पुत्रभावस्थः पुत्रनाशकरो मतः ।
क्षोभितस्तृषितो यस्य सप्तमे स्त्री न जीवति ८६

जिस किसी भाव में क्षोभित या क्षुधित ग्रह बैठा

होता है उसी भावको वो ग्रह बलात्कार से विनाश करताहै और मुदित या गर्विता होकर जिस भावमें ग्रह बैठा होताहै उस भावको वो ग्रह पोषण करताहै ॥८४॥ और जिस पुरुष के दशम भावमें लज्जित या तृषित क्षोभित अथवा क्षुधित ग्रह होता है वो पुरुष दरिद्री होता है ॥८५॥ और जिसके पंचम भावमें लज्जित ग्रह बैठा होता है तब वो ग्रह पुत्रको नाश करता है इसी प्रकार जिसके सप्तम घरमें क्षोभित या तृषित ग्रह बैठाहो उस पुरुष की स्त्री नहीं जीती है ॥८६॥

अथ गर्वितग्रहदशाफलम् ।

नवालयारामसुखं नृपत्वं कलापटुत्वं विदधाति पुंसाम् । मदार्थलाभं व्यवहारवृद्धिं दशा विशेषादिह गर्वितस्य ॥८७॥

जिस पुरुष को गर्वित ग्रह की दशा आती है तब उस पुरुष को नवीन मन्दिर और बगीचा का सुख प्राप्त होता है और राज्य तथा अनेक कलाओं में कौशल तथा अभिमान धनका लाभ तथा व्यवहार कामों में वृद्धि होतीहै

मुदित (हर्षित) ग्रहदशाफलम् ।

भवति मुदितपाके वाशशाला विशाला विमलवसन भूषा भूमियोषासु सौख्यम् । स्वजनजन

विलासो भूमिपागारवासो रिपुनिवहविनाशो बुद्धिविद्याविकाशः ॥८८॥

जब मनुष्य को मुदित ग्रहकी दशा आती है तब उस पुरुष को अति विशाला निवास करने को शाला विमल वस्त्राभूषण भूमि और स्त्रियों का सुख स्वजन जनों का विलास राजों के घर में निवास शत्रु समूह का विनाश और बुद्धि विद्या का प्रकाश प्राप्त होता है ॥८८॥

लज्जितग्रहदशाफलम् ।

दिशति लज्जितखेटदशा वशाद्रतिविरामममतीव मतिक्षयम् । सुतगदागमनं गमनं वृथाकलिकधाभिरुचिं न रुचिं शुभैः ॥८९॥

जिस पुरुष को लज्जित ग्रह की दशा होती है तब उस पुरुषको रतिका विराम (निवृत्ति) अत्यन्त बुद्धि की मन्दता पुत्रके अंगमें रोगोंका आगमन, वृथागमन, कलहकी चर्चामें रुचि और शुभकथासे रुचिकी निवृत्ति होती है॥८९॥

क्षोभितग्रहदशाफलम् ।

संक्षोभितस्यापि दशा विशेषाद्दरिद्रजातङ्कमतीव कष्टम् । करोति वित्तक्षयमंघ्रिबाधां धनाग्नि-बाधामवनीशकोपात् ॥९०॥

जब मनुष्य को क्षोभित ग्रह की दशा होती है तब दरिद्र से दुःख, अत्यन्त कष्ट, धन का नाश पाँवों में खेद और राज्यकोष से धन की प्राप्ति में बाधा होती है ॥९०॥

क्षुधितग्रहदशाफलम् ।

क्षुधितग्रहदशायां शोकमोहादितापः परिजनपरितापादाधिभीत्या कृशत्वम् । कलिरपि रिपुलोकैरर्थबाधा नाराणामखिलबलनिरोधो बुद्धिरोधो विशेषात् ॥ ९१ ।

जब मनुष्य को क्षुधित ग्रह की दशा होती है तब शोक मोहसे ताप, अपने जनों के हेतु से और मानसी पीड़ा से कृशता, शत्रुजनों के साथ कलह, धन में बाधा, बल का नाश और विशेषकर बुद्धिका नाश, प्राप्त होता है।

तृषितग्रहदशाफलम् ।

तृषितखगदशायामंगिनामगमध्येभवतिगदविकारो इष्टकार्य्याधिकारः। निजजनपरिवादाद्दर्थहानिः कृशत्व खलकृतपरितापो मानहानिः सदैव ॥ ९२ ॥

जब तृषितग्रह की दशा मनुष्यको होती है तब शरीर में रोगों की उत्पत्ति, इष्ट कार्यमें अधिकार, स्वजन जनोंके परिवादसेधनका नाश शरीर में दुर्बलता, दुष्टजनोंके हेतुसे

परिताप, और सब समग्रमानकी हानि होती है ॥ ९२ ॥

ग्रन्थसमाप्तौ पितामहादिवर्णनम् ।

आसीच्छ्रीकरुणाकरो बुधवरो वेदांगवेद्याकरस्तत्सूनुः क्षितिपालवन्दितपदः श्रीशम्भुनाथः कृती। विज्ञत्रातकृतादरो गणितविज्ज्योतिर्विदां प्रीतये चक्रे भावकुतूहलं लघुतरं श्रीजीवनाथः सुधीः ९३ इति श्रीमन्मैथिलशम्भुनाथगणकात्मजजीवनाथविरचिते भावकुतूहले गर्वितादिदशाफलाध्यायः सप्तदशः ॥ १७ ॥

पूर्व मिथला देश में रहने वाले करुणाकर नाम पंडित का पुत्र, बुधजनों में मुख्य, वेदवेदाङ्गोंकी अकार (खान) राजोंसे वंदनकिये चरणवाला, बड़ा कृती (विद्वान) श्रीशंभुनाथ पंडित हुआ उसके पुत्रने पंडितोंसे आदरपानेवाले ज्योतिषशास्त्रके जाननेवाले श्रीजीवनाथ पंडितने ज्योतिर्विदोंकी प्रसन्नताके लिए संक्षेप रीतिसे ये भावकुतूहल नाम जातक ग्रन्थ संक्षेप से निर्माण किया है ॥ ९३ ॥

इक् तर्काङ्क कुसम्मिते शरदिवे भाद्रासिते शोभने मासे ब्रह्मतिथौ चकार मतिमान्भाषानुवादंसुधीः ॥ श्रीमद्भावकुतूहलस्यसुतराम् श्रीकृष्णलालो यथा प्रीयात् श्रीवनमालिपंडितवरः विज्ञः कृती माथुरः ॥ ९४ ॥

मुद्रक— द्वारकाप्रसाद भरतिया, बम्बई भूषण प्रेस, मथुरा ।